जन्मपत्री-रचना

सत्यवीर शास्त्री

अनुपम बुक्स, दिल्ली

विषय प्रवेश

वेद विश्व साहित्य की अप्रतिम निधि हैं। मानव मात्र को संस्कृति एवं सभ्यता के शिखर पर ले जाने वाले वेद के छः अंग माने गए हैं—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष। इसीलिए ज्योतिष को वेदांगों में गिना जाता है। इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में "प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्" कहा जाता है। प्रमाण का आधार होता है प्रत्यक्ष और ज्योतिष प्रत्यक्ष ज्ञान है, क्योंकि आंखें प्रकाश में ही देख सकने में समर्थ होती हैं और ज्योति या प्रकाश को आधार मानकर चलने वाले ज्ञान को ही ज्योतिष कहा जाता है।

कुछ मनीषियों ने ज्योतिष को "ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्" कहा है अर्थात् सूर्यादि ग्रह एवं काल का ज्ञान कराने वाला शास्त्र ही ज्योतिष है। ज्योतिष का उपदेश भारतीय ऋषियों ने किया था और वे सब हमारी आस्था, विश्वास और कल्याण के प्रतीक रहे हैं। इसलिए उनके द्वारा निर्दिष्ट ज्ञान में कहीं कोई दोष या भ्रम हो, ऐसी कोई बात नहीं है। उनकी दृष्टि से ब्रह्माण्ड का कोई भी रहस्य छिपा रह गया हो, ऐसा नहीं लगता। हां, उनके द्वारा निर्दिष्ट रहस्य को हम कितना समझ पाते हैं, यह हम पर आधारित है।

समय के गर्भ में जो रहस्य छिपे हुए हैं, उनके जानने की जिज्ञासा प्रत्येक व्यक्ति को होती है। भारतीय ऋषियों की समयभेदी दृष्टि ने मानव की इस स्वाभाविक इच्छा को समझ कर ही ज्योतिष जैसे ज्ञान को सर्वसुलभ कराने के लिए शास्त्रीय स्वरूप दिया था, जो आज हमें परम्परागत रूप में प्राप्त है। ज्ञात या अज्ञात कुछ भी नहीं है, जो आज अज्ञात है वह कल ज्ञात हो जाएगा और जो ज्ञात है वह अज्ञात हो जायेगा। प्रकृति की गति चक्रवत् है, सृष्टि का न तो कोई प्रारम्भ बिन्दु है, न कोई समापन स्थल।

भारतीय ज्योतिष के तीन स्कन्ध माने गए हैं, सिद्धान्त, होरा एवं संहिता। कुछ जैन विद्वानों ने पांच स्कन्ध माने हैं—सिद्धान्त, होरा, संहिता, प्रश्न एवं शकुन। ज्योतिष की परिभाषा समय-समय पर बदलती रही है। प्राचीन काल में इसे ज्योतिः पदार्थों—नक्षत्र, तारों, ग्रहों के स्वरूप को बताने वाला विज्ञान कहा जाता था, क्योंकि तब सैद्धान्तिक गणित का पूर्ण परिचय इस शास्त्र में नहीं था। मात्र दृष्टि से ही ग्रहों आदि का ज्ञान किया जाता था।

ईसा पूर्व 500 में ज्योतिष में गणित एवं फलित, ये दो स्कन्ध स्वतन्त्र रूप में विकसित हुए। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश आदि गणित ज्योतिष के अन्तर्गत आ गए। प्राचीनकाल में इसकी परिभाषा केवल सिद्धान्त गणित तक ही सीमित थी। आदि काल (ईसा पूर्व 500) में अंक गणित से अहर्गण-मान निकालकर ग्रहों का आनयन करना ही इस शास्त्र का प्रमुख विषय था।

सृष्टि के आदिकाल से आज तक अहर्गण बनाकर जिस विधि से ग्रह स्पष्ट किए जाएं, उसे सिद्धान्त कहा जाता है। ग्रह निरन्तर गतिशील हैं। जिस समय कोई बालक जन्म लेता है, उस समय ग्रहों की क्या स्थिति है तथा किस ग्रह का, कितना प्रभाव उस बालक पर, उस समय पड़ रहा है, इन सबका विवेचन सिद्धान्त ज्योतिष की ही देन है।

महर्षि नारद एवं कश्यप ने ज्योतिष शास्त्र के 18 प्रवर्त्तक ऋषि माने हैं तो महर्षि पराशर ने 20 प्रवर्त्तक बतलाए हैं। पितामह, सूर्य, बृहस्पति, मनु, अत्रि, वसिष्ठ, पुलस्त्य, लोमश, पौलिश, अंगिरा, मरीचि, व्यास, नारद, शौनक, भृगु, च्यवन, यवन, कश्यप, गर्ग एवं पराशर। इन सबने जो सिद्धान्त निकाले उनमें से निम्नलिखित सिद्धान्त सर्वप्रसिद्ध हैं—

सूर्य सिद्धान्त, लोमश सिद्धान्त, व्यास सिद्धान्त, शौनक सिद्धान्त, ब्रह्म सिद्धान्त, वसिष्ठ सिद्धान्त, भृगु सिद्धान्त एवं पराशर सिद्धान्त।

उपरोक्त महर्षियों ने वर्षमान को निम्नरूपेण माना है।

आर्य सिद्धान्त—365दिन	15 घटी	31 पल	15 विपल		वर्षमान
वराहमिहिर—365 ,,	15 ,,	31 ,,	30		,,
ग्रह लाघव—365 ,,	15 ,,	31 ,,	30		,,
लोमश—365 ,,	14 ,,	48 ,,	0		,,
पौलिश – 365 ,,	15 ,,	30 ,,	0		,,
पितामह—365 ,, सिद्धान्त	21 ,,	25 ,,	0		,,
शिरोमणि—365 दिन	15 घटी	30 पल	22 विपल	30 प्रतिविपल	
सूर्य सिद्धान्त—365 ,,	15 ,,	31 ,,	31 ,,	24	,,
गुप्त ब्रह्म—365 ,,	15 ,,	30 ,,	22 ,,	30	,,
आधुनिक सिद्धान्तनुसार—365 ,,	15 ,,	22 ,,	56 ,,	87	,,

ज्योतिष को ज्ञानरूप शरीर के नेत्र की संज्ञा दी गई है, क्योंकि जिस प्रकार आंखों के न रहने से जीव का शरीर अपूर्ण है, उसी प्रकार ज्योतिष-ज्ञान के बिना अन्य विषयों का ज्ञान भी निरर्थक है। आचार्य गर्ग ने कहा है—ज्योतिश्चक्र सम्पूर्ण लोक के शुभाशुभ को बताने वाला है। अत: जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है अर्थात् इसका ज्ञाता है, वह धन्य है और वह परम कल्याण को प्राप्त होता है।

हमने भारतीय समय (Indian Standard Time) तो निश्चित कर लिया है, किन्तु किस पंचांग को हम शुद्ध मानें, यह तय होना अभी भी शेष है। अनेकानेक सिद्धान्तों के अनुसार वर्षमान में भी अन्तर है। इसी प्रकार भारतीय पंचांगों में तिथि, नक्षत्र आदि के घटी, पलों में भी अन्तर पाया जाता है। प्राचीन विधि से सूर्योदय या सूर्यास्त का समय प्राय: ठीक नहीं आता। पंचांगों के अन्तर को देखकर किसी भी व्यक्ति का असमंजस में पड़ जाना स्वाभाविक है। इसलिए प्राचीन सिद्धान्तों पर बनाए जा रहे पंचांगों का—दृश्य गणित से बनने वाले पंचांगों के साथ—तारतम्य नहीं बैठता।

हर व्यक्ति तो वेधशाला स्थापित कर नहीं सकता। जनसाधारण को पंचांगों पर ही निर्भर होना पड़ता है। दृश्य गणित और सैद्धान्तिक गणित में अन्तर होने के पश्चात भी भारतीय ज्योतिषी पंचांगों का सहारा लेकर ही जन्मपत्रिका बनाते हैं। प्रसंगवश सूर्योदय, सूर्यास्त तथा दिनमान निकालने की विधियों का उल्लेख भी इस पुस्तक में किया गया है, किन्तु दृश्य गणित के पंचांगों से वह मेल नहीं खाएगा। अत: पाठकों को दृश्य गणितीय पंचांगों से ही जन्मपत्रिका बनानी चाहिए।

दृश्य या अदृश्य गणित के दोनों ही भेद भारतीय हैं। प्राचीनकाल से ही फलित ज्योतिष का उद्भव स्थिर गणना से होने के कारण निरयण ग्रह बनाने की प्रणाली आज तक चली आ रही है, पर निरयण ग्रह बनाकर फलित कहने के पीछे क्या रहस्य है, यह अभी तक अज्ञात है।

जन्मपत्री किसी भी व्यक्ति के भूत, भविष्य एवं वर्तमान की सम्पूर्ण कहानी होती है। अत: शुद्ध जन्मपत्री बनाने के लिए शुद्ध इष्टकाल का होना आवश्यक है और शुद्ध इष्टकाल बनाने के लिए नीचे लिखे तथ्यों की जानकारी होना अनिवार्य है।

1. जातक के जन्म की सही-सही तिथि, मास एवं वर्ष
2. सही जन्म समय
3. जातक ने जहां जन्म लिया है, उस जगह का नाम तथा वहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय तथा उस स्थान के अक्षांश एवं रेखांश।

आगे भारत एवं विश्व के कुछ प्रमुख स्थानों के अक्षांश-देशान्तर दिए जा रहे हैं। जन्मपत्री बनाने वाले को चाहिए कि जहां जातक ने जन्म लिया है, उस स्थान के अक्षांश-देशान्तर ज्ञात कर ले। यदि अभीष्ट नगर-स्थान निम्न तालिका में—अल्प प्रसिद्ध होने के कारण—न मिले तो उस स्थान के निकटतम स्थान के अक्षांश-रेखांश ले लेने चाहिएं।

प्रत्येक स्थान के अक्षांश-रेखांश को लिखने में अत्यधिक सावधानी से काम लिया है, इतने पर भी जन्मपत्री बनाने वाले व्यक्ति को चाहिए कि किसी प्रामाणिक मानचित्र से अक्षांश-रेखांश का ज्ञान प्राप्त कर ले।

अक्षांश और रेखांश देशान्तर ज्ञान सारणी

क्रम	नगर	प्रान्त	अक्षांश	रेखांश
1	अंकलेश्वर	गुजरात	21/38	73/30
2	अकालकोट	महाराष्ट्र	17/31	76/15
3	अगरतला	त्रिपुरा	23/50	91/32
4	अटक	पाकिस्तान	33/43	72/17
5	अजयगढ़	मध्य प्रदेश	24/43	80/13
6	अजमेर	राजस्थान	26/22	74/40
7	अजन्ता	आन्ध्र प्रदेश	20/30	75/50
8	अछनेरा	उ० प्रदेश	27/12	72/45
9	अकोला	महाराष्ट्र	20/32	77/5
10	अनन्तपुर	तमिलनाडु	14/41	77/39
11	अमृतसर	पंजाब	31/37	74/48
12	अम्बिकापुर	उड़ीसा	23/10	83/15
13	अमरावती	महाराष्ट्र	20/56	77/48
14	अम्बाला	हरियाणा	30/21	76/52
15	अमरोहा	उ० प्रदेश	28/54	78/31
16	अयोध्या	उ० प्रदेश	26/48	82/14
17	अलवर	राजस्थान	27/34	76/38
18	अलीगढ़	उ० प्रदेश	27/54	78/6
19	अलीपुर	बंगाल	22/32	88/24
20	अलमोड़ा	उ० प्रदेश	29/37	79/40
21	अजयगढ़	म० प्रदेश	24/43	80/13
22	आमेर	राजस्थान	26/59	75/53
23	अरान्तक	तमिलनाडु	10/10	79/2
24	अलीबाग	महाराष्ट्र	18/35	73/0
25	अलीराजपुर	मध्य प्रदेश	22/20	74/30
26	अलोरा	आन्ध्र प्रदेश	16/43	81/9
27	अवध	उ० प्रदेश	26/45	82/0
28	अवर	राजस्थान	24/36	72/45
29	अवोर	असम	28/20	95/0
30	असय्य	आन्ध्रप्रदेश	20/15	75/48
31	अहमदनगर	महाराष्ट्र	19/5	74/45
32	अहमदाबाद	गुजरात	23/3	72/38
33	अहमदपुर	पंजाब	29/6	71/16
34	आगरा	उ० प्रदेश	27/7	78/5
35	आजमगढ़	उ० प्रदेश	26/0	83/20
36	आरकट	मद्रास	12/54	79/16
37	आरवी	तमिलनाडु	12/35	79/20
38	आरा	बिहार	25/30	84/44
39	आसनसोल	बंगाल	23/40	87/5
40	इटावा	उ० प्रदेश	26/47	79/2
41	इटारसी	म० प्रदेश	20/35	76/50
42	इन्दौर	म० प्रदेश	22/44	75/54
43	इम्फाल	असम	24/44	93/58
44	इरनाकुलम	केरल	9/59	76/19
45	इलाहाबाद	उ० प्रदेश	25/28	81/54
46	इन्द्रवती	तमिलनाडु	19/0	81/0
47	उज्जैन	म० प्रदेश	23/9	75/50
48	उदयपुर	राजस्थान	24/30	73/50
49	उन्नाव	उ० प्रदेश	26/32	80/82
50	उटकमण्ड	तमिलनाडु	11/24	76/44
51	उरई	उ० प्रदेश	25/59	79/30
52	एटा	उ० प्रदेश	27/35	78/40
53	एलोरा	आन्ध्र प्रदेश	16/48	81/8
54	उस्मानाबाद	आन्ध्र प्रदेश	18/3	76/6

55	औरंगाबाद	महाराष्ट्र	19/52	75/21
56	कच्छ	गुजरात	22/50	79/12
57	कटक	उड़ीसा	20/28	85/54
58	कटनी	म० प्रदेश	20/40	80/25
59	कटिहार	बिहार	25/30	87/40
60	कन्नौज	उ० प्रदेश	27/3	79/58
61	कन्नूर	तमिलनाडु	11/20	76/50
62	कपूरथला	पंजाब	31/23	75/25
63	करीमगंज	असम	24/32	90/55
64	करनाल	हरियाणा	29/42	77/2
65	कलकत्ता	बंगाल	22/34	88/24
66	कल्याण	महाराष्ट्र	19/24	73/10
67	कलिम्पोंग	बंगाल	27/0	80/30
68	कांकरोली	राजस्थान	25/0	74/0
69	कांगड़ा	हिमाचल	32/5	76/18
70	कांचीपुरम	तमिलनाडु	9/58	76/17
71	काठगोदाम	उ० प्रदेश	29/5	79/52
72	कानपुर	उ० प्रदेश	26/28	80/19
73	कामटी	महाराष्ट्र	21/14	79/15
74	काशी	उ० प्रदेश	25/18	83/0
75	कुर्नूल	आन्ध्र प्रदेश	15/50	78/50
76	करीमनगर	आन्ध्र प्रदेश	18/28	79/10
77	करूर	तमिलनाडु	10/58	78/7
78	करौली	राजस्थान	26/30	77/4
79	कलिंगपट्टम्	तमिलनाडु	18/20	84/10
80	कसौली	हिमाचल	18/20	84/10
81	कांजीवरम्	तमिलनाडु	12/50	79/45
82	किशनगढ़	राजस्थान	26/35	74/56
83	कुरुक्षेत्र	हरियाणा	30/0	75/50

84	कैथल	हरियाणा	29/48	76/26
85	कोचीन	केरल	9/58	76/17
86	कोटा	राजस्थान	25/18	71/16
87	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	16/42	74/16
88	कोहिमा	नागालैण्ड	25/20	94/0
89	काथर	बिहार	25/30	87/40
90	कादिरी	तमिलनाडु	14/7	78/18
91	कांधला	उ० प्रदेश	23/0	70/10
92	काम्बे	महाराष्ट्र	22/22	72/38
93	कामबेलपुर	पंजाब	33/47	72/23
94	कारकल	तमिलनाडु	10/34	79/40
95	कालका	हिमाचल	30/40	75/55
96	कालाबाघ	पंजाब	35/58	71/36
97	कावली	तमिलनाडु	14/55	80/3
98	कालीकट	केरल	11/15	74/45
99	कालमेयर	तमिलनाडु	10/18	79/52
100	किशनगंज	बंगाल	26/5	88/5
101	किशनगढ़	राजस्थान	28/0	70/35
102	कुन्दापुर	तमिलनाडु	13/45	74/45
103	कुड्प्पा	तमिलनाडु	14/30	78/45
104	कुड्डालोर	तमिलनाडु	14/29	79/45
105	कुमिता	महाराष्ट्र	14/26	74/27
106	कुमिल्ला	बंगला देश	23/27	91/20
107	कुरनूल	तमिलनाडु	15/50	78/5
108	कुर्ग	तमिलनाडु	12/20	75/41
109	कृष्णाराजधाम	कर्नाटक	12/20	76/22
110	केनेनौर	तमिलनाडु	11/52	75/25
111	काकीनाडा	आन्ध्र प्रदेश	16/57	82/15
112	कोटद्वार	उ० प्रदेश	29/43	78/33

113	कोडाईकनाल	तमिलनाडु	10/13	76/32
114	कोलार	कर्नाटक	13/8	78/10
115	कोलूर	तमिलनाडु	13/53	74/53
116	क्वामटोर	तमिलनाडु	11/0	77/0
117	खण्डवा	म० प्रदेश	21/13	76/4
118	खनियाधाना	म० प्रदेश	25/1	78/27
119	खुर्जा	उ० प्रदेश	28/8	78/0
120	खुलना	बंगला देश	22/50	79/45
121	खेरकी	महाराष्ट्र	11/33	73/45
122	खेरलू	गुजरात	23/45	72/40
123	खैरागढ़	म० प्रदेश	21/26	81/2
124	गंगोत्री	उ० प्रदेश	31/0	79/5
125	गया	बिहार	24/49	85/2
126	गाजीपुर	उ० प्रदेश	25/34	83/35
127	गाजियाबाद	उ० प्रदेश	28/40	77/29
128	ग्वालियर	म० प्रदेश	26/14	78/10
129	गढ़वाल	उ० प्रदेश	30/48	78/30
130	गारो	असम	25/30	90/30
131	गुंटकुल	आन्ध्र प्रदेश	15/11	77/25
132	गुड़गांवा	हरियाणा	28/37	77/40
133	गंजाम	उड़ीसा	19/22	85/6
134	गिरिडीह	बिहार	24/10	86/21
135	गुरदासपुर	पंजाब	32/3	75/27
136	गोंडा	उ० प्रदेश	27/28	82/1
137	गोंदिया	महाराष्ट्र	21/28	80/29
138	गोरखपुर	उ० प्रदेश	26/45	83/24
139	गोलाघाट	असम	26/30	94/0
140	गोलकुण्डा	आन्ध्र प्रदेश	17/23	78/27
141	गोहाटी	असम	26/11	91/47

142	गुना	म० प्रदेश	24/40	77/20
143	गुन्टूर	आन्ध्र प्रदेश	16/25	80/27
144	गोलका	बंगाल	23/50	79/46
145	गोलपाड़ा	असम	26/11	90/41
146	गंगानगर	राजस्थान	34/49	73/50
147	चकराता	उ० प्रदेश	30/43	77/54
148	चम्बा	हिमाचल	32/29	76/10
149	चन्दौसी	उ० प्रदेश	28/27	78/49
150	चित्रकूट	उ० प्रदेश	25/22	81/0
151	चिदम्बरम्	तमिलनाडु	11/24	79/44
152	चुरू	राजस्थान	28/19	75/1
153	चंडीगढ़	केन्द्रशासित	30/44	76/25
154	चतरापुर	तमिलनाडु	19/30	85/0
155	चन्द्रनगर	बंगाल	22/50	88/28
156	चाईबासा	बिहार	22/23	85/51
157	चान्दपुर	बंगाल	23/10	90/40
158	चान्द्रवाड़ी	बिहार	22/46	80/48
159	चान्दा	म० प्रदेश	19/57	79/28
160	चान्दोद	महाराष्ट्र	20/20	74/19
161	चिकमांगलूर	कर्नाटक	13/18	75/49
162	चिकाकोल	तमिलनाडु	18/17	83/57
163	चित्त रंजन	बंगाल	23/52	86/39
164	चित्तूर	केरल	10/43	76/47
165	चित्तौड़	राजस्थान	24/55	74/48
166	चित्र	कर्नाटक	14/14	76/26
167	चिलास	जम्मू-काश्मीर	35/25	74/10
168	चेरापूंजी	मेघालय	25/17	91/47
169	चौमूं	राजस्थान	26/58	75/47
170	चुनार	उ० प्रदेश	25/0	83/0

171	छछरौली	पंजाब	30/18	77/27
172	छपरा	बिहार	25/46	84/49
173	छतरपुर	म० प्रदेश	24/55	79/40
174	छिन्दवाड़ा	म० प्रदेश	22/00	79/0
175	छोटा नागपुर	बिहार	23/00	85/0
176	जगदलपुर	म० प्रदेश	19/5	82/4
177	जबलपुर	म० प्रदेश	23/10	79/59
178	जम्मू	जम्मू-काश्मीर	32/44	74/54
179	जमशेदपुर	बिहार	22/50	86/10
180	जयपुर	राजस्थान	26/55	75/52
181	जालन्धर	पंजाब	31/19	75/50
182	जैसलमेर	राजस्थान	26/55	70/57
183	जोधपुर	राजस्थान	26/18	73/4
184	जौनपुर	उ० प्रदेश	25/46	82/44
185	जगन्नाथगंज	बंगाल	24/39	89/50
186	जनकपुर	नैपाल	23/43	81/50
187	जमालपुर	बिहार	25/19	86/32
188	जलगांव	महाराष्ट्र	21/00	75/40
189	जयनगर	बिहार	26/40	86/20
190	जगराओं	पंजाब	30/40	75/40
191	जामपुर	जम्मू-काश्मीर	29/40	70/45
192	जामनगर	गुजरात	22/31	70/9
193	जलपाईगुड़ी	बंगला प्रदेश	26/30	88/50
194	जलियांवाला	पंजाब	32/44	71/39
195	जालौन	उ० प्रदेश	26/10	79/30
196	जूनागढ़	गुजरात	21/12	70/30
197	जैसोर	बंगाल	23/6	89/17
198	जोरा	म० प्रदेश	234/2	75/5
199	जालन	आन्ध्र प्रदेश	19/51	75/56

200	झालरापाटन	गुजरात	24/40	75/10
201	झालावाड़	राजस्थान	24/35	76/10
202	झांसी	उ० प्रदेश	25/25	78/36
203	झुनझुनूं	राजस्थान	28/6	75/25
204	टाटानगर	बिहार	22/50	86/10
205	टीकमगढ़	म० प्रदेश	24/45	78/53
206	टोंक	राजस्थान	26/11	75/50
207	ट्रावनकोर	केरल	9/0	77/0
208	डलहौजी	हिमाचल	12/32	76/0
209	डालटनगंज	बिहार	24/5	83/52
210	डिब्रूगढ़	असम	27/29	95/0
211	डीमापुर	असम	25/51	93/48
212	डीडवाना	राजस्थान	27/17	74/25
213	तिरुपति	आन्ध्र प्रदेश	13/40	79/27
214	तन्जौर	तमिलनाडु	10/45	79/17
215	तरनतारन	पंजाब	31/28	74/58
216	दतिया	म० प्रदेश	25/37	78/38
217	दरभंगा	बिहार	26/11	86/00
218	दानापुर	बिहार	25/40	85/5
219	दार्जिलिंग	बंगाल	27/30	88/18
220	दिनाजपुर	असम	25/30	88/50
221	दिल्ली		28/35	77/18
222	दुमका	बिहार	24/20	87/25
223	दमदम	बंगाल	22/35	88/35
224	दुर्ग	म० प्रदेश	21/15	81/17
225	दमन	गोआ	22/25	72/53
226	देवघर	बिहार	24/28	86/55
227	देहरादून	उ० प्रदेश	30/20	78/8
228	दोहद	म० प्रदेश	22/28	75/5

229	दौलताबाद	आन्ध्र प्रदेश	19/58	75/15
230	दमोह	म० प्रदेश	23/50	75/29
231	धार	म० प्रदेश	22/35	75/20
232	धौलपुर	राजस्थान	26/42	77/53
233	धनबाद	बिहार	23/47	86/30
234	धर्मपुरी	तमिलनाडु	12/10	78/5
235	धारणपुर	महाराष्ट्र	20/32	73/13
236	धारवाड़	कर्नाटक	15/29	75/5
237	धूलिया	महाराष्ट्र	20/53	74/50
238	धूबड़ी	असम	26/0	90/0
239	धेनकनाल	उड़ीसा	20/35	85/30
240	नागपुर	महाराष्ट्र	21/4	79/13
241	नरसिहपुर	म० प्रदेश	23/00	79/20
242	नारायणगंज	बंगाल	23/35	90/35
243	नासिक	महाराष्ट्र	20/0	73/50
244	नीमच	म० प्रदेश	24/28	74/00
245	नैरोल	तमिलनाडु	14/27	82/2
246	नैनीताल	उ० प्रदेश	29/20	79/32
247	नरसिंहगढ़	म० प्रदेश	23/44	77/8
248	नसीराबाद	राजस्थान	26/18	74/46
249	नाथद्वारा	राजस्थान	24/56	73/52
250	पटना	बिहार	25/37	85/13
251	पठानकोट	पंजाब	32/25	75/53
252	प्रयाग	उ० प्रदेश	25/30	81/56
253	पाण्डिचेरी	केन्द्रशासित	11/56	79/53
254	पानीपत	हरियाणा	29/23	77/1
255	पालनपुर	गुजरात	24/12	74/4
256	पाली	राजस्थान	25/46	73/25
257	पीलीभीत	उ० प्रदेश	28/38	79/51

258	पुरी	उड़ीसा	19/48	85/52
259	पुष्कर	राजस्थान	26/29	74/37
260	पूणे	महाराष्ट्र	18/30	73/58
261	पोरबन्दर	गुजरात	21/37	69/49
262	पटियाला	पंजाब	30/18	76/29
263	पलामू	बिहार	23/45	84/20
264	पाटन	गुजरात	25/54	72/14
265	पालघाट	तमिलनाडु	10/46	76/42
266	पारसनाथ	बिहार	24/0	86/11
267	पालामऊ	बिहार	23/45	84/20
268	पुरुलिया	बिहार	23/20	86/30
269	पुरी	उ० प्रदेश	30/9	78/49
270	पुडुकोट्टै	तमिलनाडु	10/23	78/52
271	पूर्णिया	बिहार	25/45	87/40
272	प्रतापगढ़	राजस्थान	24/2	74/40
273	पंचमढ़ी	म० प्रदेश	22/30	78/22
274	फतेहगढ़	राजस्थान	24/2	74/40
275	फतेहपुर	उ० प्रदेश	27/20	79/40
276	फतेहपुर-सीकरी	उ० प्रदेश	28/0	74/3
277	फरीदकोट	पंजाब	27/6	77/42
278	फरीदपुर	बंगाल	30/44	74/42
279	फर्रुखाबाद	उ० प्रदेश	23/30	89/48
280	फलटन	महाराष्ट्र	27/20	79/38
281	फिरोजपुर	पंजाब	30/52	74/38
282	फैजाबाद	उ० प्रदेश	26/47	82/12
283	फलोदी	राजस्थान	27/9	72/24
284	फिरोजाबाद	उ० प्रदेश	27/9	78/24
285	फूलपुर	उ० प्रदेश	25/32	82/7
286	बक्सर	बिहार	25/34	81/1

287	बड़ौदा	गुजरात	22/15	73/1
288	बदायूं	उ० प्रदेश	28/2	79/10
289	बनारस	उ० प्रदेश	25/20	83/00
290	बंगलौर	मैसूर	12/58	77/38
291	बम्बई	महाराष्ट्र	28/56	72/54
292	बर्दवान	बंगाल	23/16	87/54
293	बरेली	उ० प्रदेश	28/22	79/27
294	बलिया	उ० प्रदेश	25/44	84/11
295	बस्ती	उ० प्रदेश	26/48	82/46
296	बहराइच	उ० प्रदेश	27/34	81/38
297	बस्तर	म० प्रदेश	19/10	81/30
298	बांदा	उ० प्रदेश	25/28	80/22
299	बाराबंकी	उ० प्रदेश	26/56	81/13
300	बाड़मेर	राजस्थान	26/0	70/40
301	बालकुण्डा	आन्ध्र प्रदेश	19/5	78/20
302	विक्रमपुर	बंगाल	23/34	90/28
303	बिजनौर	उ० प्रदेश	29/23	73/10
304	बिलासपुर	म० प्रदेश	22/5	82/13
305	बीकानेर	राजस्थान	28/1	73/12
306	बीना	म० प्रदेश	24/6	78/15
307	बुरहानपुर	म० प्रदेश	21/25	73/16
308	बुलन्दशहर	उ० प्रदेश	28/24	77/54
309	बूंदी	राजस्थान	-5/27	75/41
310	बैतूल	म० प्रदेश	23/51	77/58
311	वृन्दावन	उ० प्रदेश	27/33	77/44
312	बखसार	राजस्थान	24/43	71/9
313	बुलसाड़	महाराष्ट्र	20/36	72/59
314	बेतिया	बिहार	26/45	84/38
315	बेहरमपुर	बंगाल	23/50	88/22

316	बैलोर	तमिलनाडु	15/16	76/55
317	बेलगांव	महाराष्ट्र	15/55	74/33
318	बैंगलौर	कर्नाटक	22/58	77/30
319	बोगरा	बंगाल	24/50	89/30
320	बेलोनिया	त्रिपुरा	23/15	91/25
321	बोनीगढ़	बिहार	21/45	85/0
322	बोबल्ली	तमिलनाडु	18/34	83/45
323	बिरहमनी	आन्ध्र प्रदेश	20/52	85/40
324	बलेरी	तमिलनाडु	15/45	74/30
325	बहराइच	उ० प्रदेश	27/32	81/42
326	बाकरगंज	बंगाल	22/29	90/18
327	बैरकपुर	बंगाल	22/48	88/30
328	बारन	म० प्रदेश	25/10	76/40
329	बारपेट	असम	26/20	91/4
330	बारामूला	जम्मू-काश्मीर	34/15	34/25
331	बारसी	महाराष्ट्र	18/13	75/44
332	बारोनी	म० प्रदेश	22/3	74/27
333	बालासोर	उड़ीसा	21/31	86/58
334	बालाघाट	म० प्रदेश	18/30	76/0
335	बालंगीर	उड़ीसा	20/40	83/25
336	बालोचा	राजस्थान	25/55	72/20
337	बासवा	तमिलनाडु	18/53	84/08
338	बासीम	महाराष्ट्र	20/10	76/10
339	बिमलीपट्टम्	तमिलनाडु	17/55	88/30
340	बीजापुर	महाराष्ट्र	16/53	75/50
341	बुकूम	महाराष्ट्र	27/40	68/56
342	भड़ौच	गुजरात	21/45	71/14
343	भटिण्डा	पंजाब	30/13	74/15
344	भण्डारा	म० प्रदेश	21/8	79/40

345	भदौरा	म० प्रदेश	24/48	70/26
346	भद्रक	उड़ीसा	21/10	85/33
347	भरतपुर	राजस्थान	27/11	77/35
348	भवंरगढ़	राजस्थान	19/30	80/30
349	भागलपुर	बिहार	25/12	87/5
350	भावनगर	गुजरात	21/47	72/14
351	भीमा	आन्ध्र प्रदेश	18/40	75/15
352	भुज	गुजरात	23/18	69/43
353	भवनेश्वर	उड़ीसा	20/10	85/50
354	भुसावल	महाराष्ट्र	21/0	25/15
355	भेलसा (विदिशा)	म० प्रदेश	23/32	77/50
356	भोपाल	म० प्रदेश	23/15	77/28
357	भीलवाड़ा	राजस्थान	25/21	74/40
358	मथुरा	उ० प्रदेश	27/28	17/41
359	मद्रास	तमिलनाडु	13/4	80/17
360	मदुरै	तमिलनाडु	9/58	78/10
361	मसूरी	उ० प्रदेश	30/27	75/6
362	महाबलेश्वर	महाराष्ट्र	17/58	73/43
363	मारवाड़ जं०	राजस्थान	25/43	73/45
364	मिर्जापुर	उ० प्रदेश	25/10	82/37
365	मुगलसराय	उ० प्रदेश	25/17	83/1
366	माण्डला	म० प्रदेश	22/45	80/26
367	मुजफ्फरनगर	उ० प्रदेश	29/88	77/44
368	मुरादाबाद	उ० प्रदेश	28/51	78/49
369	मेरठ	उ० प्रदेश	29/1	77/45
370	मंगलौर	केरल	12/52	74/53
371	मदारीपुर	बंगाल	23/7	90/15
372	मधुपुर	बिहार	24/18	86/37
373	मधुबनी	बिहार	26/25	86/15

374	मणिपुर	मणिपुर	24/45	94/0
375	मालाबार	महाराष्ट्र	12/0	75/25
376	महोबा	उ० प्रदेश	25/18	79/55
377	महबूबनगर	कर्नाटक	16/40	78/0
378	माणिकपुर	उ० प्रदेश	25/0	81/10
379	मालवा	म० प्रदेश	23/40	75/30
380	मलखान	कर्नाटक	16/00	73/50
381	मोकामा	पंजाब	25/20	86/0
382	मुगलपुरा	पंजाब	31/31	74/24
383	मुंगेर	बिहार	25/18	86/35
384	मुजफ्फरपुर	बिहार	26/3	85/30
385	मुर्शिदाबाद	बंगाल	27/17	88/15
386	मुरार	म० प्रदेश	26/13	78/11
387	मुसलीपट्टम्	आन्ध्र	16/12	81/12
388	मेदिनीपुर	बंगाल	22/25	87/21
389	मैनपुरी	उ० प्रदेश	27/14	79/3
390	मोतिहारी	बिहार	26/45	85/0
391	मैसूर	कर्नाटक	12/15	76/40
392	मालिकपुर	महाराष्ट्र	20/53	76/17
393	राजकोट	गुजरात	82/17	70/50
394	राजनांदगांव	म० प्रदेश	21/5	81/0
395	रतलाम	म० प्रदेश	23/12	75/0
396	रानीगंज	बंगाल	23/30	87/15
397	रामगढ़	राजस्थान	27/25	70/20
398	रामगढ़	बिहार	22/45	81/3
399	रामटेक	महाराष्ट्र	21/10	79/15
400	रामपुर	उ० प्रदेश	28/46	79/18
401	रायगढ़	म० प्रदेश	21/50	83/30
402	रायपुर	म० प्रदेश	21/15	81/45

403	रायबरेली	उ० प्रदेश	26/14	81/16
404	रांची	बिहार	23/17	85/24
405	रुड़की	उ० प्रदेश	29/50	78/0
406	रानीखेत	उ० प्रदेश	29/40	79/33
407	रतनगढ़	राजस्थान	28/5	74/39
408	रोहतक	हरियाणा	29/0	76/8
409	रीवां	म० प्रदेश	24/31	81/19
410	लखनऊ	उ० प्रदेश	26/47	80/59
411	लुधियाना	पंजाब	30/55	75/51
412	ललितपुर	उ० प्रदेश	24/33	78/30
413	लश्कर	म० प्रदेश	26/10	78/13
414	लारकन	महाराष्ट्र	27/45	68/8
115	लोदराना	पंजाब	29/30	71/30
416	विशाखापट्टम्	तमिलनाडु	17/40	83/23
417	विजयनगरम्	तमिलनाडु	15/15	76/57
418	ब्यावर	राजस्थान	26/6	74/21
419	शाहजहांपुर	उ० प्रदेश	27/54	79/27
420	शिमला	हिमाचल	31/1	77/15
321	शिवपुरी	म० प्रदेश	25/40	77/44
422	शोलापुर	महाराष्ट्र	17/40	75/55
423	श्रीनगर	जम्मू-काश्मीर	34/12	74/50
424	सतारा	महाराष्ट्र	17/40	74/3
424	सासाराम	बिहार	24/25	84/2
426	सहारनपुर	उ० प्रदेश	29/58	77/40
427	सागर	म० प्रदेश	16/30	76/50
428	सांगली	महाराष्ट्र	16/52	74/36
429	सिरोही	राजस्थान	24/50	72/57
430	सिलहट	असम	24/53	91/54
431	सिलगुड़ी	असम	26/42	88/25

432	सिवान	बिहार	26/2	84/7
433	सिवनी	म० प्रदेश	22/6	79/35
434	सीतापुर	उ० प्रदेश	27/30	80/45
435	सीतागढ़ी	बिहार	26/35	85/32
436	सुन्दरबन	बंगाल	22/0	89/30
437	सुल्तानपुर	उ० प्रदेश	26/15	82/10
438	सूरत	गुजरात	21/12	72/55
439	सोमनाथ	गुजरात	20/55	70/35
440	सीतामऊ	म० प्रदेश	24/1	75/23
441	सोनपुर	बिहार	25/42	85/13
442	हजारीबाग	बिहार	24/0	85/25
443	हरिद्वार	उ० प्रदेश	29/58	78/13
444	हाजीपुर	बिहार	25/41	85/14
445	हाथरस	उ० प्रदेश	27/36	78/6
446	हापुड़	उ० प्रदेश	28/43	77/50
447	हैदराबाद	आन्ध्र प्रदेश	17/20	78/30
448	होशियारपुर	पंजाब	31/32	75/57
449	होशंगाबाद	म० प्रदेश	23/46	76/0
450	हांसी	हरियाणा	29/5	75/55
451	हरदोई	उ० प्रदेश	27/25	80/15
452	हिम्मतनगर	गुजरात	23/37	72/57
453	हुबली	महाराष्ट्र	15/20	72/12
454	त्रिचनापल्ली	तमिलनाडु	10/50	78/45
455	त्रिपुरा	त्रिपुरा	23/0	92/0

विश्व के कुछ प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश-रेखांश

क्रम	नाम नगर	नाम देश	अक्षांश	रेखांश
1	अमरपुर	बर्मा	21/55	96/4
2	अराकान	वर्मा	20/28	93/27

3	अमलेखगंज	नेपाल	27/15	85/0
4	अलान	बर्मा	22/11	95/9
5	अल्लानम्यो	बर्मा	19/21	95/1
6	आन	बर्मा	19/49	94/58
7	अकयाब	बर्मा	20/9	92/27
8	अनिरुद्धपुर	लंका	8/32	80/23
9	अटक	पाकिस्तान	33/63	72/17
10	एडम्सब्रिज	लंका	9/5	79/35
11	इन्सीन	बर्मा	16/52	96/11
12	इरबिड्डी	बर्मा	16/18	95/0
13	एमहर्स्ट	बर्मा	16/4	97/35
14	उमरकोट	पाकिस्तान	25/22	95/0
15	कण्डी	लंका	7/15	80/35
16	कनलन	तिब्बत	25/49	89/39
17	कनलन	बर्मा	23/4	98/7
18	कलूतरा	लंका	6/30	79/59
19	कलेवा	बर्मा	23/12	94/20
20	काक्सन्तराई	लंका	9/15	80/5
21	क्याकसी	बर्मा	21/36	96/10
22	कारेटिव	लंका	8/22	79/52
23	कुरूंगल	लंका	7/31	80/16
24	कुलहाकांगिरि	तिब्बत	28/15	91/0
25	कुशमा	नेपाल	28/16	83/40
26	कोलम्बो	लंका	6/56	79/57
27	गजनी	अफगानिस्तान	33/44	68/18
28	गर्टाक	तिब्बत	31/45	80/21
29	गण्डवा	बलूचिस्तान	28/52	67/30
30	गंगटोक	सिक्किम	27/10	88/30
31	ग्वानगिस	तिब्बत	29/0	89/40
32	ग्वा	बर्मा	17/30	94/55
33	ग्रीनविच	लन्दन	51/30	0/0
34	गुरखा	नेपाल	27/55	84/30
35	चायन	लन्दन	51/23	0/32
36	चुंगकिंग	चीन	29/32	106/50
37	चुम्बी	भूटान	27/30	89/0
38	जनकपुर	नेपाल	26/50	86/0
39	खैरपुर	पाकिस्तान	27/23	68/45
40	गुजरांवाला	पाकिस्तान	32/12	74/12
41	चटगांव	बंगलादेश	22/25	91/58
42	जैकोबाबाद	पाकिस्तान	28/17	68/29
43	जाफना	लंका	9/17	79/57
44	टेंगरीनार	तिब्बत	30/30	86/0
45	डिंगरी	तिब्बत	28/30	86/30
46	डेरा इस्माइलखां	पाकिस्तान	31/52	70/52
47	डेरा गाजीखां	पाकिस्तान	30/5	70/46
48	ढाका	बंगलादेश	26/46	90/30
49	ड्रीघ	पाकिस्तान	24/52	67/7
50	तलाईमन्नार	लंका	9/10	79/40
51	ताशीगंग	भूटान	27/9	91/30
52	त्रिन्कोमाली	लंका	8/31	81/15
53	दिमचौक	तिब्बत	32/35	79/31
54	धानकुटा	नेपाल	26/55	87/20
55	नानकिंग	चीन	32/7	118/47
56	न्यू मैक्सिको	उ०अमेरिका	35/0	106/१०
57	न्यूयार्क	अमेरिका	40/43	74/1१०
58	नैरोबी	अफ्रीका	1/8	36/52
59	पगन	बर्मा	21/1	94/9
60	पाटन	नेपाल	27/38	85/13

61	पेरू	भूटान	27/24	89/14
62	पेकिंग	चीन	39/55	116/24
63	पेरिस	फ्रांस	48/50	2/20
64	पोखरा	नेपाल	28/17	83/58
65	बर्लिन	जर्मनी	52/32	13/25
66	बलख	अफगानिस्तान	36/50	67/47
67	वादाखां	अफगानिस्तान	37/1	70/6
68	वावलेक	वर्मा	19/10	97/15
69	बुखारा	अफगानिस्तान	39/40	64/37
70	वेलग्रेड	रूस	44/38	20/37
71	मास्को	रूस	55/45	37/37
72	मुक्तिनाथ	नेपाल	28/54	83/49
73	मैक्सिको	अमेरिका	19/5	100/1प०
74	म्योम्पो	वर्मा	22/5	96/30
75	लन्दन	ब्रिटेन	51/30	0/5 प०
76	लेनिनग्रेड	रूस	59/57	30/20
77	वाशिंगटन	अमेरिका	38/55	77/4 प०
78	समरकन्द	अफगानिस्तान	39/30	66/50
79	सलेना	नेपाल	28/25	82/15
80	सिक्किम	भूटान	27/30	88/30
81	सिंगापुर	मलाया	26/0	103/15
82	सपाड	वर्मा	22/40	97/28
83	स्यालकोट	पाकिस्तान	32/31	74/30
84	हांगकांग	चीन	22/16	114/9
85	लाहौर	पाकिस्तान	31/31	74/22
86	ह्वेगेयिन	वर्मा	17/55	96/58
87	हाला	पाकिस्तान	25/48	68/28
88	हिंगलाज	बलूचिस्तान	25/30	65/30
89	हिरात	अफगानिस्तान	34/22	62/8
90	हिरोशिमा	जापान	34/38	132/35
91	हन्जादा	बर्मा	17/36	94/27

जन्मपत्री बनाने वाले व्यक्ति को पंचांग का ज्ञान होना भी आवश्यक रहता है। पंचांग को ही पत्रा या जन्त्री आदि नामों से पुकारा जाता है। दरअसल पंचांग प्राचीन भारतीय शैली का एक कैलेण्डर है, जिसमें वर्ष की सभी सूचनाएं दी होती हैं। वैसे पंचांग का अर्थ हुआ पांच अंग वाला। पंचांग में भी मूलतः पांच ही अंग होते हैं—तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण।

पंचांग देखने पर आपको पता चलेगा कि उसमें सर्वप्रथम पंक्ति में ही तिथि, नक्षत्र, योग, करण और अन्त में वार आदि मान सहित दिए रहते हैं। उदाहरण के लिए संवत् 2035 शाके 1900 के ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष अष्टमी को यदि किसी जातक का जन्म हुआ हो तो पंचांग में देखने पर वह इस प्रकार मिलेगा। अष्टमी, 27 घ० 55 पल, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र 49 घ० 10 पल, सिद्ध योग 13 घ०44 पल एवं बव करण 16 घ० 36 पल तक बुधवार। इस दिन दिनमान 34 घ० 32 पल था तथा सूर्योदय पांच बजकर छब्बीस (5/26) मि० पर एवं सूर्यास्त सात बजकर पन्द्रह मि० (7/15) पर था। उस दिन सूर्य (प्रातः) वृष के 19 अंश 2 कला और 23 विकला पर था एवं उसकी दैनिक गति 57/19 थी।

पंचांग में यह सारा विवरण मिल जाता है। दैनिक ग्रह स्पष्ट भी दिए रहते हैं। जिन पंचांगों में दैनिक ग्रह स्पष्ट नहीं दिये होते, उनमें सप्ताह के स्पष्ट ग्रह दिए रहते हैं। आगे जन्मपत्री बनाने के लिए हम एक जातक का जन्म समय लेते हैं। इस जातक का जन्म विक्रम संवत् 2035 शाके 1900 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को दिल्ली में 1 बजकर 34 मि० रात्रि को हुआ। आइए, इसकी जन्मपत्री बनाएं। हमने पंचांग लिया, किन्तु पंचांग तो स्थानीय होते हैं अर्थात् किसी स्थान विशेष को केन्द्र मानकर बनाए जाते हैं। इसलिए हमें सबसे पहले अयनांश स्पष्ट करने पड़ेंगे।

अयनांश साधन विधि

लग्न साधन करने के लिए अयनांश की विशेष आवश्यकता होती है।

वस्तुतः कल्पादि में सूर्य सम्पात की स्थिति में आया हुआ अन्तर ही अयनांश कहा जाता है, आरम्भ से हम यह मानते रहे कि सूर्य अपने अयने वृत्त में स्थिर है, चलता नहीं है, किन्तु कालान्तर में दृग्गणित के आधार पर हमें अपने पूर्व सिद्धान्त को बदलना पड़ा तथा इसमें संशोधन करना पड़ा, क्योंकि सूर्य भी अपनी कक्षा में चलता है, स्थिर नहीं है। यह दृग्गणित से सिद्ध हो चुका है। भले ही यह चालन अति सूक्ष्म ही है। सूर्य की वार्षिक अयनांश गति प्रायः 50'.20" है।

अयनांश निकालने की कई विधियां हैं। ईसवी सन् से, ग्रह लाघव से, केतकर मत से, सिद्धान्त सम्राट से एवं मकरन्द आदि विधियों से अयनांश निकाला जाता है, किन्तु सभी आचार्यों के वर्षमान में अन्तर होने से अयनांश में भी अन्तर आना स्वाभाविक है।

यहां हम केतकर के मत से अयनांश साधन कर रहे हैं।

इस मत के अनुसार इष्ट शाके संवत् में से 1800 घटाने पर शेष आई संख्या को दो स्थानों पर रखा जाता है। प्रथम स्थान की संख्या को 70 से भाग दिया जाता है और लब्धि अंश, कला, विकला तुल्य आती है। दूसरे स्थान की संख्या को 50 से भाग देते हैं और लब्धि तुल्य कला, विकला आदि प्राप्त होती हैं। प्रथम स्थान की लब्धि में से दूसरे स्थान की लब्धि को घटा दिया जाता है। शेष संख्या में 1800 वर्ष का अयनांश 22°.8 कला 33 विकला (22°.8'.33") जोड़ देने से इष्ट शाके का अयनांश निकल आता है।

अब इष्ट दिन का अयनांश निकाल कर इसमें जोड़ देने से इष्टकालिक अयनांश बन जाता है। सूर्य की वार्षिक अयनांश गति 50 वि० 20 प्रतिविकला ऊपर दी है। वर्ष में बारह महीने होते हैं। इसलिए वार्षिक गति को 12 से भाग दिया तो एक माह में 30 दिन होते हैं। माह की अयनांश गति को 30 से भाग देने से एक दिन की गति निकल आएगी। एक दिन की अयनांश गति 8 प्रतिविकला के लगभग होती है।

आइए, ऊपर वर्णित उदाहरण का अयनांश स्पष्ट करें।

	1900	बच्चे का जन्म संवत्
शाके ऋण किया	—1800	
	100	शेष (गत वर्ष)

शेष गत वर्ष की संख्या को दो स्थानों पर रखा—

(1) 100 (2) 100

प्रथम स्थान की संख्या को 70 से भाग दिया—

```
     1.
70) 100 (
     70
     30
    ×60
70) 1800 (25
    140
     400
     350
      50
     ×60
70) 3000 (42
    280
     200
     140
      60 शेष
```

लब्धि प्राप्त— 1"—25'—43"

(42 की जगह 43 इसलिए लिखे कि शेष संख्या भाग देने वाली संख्या के आधे से अधिक है)

पुनः दूसरे स्थान की संख्या को 50 से भाग दिया—

```
     2'
50) 100
    100
     ×
```

0°. 2'. 0" लब्धि प्राप्त

प्रथम स्थान की लब्धि में से द्वितीय स्थान की लब्धि को घटाया—

```
 1°.  25'.  43"
 0.    2'.   0"
 1°.  23'.  43"
```

इसमें धन किया	+ 22°. 8'. 33"	शाके 1800 का अयनांश
	23°. 32'. 16"	शाके 1900 का अयनांश

शाके संवत् 1900 का अयनांश हम ज्ञात कर ही चुके हैं। अब ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी का अयनांश निकाल कर इसमें और जोड़ना है। पंचांग में प्रात: सूर्य स्पष्ट (15 जून 1978 को) वृष राशि के 29 अंश 59 कला और 42 विकला था (29°. 59'. 42") सूर्य महीने में 30 अंश चलता है और अंश हो गए लगभग 60 (मेष के 30 + वृष के 29. 59. 42) अर्थात् 60 दिन बीत गए। एक दिन की अयनांश गति है 8 प्रतिविकला तो 60 दिन की होगी।

60
× 8
480 प्रति विकला

8"
60) 480
480 8 विकला
×

1900 का अयनांश	23°. 32'. 16"
इसमें जोड़ा	+ 0. 0. 8"
इष्टकालिक अयनांश योग	23°. 32'. 24"

इस प्रकार शाके 1900 (2035 विक्रम) संवत् ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी का अयनांश सिद्ध हुआ 23 अंश 32 कला और 24 विकला

सायनार्क साधन दिनमान साधन

अभीष्ट काल के प्रात: सूर्य स्पष्ट में अभीष्ट काल का अयनांश जोड़ देने से प्रात: सायनार्क आता है। प्रात: सायनार्क में 6 राशि जोड़ देने से सायं सायनार्क हो जाता है।

इसे ऊपर वाले उदाहरण पर स्पष्ट करें

1. 29. 2. 23	प्रात: 5.30 पर सूर्य स्पष्ट
+ 23. 32. 24	इष्ट कालिक अयनांश
2. 22. 34. 47	प्रात: सायनार्क

इस प्रकार प्रात: सायनार्क मिथुन राशि के 23 अंश 34 कला और 47 विकला हुआ। प्रात: सायनार्क में 6 राशि जोड़ देने पर सायं सायनार्क प्राप्त होगा।

2. 22. 34. 47	प्रात: सायनार्क
+ 6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
8. 22. 34. 47	

इस प्रकार सायं सायनार्क धनु राशि के 22 अंश 34 कला और 47 विकला हुआ।

दिनमान स्पष्ट करने के लिए प्रात: सायनार्क के एवं सायं सायनार्क के राशि अंशों को प्रयोग में लाया जाता है। आगे अक्षांश 29° उत्तर, 30° उत्तर एवं 31° उत्तर की लग्न सारणी दी जा रही है। इनमें से हम 29° उत्तर अक्षांश की सारणी को उपयोग में लायेंगे, क्योंकि दिल्ली के अक्षांश 28/38 हैं।

हमने प्रात: सायनार्क की राशि लिखी है मिथुन तथा वहां अंक लिखा है 2 का, इसी प्रकार सायं सायनार्क की धनु राशि के लिए 8 अंक लिखा है। इसका कारण यह है कि ज्योतिष में राशि संकेत के लिए मेष को 0 वृष को 1 मिथुन को 2 एवं मीन को 11 लिखा जाता है।

दिनमान साधन के लिए प्रात: सायनार्क के राशि अंशों पर लग्न सारणी से प्राप्त संख्या को सायं सायनार्क के राशि अंशों पर लग्न सारणी से प्राप्त संख्या में से घटा देने पर घट्यादि दिनमान स्पष्ट हो जाता है। इसे ऊपर के उदाहरण पर घटित करें—

	घटी पल	
सायं सायनार्क के राशि अंशों पर लग्न सारणी से प्राप्त	50 . 1	
प्रात: ,, ,, ,, ,, ,,	—15 . 40	शेष
	34 . 21	

अत: 34 घटी 21 पल दिनमान स्पष्ट हुआ।

स्थानीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त स्पष्ट करने की प्राचीन विधि एवं नवीन विधि में थोड़ा अन्तर आता है, पर यहां हमने प्राचीन विधि से ही साधन

किया है। अतः इसी विधि से सूर्योदय एवं सूर्यास्त भी निकालते हैं।

दिनमान को 5 से भाग देने से लब्धि तुल्य सूर्यास्त होता है। सूर्यास्त को 12 में से घटा दें तो सूर्योदय का समय निकल आता है।

```
   34·21  दिनमान
   ─────
     5

      6
   ──────
5) 34 21
   30
   ──
    4
  ×60
  ───
  240
   21
   ──────
5) 261    (52
   25
   ──
    11
    10
    ──
     1
    60
   ──────
5)  60    (12
    60
```

घं० मि० सैं०
6. 52. 12 सूर्यास्त समय

सूर्यास्त को 12 में से ऋण करने पर सूर्योदय का समय स्पष्ट होगा।

```
   12. 0
 —6·52·12  सूर्यास्त समय ऋण किया
 ────────
   5· 7·48
```

सूर्योदय का समय स्पष्ट हुआ 5 बजकर 7 मि० और 48 सैं०।

नवीन विधि से दृग्गणित से सूक्ष्म गणित करने पर यह समय आयेगा प्रातः 5 बजकर 25 मि० 42 सैं०। आगे हम 5 बजकर 26 मि० सूर्योदय का समय प्रयोग में लेंगे।

इष्टकाल बनाने की विधि

इष्टकाल बनाने के लिए I. S. T. इण्डियन स्टैण्डर्ड टाइम को (Local Time) लोकल टाइम (स्थानीय समय) में परिवर्तित करना पड़ता है। स्टैण्डर्ड टाइम का रेखांश 82·30 पूर्व में है (यह स्थान भारत के सोनहार-नामक स्थान पर है) पूरे भारत की घड़ियां इसी को केन्द्र मान कर मिलाई जाती हैं, किन्तु हर स्थान का सूर्योदय समय या लोकल टाइम जुदा-जुदा होता है। इष्टकाल बनाने के लिए इसी समय का उपयोग किया जाता है, किन्तु घड़ियों में समय एक जैसा ही रहता है, जैसे बम्बई में किसी घड़ी में सायं के चार बजे हैं तो दिल्ली में भी घड़ी में समय चार का ही रहेगा, जब कि देशान्तर के आधार पर समय में भिन्नता रहा करती है।

हर व्यक्ति अपने बच्चे का समय घड़ी से ही अर्थात I. S. T. ही नोट कर के रख लेता है, किन्तु इष्टकाल (जिससे लग्न साधन किया जाता है) बनाने के लिए (Local Mean Time) स्थानीय समय को ही उपयोग में लाया जाता है। अतः कुण्डली बनाने वाले ज्योतिषी को स्थानीय समय बनाने के लिए घड़ी के समय I. S. T. में से देशान्तर को ऋण या धन करना पड़ता है।

जिस नगर-ग्राम में जन्मे जातक का इष्टकाल बनाना हो तो उस नगर-ग्राम का देशान्तर सारणी से मालूम कर के धन हो तो धन कर लेना चाहिए, ऋण हो तो ऋण कर देना चाहिये। हमने जिस बच्चे का उदाहरण ऊपर लिया है उसका जन्म दिल्ली में हुआ है, दिल्ली का देशान्तर (रेखांश) है 77·12 तथा बच्चे का जन्म 1 बजकर 34 मि० I .S. T. (रात्रि) में हुआ है। इसका इष्टकाल बनाते हैं।

```
            I. S. T. रेखांश  82.30
दिल्ली का देशान्तर (रेखांश)— 77.12
ऋण किया                    ─────
                             5.18 शेष
```

नोट—I. S. T. रेखांश से अभीष्ट स्थान का रेखांश कम हो तो ऋण एवं अधिक हो तो धन किया जाता है, शेष को 4 से गुणा करने पर मि०

सैं० देशान्तर प्राप्त होता है।

अब शेष को 4 से गुणा किया

$$5 \cdot 18 \times 4 = 21 \cdot 12$$ देशान्तर

	घं० मि० सैं०	
जन्म समय I. S. T.—	1·34· 0	
देशान्तर ऋण किया—	0·21·12	
	1·12·48	लोकल समय

बच्चे ने जब दिल्ली में जन्म लिया था तो घड़ी में समय I. S. T. था एक बजकर चौंतीस मिनट (1·34 P. M.) किन्तु स्थानीय समय (L. T) था एक बजकर बारह मिनट अड़तालीस सैंकिड (1·12·48 P. M.)।

स्थानीय समय निकालने के पश्चात वेलान्तर संस्कार किया जाता है (क्योंकि सूर्य की और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, इनकी गति में सामंजस्य बैठाने के लिए वेलान्तर संस्कार करना अनिवार्य हो जाता है) आगे के पृष्ठों में वेलान्तर सारणी दी गई है। ऊपर से नीचे तारीखें व बायें से दायें महीने दिये हैं। तारीख के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण चिह्न के साथ मि० सैं० दिये हैं। अभीष्ट तारीख का वेलान्तर लेकर लोकल टाइम में ऋण हो तो घटाया और धन हो तो जमा किया जाता है।

उदाहरण वाले बच्चे ने 15 जून को जन्म लिया है (जन्म चूंकि 14 जून 1978 की रात्रि के बारह बजे के पश्चात का है, अतः 15 तारीख ग्रहण की गई है)। सारणी में 15 तारीख और जून महीने में देखा तो समय मिला +0—5 सैं० इसे लोकल टाइम में जोड़ा

1 · 12 · 48	स्थानीय समय
+0 · 0 · 5	वेलान्तर
1 · 12 · 53	

शुद्ध जन्म समय 1 बजकर 12 मि० 53 सैं० सिद्ध हुआ। इष्टकाल बनाने (लग्न निकालने) के लिए यही बच्चे का असली समय है।

इष्टकाल बनाने के मुख्यतया नीचे लिखे नियम हैं—

1. यदि जातक का जन्म सूर्योदय से लेकर दिन के 12 बजे के भीतर

(दरम्यान) हुआ हो तो जन्म-समय में से सूर्योदय को ऋण कर के शेष को $2\frac{1}{2}$ से गुणा कर देने से घट्यादि इष्टकाल होगा, जैसे—कोई बच्चा दिल्ली में ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को प्रातः 8 बजे जन्म ले तो पहले इसका स्थानीय समय बनायेंगे, फिर वेलान्तर करेंगे। इसके पश्चात जो शुद्ध समय आयेगा उसमें से उस दिन का सूर्योदय समय घटा देंगे तथा शेष को $2\frac{1}{2}$ से गुणा कर देंगे।

जन्म समय I. S. T.	8·0
देशान्तर संस्कार किया —	21·12
	7·38·48 लोकल टाइम

7 · 38 · 48	लोकल टाइम
+ · 0 · 5	वेलान्तर जोड़ा
7 · 38 · 53	शुद्ध समय

इष्टकाल बनाने के लिए 7·38·53 (शुद्ध समय) में से सूर्योदय समय घटायेंगे, चूंकि बच्चे का जन्म 12 बजे दिन के भीतर ही है।

7 · 38 · 53	
5 · 26 · 0	सूर्योदय समय
2 · 12 · 53	शेष
× $2\frac{1}{2}$	
5 . 32 . 12	घट्यादि इष्टकाल

2. जब जातक ने 12 बजे दिन से लेकर सूर्यास्त के दरम्यान (बीच में, जन्म लिया हो तो जन्म-समय और सूर्यास्त-काल का अन्तर कर के $2\frac{1}{2}$ से गुणा करना चाहिये तथा उस संख्या को दिनमान में से घटा देने से घट्यादि इष्टकाल होगा। मान लो किसी का जन्म दिन के दो बजे ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी संवत् 2035 में हुआ था। वेलान्तर देशान्तर संस्कार करने पर समय आया एक बजकर 38 मि० 53 सें० अर्थात 13·38·53

सूर्यास्त था 7·15 अर्थात् 19·15 पर।

19. 15	सूर्यास्त में से ऋण किया
13. 38.53	शुद्ध जन्म समय
5. 36. 7	शेष
× $2\frac{1}{2}$	
14. 0.17	

इसे दिनमान में से घटाया चूंकि जन्म समय सूर्यास्त से पहले का है।

34. 32. 0	दिनमान
—14. 0. 17	शेष
20. 31. 43	इष्टकाल

3. सूर्यास्त से लेकर रात के बारह बजे के बीच यदि किसी जातक का जन्म होता है तो सूर्यास्त को जन्म समय में से घटा कर उसको $2\frac{1}{2}$ से गुणा करके जो संख्या आए उसमें दिनमान जोड़ देने से घट्यादि इष्ट-काल बन जाएगा। उदाहरण के लिए किसी जातक का जन्म संवत् 2035 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी बुधवार को 9 बजकर 15 मिनट पर हुआ हो तो देशान्तर व वेलान्तर संस्कार करने पर शुद्ध समय आया 8 बजकर 54 मिनट 53 सैं०।

शुद्ध समय में से	20.54.53	
सूर्यास्त ऋण किया	19.15. 0	
	1. 39. 53	शेष
	× $2\frac{1}{2}$	
	4. 9. 43	
दिनमान जोड़ा	+34. 32. 00	
	38. 41. 43	इष्टकाल

4. जब कोई जातक रात के 12 बजे के पश्चात् और सूर्योदय के पहले जन्म ले तो जन्म समय और सूर्योदय काल का अन्तर करके शेष को $2\frac{1}{2}$ से गुणा करें तथा गुणनफल को 60 में से घटाने पर शेष घट्यादि इष्टकाल होता है। उदाहरण के लिए किसी जातक का जन्म संवत् 2035 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी बुधवार को 1 बजकर 34 मि० पर हुआ तो देशान्तर वेलान्तर संस्कार करने पर शुद्ध समय आया 1. 12. 53 यानि 1 बजकर 13 मि० 53 सैं०।

अब इसका इष्टकाल नियम संख्या 4 के अनुसार निकालेंगे, क्योंकि इस जातक का जन्म रात के 12 बजे के पश्चात और सूर्योदय से पहले का है।

सूर्योदय काल	5.26. 0
ऋण किया जन्म समय	1.12.53
	4.13. 7 शेष
	× $2\frac{1}{2}$

सूर्योदय काल 5.26.0
ऋण किया जन्म समय 1.12.53

4.13.7
× 2½

10.32.47

इसे 60 घटी में से घटाया 60. 0. 0
10.32.47

49.29.13

49 घटी 27 पल 13 विपल इष्टकाल आया

इस प्रकार प्रत्येक जातक का उपरोक्त नियमों के अनुसार इष्टकाल बना लेना चाहिए।

ऊपर उदाहरण के लिए हमने एक बालक का जन्म समय लिया है उसके बारे में नीचे लिखे तथ्य स्पष्ट हुए।

जंन्म समय—	1/34 I.S.T. 1 बजकर 34 मिनट
जन्म तिथि—	संवत् 2035 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी (रात्रि) 14/15 जून 1978 ईसवी
जन्म स्थल—	दिल्ली
दिल्ली के अक्षांश—	28/38
दिल्ली के रेखांश—	77/12
अयनांश—	23.32.24
प्रातः सायनार्क—	2.24.26.51.52
सायं सायनार्क—	8.24.26.51.52
दिनमान—	34/32
दिल्ली का सूर्यास्त—	5/26 5 बजकर 26 मि॰ पर
दिल्ली का सूर्योदय—	7/15 7 बजकर 15 मि॰ पर
लोकल-टाइम—	1.13.48
वेलान्तर—	0.5
शुद्ध जन्म समय—	1.13.53 1 बजकर 13 मि॰ 53 सै॰

वेलान्तर बोधक सारणी—I

तारीख	जनवरी मि०स०	फरवरी मि०सै०	मार्च मि०सै०	अप्रैल मि०सै०	मई मि०सै०	जून मि०सै०
1	— 3-28	—13-41	—12-36	—4-7	+2-54	+2-29
2	— 3-56	—13-49	—12-24	— 3-49	+3-2	+2-20
3	— 4-24	—13-56	—12-12	—3-31	+3-9	+2-10
4	— 4-52	—14-3	—11-59	—3-13	+3-17	+2-1
5	— 5-19	—14-8	—11-46	—2-55	+3-21	+1-51
6	— 5-46	—14-13	—11-33	—2-38	+3-26	+1-40
7	— 6-13	—14-17	—11-18	—2-21	+3-31	+1-29
8	— 6-38	—14-20	—11-4	—2-3	+3-35	+1-18
9	— 7-4	—14-22	—10-49	—1-40	+3-39	+1-7
10	— 7-28	—14-23	—10-34	—1-30	+3-42	+0-56
11	— 7-53	—14-24	—10-18	—1-13	+3-45	+0-44
12	— 8-16	—14-24	—10-2	—0-57	+3-47	+0-32
13	— 8-39	—14-23	— 9-46	—0-41	+3-48	+0-20
14	— 9-2	—14-21	— 9-29	—0-26	+3-49	+0-7

तारीख	जनवरी मि०सै०	फरवरी मि०सै०	मार्च मि०सै०	अप्रैल मि०सै०	मई मि०सै०	जून मि०सै०
15	—9-23	—14-19	—9-12	—0-11	+3-49	—0-5
16	—9-44	—14-16	—8-55	—0-4	+3-49	—0-19
17	—10-5	—14-12	—8-38	+0-18	+3-48	—0-31
18	—10-24	—14-7	—8-20	+0-32	+3-46	—0-44
19	—10-43	—14-2	—8-3	+0-46	+3-44	—0-57
20	—11-2	—13-56	—7-45	+0-59	+3-41	—1-10
21	—11-19	—13-50	—7-27	+1-12	+3-38	—1-23
22	—11-36	—13-43	—7-9	+1-25	+3-34	—1-36
23	—11-52	—13-35	—6-51	+1-36	+3-30	—1-49
24	—12-7	—13-27	—6-33	+1-49	+3-25	—2-2
25	—12-22	—13-18	—6-14	+1-59	+3-20	—2-15
26	—12-36	—13-8	—5-56	+2-9	+3-14	—2-38
27	—12-49	—12-58	—5-38	+2-19	+3-7	—2-40
28	—13-1	—12-47	—5-20	+2-29	+3-1	—2-43
29	—13-12	—12-41	—5-1	+2-38	+2-53	—3-5
30	—13-23		—4-43	+2-46	+2-47	—3-17
31	—13-32		—4-25		+ 2-35	

तारीख	जुलाई मि० सै०	अगस्त मि० सै०	सितम्बर मि० सै०	अक्तूबर मि० सै०	नवम्बर मि० सै०	दिसम्बर मि० सै०
1	—3-29	—6-11	+0-7	+10-7	+16-19	+11-5
2	—3-41	—6-8	+0-11	+10-26	+16-20	+10-42
3	—3-52	—6-3	+0-30	+10-45	+16-21	+10-19
4	—4-3	—5-59	+0-50	+11-4	+16-21	+ 9-56
5	—4-14	—5-53	+1-10	+11-22	+16-20	+ 9-31
6	—4-24	—5-47	+1-30	+11-40	+16-18	+ 9-7
7	—4-34	—5-41	+1-50	+11-58	+16-16	+ 8-41
8	—4-44	—5-33	+2-10	+12-15	+16-13	+ 8-15
9	—4-53	—5-26	+2-31	+12-33	+16-8	+ 7-49
10	—5-2	—5-17	+2-51	+12-48	+16-3	+ 7-22
11	—5-10	—5-8	+3-12	+13-4	+15-57	+ 6-55
12	—5-18	—4-59	+3-33	+13-19	+15-51	+ 6-27
13	—5-26	—4-49	+3-54	+13-34	+15-43	+ 5-59
14	—5-33	—4-38	+4-15	+13-48	+15-34	+ 5-31
15	—5-40	—4-27	+4-36	+14-2	+15-25	+ 5-2
16	—5-46	—4-16	+4-58	+14-15	+15-15	+ 4-33

तारीख	जुलाई मि० सै०	अगस्त मि० सै०	सितम्बर मि० सै०	अक्तूबर मि० सै०	नवम्बर मि० सै०	दिसम्बर मि० सै०
17	—5-52	—4-4	+5-19	+14-28	+15-4	+4-4
18	—5-57	—3-51	+5-40	+14-40	+14-52	+3-34
19	—6-2	—3-38	+6-1	+14-51	+14-39	+3-4
20	—6-6	—3-24	+6-22	+15-2	+14-25	+2-34
21	—6-9	—3-10	+6-43	+15-12	+14-11	+2-5
22	—6-13	—2-56	+7-4	+15-22	+13-55	+1-35
23	—6-15	—2-41	+7-25	+15-31	+13-39	+1-5
24	—6-17	—2-25	+7-46	+15-39	+13-23	+0-35
25	—6-18	—2-10	+8-7	+15-46	+13-5	+0-5
26	—6-19	—1-53	+8-27	+15-53	+12-47	+0-34
27	—6-19	—1-36	+8-47	+15-56	+12-28	+1-4
28	—6-19	—1-30	+9-8	+16-5	+12-8	+1-32
29	—6-18	—1-2	+9-28	+16-9	+11-18	+2-1
30	—6-16	—0-44	+9-47	+16-13	+11-27	+2-30
31	—6-14	—0-26		+16-16		+2-56

विभिन्न नगरों के स्टैण्डर्ड अन्तर

क्रम सं०	नाम नगर	नाम प्रदेश	स्टैण्डर्ड अन्तर
1	अमेठी	उ० प्रदेश	—3
2	अलमोड़ा	उ० प्रदेश	—11/20
3	अहमदाबाद	गुजरात	—39/28
4	अलीगंज	विहार	+6
5	अलीगढ़	उ० प्रदेश	—17/36
6	अहमदपुर	आन्ध्र प्रदेश	—44
7	अमरावती	महाराष्ट्र	—19
8	अलीगंज	उ० प्रदेश	—13
9	अनूपशहर	उ० प्रदेश	—17
10	अनन्तनाग	काश्मीर	—30
11	अखनूर	काश्मीर	—32
12	अलवर	राजस्थान	—23/28
13	अजमेर	राजस्थान	—31/12
14	अमृतसर	पंजाव	—30/48
15	अम्बाला	हरियाणा	—22/32
16	अयोध्या	उ० प्रदेश	—1/4
17	अगरतला	त्रिपुरा	+35/08
18	अहमदनगर	महाराष्ट्र	—30/48
19	अमरोहा	उ० प्रदेश	—16
20	आगरा	उ० प्रदेश	—18
21	अकोला	महाराष्ट्र	—22

22	आसनसोल	बंगाल	+19
23	आबू	राजस्थान	—39/0
24	आजमगढ़	उ० प्रदेश	+2/48
25	इन्दौर	म० प्रदेश	—26/40
26	इटावा	उ० प्रदेश	—13/52
27	उज्जैन	म० प्रदेश	—27/08
28	उन्नाव	उ० प्रदेश	—7
29	उदयपुर	राजस्थान	—35/12
30	एलिचपुर	महाराष्ट्र	—19/48
31	औरंगाबाद	आन्ध्र प्रदेश	—28/28
32	कठुआ	जम्मू-काश्मीर	—27/36
33	कपूरथला	पंजाब	—28/20
34	करनाल	हरियाणा	—21/52
35	कटक	उड़ीसा	+13/36
36	कलकत्ता	बंगाल	+23/36
37	कोडकनाल	तमिलनाडु	+20/08
38	कानपुर	उ० प्रदेश	—8/24
39	कटनी	म० प्रदेश	—8/28
40	काशी	उ० प्रदेश	+2
41	कांगड़ा	हिमाचल	—24/48
42	कांकरोली	राजस्थान	—34/24
43	कुरुक्षेत्र	हरियाणा	—22/48
44	कोटा	राजस्थान	—26/32
45	कुमारी अन्तरीप	तमिलनाडु	—19/44
46	कुम्भकोणम्	तमिलनाडु	—12/20
47	कोहिमा	नागालैण्ड	+46/28
48	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	—32/56
49	कोचीन	केरल	—24/52
50	खम्बात	गुजरात	—39/36

51	गया	बिहार	+10/4
52	गंगटोक	सिक्किम	+24/40
53	ग्वालियर	म० प्रदेश	—17/20
54	गाजीपुर	उ०प्रदेश	+4/20
55	गिलगित	जम्मू-काश्मीर	—32/32
56	गौंडा	उ० प्रदेश	—2/12
57	गोहाटी	असम	+37/0
58	गुरदासपुर	पंजाव	—28/12
59	गोरखपुर	उ० प्रदेश	+3/36
60	गोवा	केन्द्रशासित	—34/12
61	चम्वा	हिमाचल	—25/20
62	चण्डीगढ़	केन्द्रशासित	—22/32
63	चेरापूंजी	मेघालय	+37/8
64	छतरपुर	म० प्रदेश	—11/28
65	छपरा	विहार	+8/44
66	जलपाईगुड़ी	वंगाल	+25/4
67	जम्मू	जम्मू-काश्मीर	—30/24
68	जवलपुर	म० प्रदेश	—10/4
69	जयपुर	राजस्थान	—26/32
70	जालन्धर	पंजाव	—27/44
71	जामनगर	गुजरात	—49/32
72	जींद	हरियाणा	—24/28
73	जूनागढ़	गुजरात	—47/36
74	जैसलमेर	राजस्थान	—46/12
75	जोधपुर	राजस्थान	—37/44
76	जौनपुर	उ० प्रदेश	+0/56
77	झालरापाटन	गुजरात	—25/12
78	झांसी	उ० प्रदेश	—15/32
79	झालावाड़	राजस्थान	—33/24

80	ट्रावन्कोर	केरल	—22/0
81	टोंक	राजस्थान	—26/40
82	डिबाई	उ० प्रदेश	– 17/0
83	डूंगरपुर	राजस्थान	—35/8
84	डिब्रूगढ़	असम	+49/44
85	त्रिवेन्द्रम्	केरल	—22/12
86	तिलागंग		—40/8
87	त्रिचनापल्ली	केरल	—14/56
88	दरभंगा	बिहार	+13/48
89	द्वारिका	गुजरात	—53/56
90	दार्जिलिंग	बंगाल	+23/12
91	दिल्ली	केन्द्रशासित	—21/12
92	देहरादून	उ० प्रदेश	—17/44
93	धौलपुर	राजस्थान	—18/28
94	नडियाड	गुजरात	—38/20
95	नसीराबाद	राजस्थान	—30/56
96	नागपुर	महाराष्ट्र	—13/24
97	नाभा	पंजाब	—25/24
98	नाथद्वारा	राजस्थान	—34/32
99	नासिक	महाराष्ट्र	—34/40
100	नैनीताल	उ० प्रदेश	—12/0
101	पटना	बिहार	+10/52
102	पटियाला	पंजाब	—24/20
103	पठानकोट	पंजाब	—27/12
104	प्रयागराज	उ० प्रदेश	—2/24
105	पाण्डेचिरी	केन्द्रशासित	—10/28
106	पुंछ	जम्मू-काश्मीर	—33/28
107	पूना	महाराष्ट्र	—34/28
108	पोर्टब्लेयर	अण्डमान द्वीपसमूह	+41/4

109	पंजिम	गोवा	—34/44
110	पोरबन्दर	गुजरात	—50/44
111	फर्रुखाबाद	उ० प्रदेश	—11/32
112	फरीदकोट	पंजाब	—31/00
113	फिरोजपुर	पंजाब	—31/20
114	बड़ौदा	गुजरात	—36/00
115	बम्बई	महाराष्ट्र	—38/24
116	बरेली	उ० प्रदेश	—12/12
117	बद्रीनाथ	उ० प्रदेश	—11/52
118	बर्दवान	बंगाल	+21/28
119	बुलन्दशहर	उ० प्रदेश	—18/24
120	बिलासपुर	म० प्रदेश	—1/8
121	बीकानेर	राजस्थान	—36/32
122	बीजापुर	महाराष्ट्र	—26/52
123	बिलासपुर	हिमाचल	—23/00
124	बूंदी	राजस्थान	—27/00
125	बंगलौर	कर्नाटक	—19/28
126	भटिंडा	पंजाब	—30/00
127	भरतपुर	राजस्थान	—20/00
128	भागलपुर	बिहार	+17/56
129	भोपाल	म० प्रदेश	--20/28
130	भुज	गुजरात	—50/48
131	मद्रास	आन्ध्र प्रदेश	—8/52
32	मथुरा	उ० प्रदेश	—19/16
133	मालेरकोटला	पंजाब	—26/4
134	मन्दसौर	म० प्रदेश	—29/40
135	मछलीपट्टम	आन्ध्र प्रदेश	—5/28
136	मिर्जापुर	उ० प्रदेश	+0/12
137	मुजफ्फरपुर	बिहार	+11/44

138	मणिपुर	नागालैण्ड	+45/42
139	मुरादाबाद	उ० प्रदेश	—14/44
140	मेरठ	उ० प्रदेश	—19/00
141	मैसूर	कर्नाटक	—23/12
142	मण्डी	हिमाचल	—22/8
143	रांची	बिहार	+11/20
144	रतलाम	म० प्रदेश	—29/32
145	रत्नागिरि	महाराष्ट्र	—36/44
146	रामेश्वरम्	तमिलनाडु	—12/32
147	रायबरेली	उ० प्रदेश	—4/56
148	राजमहेन्द्री	आन्ध्र प्रदेश	—2/48
149	रेवाड़ी	हरियाणा	—23/20
150	रीवां	म० प्रदेश	—4/44
151	रायपुर	म० प्रदेश	—3/16
152	राजकोट	गुजरात	—46/16
153	रोहतक	हरियाणा	—23/28
154	रोपड़	पंजाब	—24/0
155	लखनऊ	उ० प्रदेश	—6/4
156	लश्कर	म० प्रदेश	—17/28
157	लाचेन	सिक्किम	+24/16
158	लुहारू	राजस्थान	—26/52
159	लुधियाना	पंजाब	—26/24
160	शिलांग	असम	+37/36
161	शिमला	हिमाचल	—21/8
162	श्रीनगर	जम्मू-काश्मीर	—30/36
163	सवाईमाधोपुर	राजस्थान	—24/0
164	सहारनपुर	उ० प्रदेश	—20/28
165	सिकन्दराबाद	आन्ध्र प्रदेश	—15/48
166	सतारा	महाराष्ट्र	—33/52

167	सागर	म० प्रदेश	—15/0
168	सूरत	गुजरात	—38/32
169	सोलन	हिमाचल	—21/24
170	हरिद्वार	उ० प्रदेश	—17/8
171	हिसार	हरियाणा	—26/56
172	हाथरस	उ० प्रदेश	—17/36
173	हैदराबाद	आन्ध्र प्रदेश	—16/0
174	होशियारपुर	पंजाब	—26/12
175	होशंगाबाद	म० प्रदेश	—19/0

लग्न साधन

जन्म समय में क्रान्ति वृत्त का जो प्रदेश-स्थान क्षितिज वृत्त में लगता है, वही लग्न कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, अहोरात्र में उतना अंश जिसमें किसी राशि का उदय काल रहता है लग्न कहलाता है। अहोरात्र में (24 घण्टों में) 12 राशियों का उदय काल आने से दिन-रात (अहोरात्र) में 12 लग्नों की कल्पना की गई है। फलदीपिकाकार ने अपने ग्रन्थ में "राशीनामुदयोलग्नं" लिखा है अर्थात् एक राशि का उदय काल लग्न कहा जाता है।

लग्न साधन करने के लिए उस स्थान का उदयमान भी जान लेना चाहिए। इसके लिए पलभा का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक नगर की पलभा अपने स्थान के अक्षांशों पर से आगे दी गई सारणी से ज्ञात की जा सकती है। सायन मेष संक्रान्ति या सायन तुला संक्रान्ति के दिन मध्याह्न काल में 12 अंगुल शंकु की जितनी छाया हो उतना ही उस स्थान की पलभा का प्रमाण होता है। इस पलभा को तीन अलग-अलग स्थानों पर रख कर प्रथम स्थान में 10 से, द्वितीय में 8 से एवं तीसरे में $\frac{10}{3}$ से गुणा करने से तीन राशियों के चर खंड होते हैं। इनको मेष आदि तीन

राशियों में ऋण, कर्क आदि तीन राशियों में धन, तुला आदि तीन राशियों में धन एवं मकर आदि तीन राशियों में ऋण करने से उदयमान आता है।

दिल्ली की पलभा 6/33 को तीन स्थानों पर रखा

1. 6.33 × 10 = 65/30
2. 6.33 × 8 = 52/24
3. 6.33 × $\frac{10}{3}$ = 21/50

उपरोक्त तीनों गुणनफलों को राशियों के वेधोपलब्ध लंकोदय से संस्कार किया तो दिल्ली का उदयमान आ जाएगा। ऊपर हमने दिल्ली की पलभा लिखी है। दिल्ली का अक्षांश है 28/38। सारणी में देखा 28 के आगे अंक मिले—6.22.48/38 की पलभा और ज्ञात करनी है। 28 अंश की पलभा को 29 अंश की पलभा में से घटाने पर 1 अंश की पलभा आ जाएगी।

6. 39. 4	29° की पलभा
—6. 22. 48	28° की पलभा
.16 .16	एक अंश की पलभा

इसे 38 से गुणा कर के 60 का भाग देने से 38 कला की पलभा आ जाएगी।

16. 16
× 38
614.8

इसे 60 से भाग दिया

```
        10
60) 614.8
     600
      14
     ×60
     840
      +8
60) 848 ( 14
```

$$\begin{array}{r} 60 \\ \hline 248 \\ 240 \\ \hline \times\ 8 \end{array}$$ शेष त्याग दिए

28 अंश की पलभा	6. 22. 48	
38 कला की पलभा	+0. 10.14	
	6. 33. 2	दिल्ली की पलभा

पलभा सारणी

अक्षांश	पलभा (अंगुलात्मक)	अक्षांश	पलभा (अंगुलात्मक)
5	1/3/0	22	4/50/52
6	1/15/44	23	5/5/38
7	1/28/23	24	5/20/31
8	1/41/10	25	5/35/42
9	1/54/0	26	5/51/7
10	2/6/54	27	6/6/50
11	2/19/55	28	6/22/48
12	2/33/0	29	6/39/4
13	2/46/12	30	6/55/41
14	2/59/28	31	7/12/36
15	3/12/54	32	7/29/53
16	3/26/24	33	7/47/31
17	3/40/5	34	8/5/38
18	3/53/56	35	8/24/7
19	4/7/55	36	8/43/5
20	4/22/1	37	9/2/35
21	4/36/22	38	9/22/30

राशियों की वेधोपलब्ध लंकोदय सारणी

राशियां	वेधोपलब्ध लंकोदय	
मेष	279	ऋण करना चाहिए
वृष	299	,,
मिथुन	322	,,
कर्क	322	धन करना चाहिए
सिंह	299	,,
कन्या	279	,,
तुला	279	धन करना चाहिए
वृश्चिक	299	,,
धनु	322	,,
मकर	322	ऋण करना चाहिए
कुम्भ	299	,,
मीन	279	,,

दिल्ली का उदयमान

राशियां	वेधोपलब्ध लंकोदय			दिल्ली का उदयमान
मेष	279	ऋण किया	65/30	213/30
वृष	299	,, ,,	52/24	246/36
मिथुन	322	,, ,,	21/50	300/10
कर्क	322	धन किया	21/50	343/50
सिंह	299	,, ,,	52/24	351/24
कन्या	279	,, ,,	65/30	344/30
तुला	279	,, ,,	65/30	344/30
वृश्चिक	299	,, ,,	52/24	351/24
धनु	322	,, ,,	21/50	343/50
मकर	322	ऋण किया	21/50	300/10
कुम्भ	299	,, ,,	52/24	246/36
मीन	279	,, ,,	65/30	213/30

अब आप इष्टकाल बनाना तो सीख ही चुके हैं, लग्न किस प्रकार से निकाला जा सकता है, आगे सीखेंगे। लग्न निकालने की दो विधियां हैं। सायन सूर्य के भोग्यांशों से या भुक्तांशों से (दोनों प्रकार से) लग्न निकाला जा सकता है। इन में थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। जिस समय का लग्न निकालना हो उस समय के स्पष्ट सूर्य में उस समय का अयनांश जोड़ने से तात्कालिक सायनार्क स्पष्ट हो जाता है। सायनार्क की राशि का त्याग कर देने पर ये सायन सूर्य के भुक्तांश बन जाते हैं। भुक्तांश को 30 अंशों (एक राशि) में से घटाने पर शेष तुल्य सायन सूर्य के भोग्यांश होते हैं।

पिछले पृष्ठों में हम राशियों के स्वदेशीय उदयमान बनाना सीख आए हैं। लग्न बनाने के लिए सायन सूर्य के भुक्त या भोग्यांशों को सायन सूर्य की राशि के स्वदेशीय उदयमान से गुणा करके जो फल प्राप्त हो उसे 30 से भाग देने पर सायन सूर्य की राशि के भुक्तांश या भोग्यांश निकल आते हैं। फिर इष्टकाल के घटी-पलों को बना कर (भोग्य रीति से लग्न निकालना हो तो) इनमें से सायनार्क राशि के भोग्य पलों को घटाते हैं। शेष में से अगली राशि के स्वदेशीय मान के पलों को क्रमवार तब तक घटाते रहते हैं जब तक कि वे घटते चले जाएं। जिस राशि के पल न घट सकें उस राशि को अशुद्ध संज्ञा दी जाती है। ये अशुद्ध राशि के भोग्य पलादि होते हैं। इन्हें 30 से गुणा करके अशुद्ध संज्ञक राशि के स्वदेशीय उदयमान के पलों से भाग देने पर जो संख्या प्राप्त होती है वह सायन लग्न है, इस में से अयनांश निकालने पर निरयन लग्न बन जाता है।

भुक्त रीति से लग्न निकालने की क्रिया प्रारम्भ में पूर्व जैसी ही है। इसमें सायनार्क राशि के भुक्त पलों को घटा कर शेष में से उलटे क्रम से (जैसे सायनार्क राशि कर्क है तो इसे घटाने के बाद मिथुन फिर वृष आदि) बाकी राशियों के स्वदेशीय उदयमान कम किए जाते हैं और अशुद्ध संज्ञक राशि अंकों में से आए फल को कम कर देने से सायन लग्न बनता है। इस में से इष्टकालिक अयनांश निकाल दें तो निरयन लग्न बन जाता है।

आईए ऊपर वाले उदाहरण पर हम इसे घटित करें—

	1. 29. 50. 9	इष्टकालिक सूर्य
अयनांश जोड़े	+0 23. 32. 24	

तो प्रातः सायनार्क हुआ मिथुन के 23 अंश, 22 कला, 33 विकला।
मिथुन के सूर्य के भुक्तांश = 23° 22' 33"

इन्हें 30 अंशों में से घटाया (एक राशि का मान है 30 अंश)

```
 30.  0.  0
 23. 22. 33
-----------
  6. 37. 27   भोग्यांश मिथुन राशि सूर्य
```

दिल्ली का मिथुन राशि का उदयमान = 300. 10

इससे मिथुन राशि सूर्य के भोग्यांशों को गुणा किया

```
   6. 37. 27
       × 300
------------
 1987. 15. 0
```

इसे 30 से भाग दिया

```
30)1987.15.0(66
   180
   ---
   187
   180
   ---
     7
   × 60
   ----
   420
   +15
30)435(14
   30
   ---
   135
   120
   ---
    15
   × 60
   ----
30)900(30
   90
   --
   ×
```

मिथुन के भोग्य पल हुए = 66. 14. 30

अब इष्टकाल के पल आदि बना कर इनमें से मिथुन के भोग्य पल

घटाए—

इष्ट काल—49. 27. 13
×60
2967. 13

	2967. 13. 0	इष्ट काल के पलादि
ऋण किए	—61. 14. 30	मिथुन राशि के भोग्य पलादि
	2900. 58. 30	
	—343. 50. 0	कर्क राशि का उदयमान
	2557. 8. 30	
	—351. 24. 0	सिंह राशि के उदयमान
	2205. 44. 30	
	—344. 30. 0	कन्या के उदयमान
	1861. 14. 30	
	—344. 30. 0	तुला के उदयमान
	1516. 44. 30	
	—351. 24. 0	वृश्चिक के उदयमान
	1165. 20. 30	
	—343. 50. 0	धनु के उदयमान
	821. 30. 30	
	—300. 10. 0	मकर के उदयमान
	521. 20. 30	
	—246. 36. 0	कुम्भ के उदयमान
	274. 44. 30	
	—213. 30. 0	मीन के उदयमान
	61. 14. 30	शेष

शेष में से अगली राशि मेष के उदयमान घट नहीं सकते, इसलिए यह अशुद्ध सज्ञंक राशि हुई और शेष तुल्य मेष राशि के भोग्य पलादि हुए। इन्हें 30 से गुणा करके मेष के उदयमान पलों से भाग देने से सायन लग्न स्पष्ट होगा।

```
         61. 14. 30
            × 30
213)1837. 15. 0(8
     1704
     ----
      133
     ×60
     ----
     7980
     +15
213)7995(37
     639
     ----
     1605
     1491
     ----
      114
     ×60
213)6840(32
     639
     ----
      450
      426
     ----
       24 शेष
```

सायन लग्न = 0. 8. 37. 32

अयनांश ऋण किया — 23. 32. 24

11. 15. 5. 8 निरयन लग्न

ज्योतिष के जो पाठक इतनी सूक्ष्म गणित करना ना चाहें वे लग्न सारणी से लग्न निकाल सकते हैं। सारणी से लग्न साधन करने में कुछ कलाओं का अन्तर आ सकता है जो कि क्षम्य है। अक्षांश भेद से लग्न सारणियों में भी अन्तर आ सकता है। स्थानीय पंचांगों में उस स्थान (अक्षांश) की सारणी दी रहती है। सभी अक्षांशों की सारणियां देना न तो सरल है न ही सम्भव। आगे तीन अक्षांशों 29, 30, 31 की सारणियां दी जा रही हैं। हमने ऊपर जो उदाहरण लिया है उसके लिए अक्षांश 29 की सारणी

लग्न सारणी—अक्षांश 29 उत्तर (1)

अंश →		0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
मेष	घ	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4
0	प	48	55	2	9	16	23	30	38	46	54	2	11	19	27	35	44
वृष	घ	6	6	7	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9
1	प	48	56	4	12	21	29	37	46	56	6	16	26	36	46	56	6
मिथुन	घ	11	11	11	12	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14
2	प	37	47	57	7	17	27	37	48	59	10	22	33	45	56	8	19
कर्क	घ	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20
3	प	11	23	34	46	57	9	20	32	43	55	7	18	30	42	53	5
सिंह	घ	23	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25
4	प	0	12	23	35	47	58	10	22	33	44	56	7	19	30	41	53
कन्या	घ	28	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	31	31	31	31
5	प	44	55	7	18	29	41	52	4	15	26	38	49	1	12	23	35

लग्न सारणी—अक्षांश 29 उत्तर (1)

अंश →		16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
मेष	घ	4	5	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6
0	प	52	0	8	17	25	33	42	50	58	6	15	23	31	39	48
वृष	घ	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11	11	11
1	प	10	26	36	46	56	6	17	27	37	47	57	7	17	27	37
मिथुन	घ	14	14	14	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	17	17
2	प	31	42	54	5	17	28	40	51	2	14	25	37	48	0	11
कर्क	घ	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22	23
3	प	17	28	40	52	3	15	27	38	50	2	13	25	37	48	0
सिंह	घ	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	27	28	28	28	28
4	प	4	16	27	38	50	1	13	24	35	47	58	10	21	32	44
कन्या	घ	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34
5	प	46	58	9	20	32	43	55	6	17	29	40	52	3	14	26

60

लग्न सारणी अक्षांश 29 उत्तर (2)

अंश→		0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
तुला	घ	34	34	34	35	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37
6	प	26	37	49	0	11	23	34	40	57	0	21	32	44	56	7	19
वृश्चिक	घ	40	40	40	40	41	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43
7	प	14	26	37	49	1	12	24	36	47	58	10	21	33	44	56	7
धनु	घ	45	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48
8	प	59	11	22	34	45	57	8	20	30	40	50	0	10	20	30	40
मकर	घ	51	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53
9	प	11	21	31	41	51	1	11	22	30	38	46	55	3	11	19	38
कुम्भ	घ	55	55	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57
10	प	32	40	48	56	5	13	21	30	37	41	51	58	5	12	19	27
मीन	घ	59	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	1
11	प	14	21	28	35	42	49	56	4	11	18	25	32	39	46	53	1

61

लग्न सारणी अक्षांश 29 उत्तर (2)

अंश→		16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
तुला	घ	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40
6	प	31	42	54	6	17	29	41	52	4	16	27	39	51	2	14
वृश्चिक	घ	43	43	43	43	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	45
7	प	19	30	42	53	5	16	28	39	50	2	13	25	36	48	59
धनु	घ	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51
8	प	50	0	10	20	30	40	51	1	11	21	31	14	51	1	11
मकर	घ	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55
9	प	36	44	52	1	9	17	26	34	42	50	53	7	15	23	32
कुम्भ	घ	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59
10	प	34	41	48	55	2	9	17	24	31	38	45	52	59	6	14
मीन	घ	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2
11	प	8	15	22	29	34	43	51	58	5	12	19	26	33	40	48

लग्न सारणी 30 अक्षांश उत्तर (1)

अंश →		0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
मेष	घ	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4
0	प	44	51	58	5	12	19	26	32	41	49	57	5	13	21	29	38
वृष	घ	6	6	6	7	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8
1	प	40	48	56	4	12	20	28	36	46	56	6	16	26	36	46	56
मिथुन	घ	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	13	14
2	प	26	36	46	56	6	16	26	36	48	0	11	23	34	46	57	9
कर्क	घ	17	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19
3	प	2	13	25	36	38	59	11	22	34	46	58	10	21	33	45	57
सिंह	घ	22	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25
4	प	54	6	17	29	41	53	5	16	28	40	51	3	14	26	37	49
कन्या	घ	28	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	31	31	31	31
5	प	43	54	6	17	29	40	52	3	15	27	38	50	1	13	24	36

लग्न सारणी 30 अक्षांश उत्तर (1)

अंश —		16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
मेष	घ	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6
0	प	46	54	2	10	18	26	34	43	51	59	7	15	23	31	40
वृष	घ	9	9	9	6	9	9	10	10	10	10	10	10	11	11	11
1	प	6	16	26	36	46	56	6	16	26	36	46	56	6	16	26
मिथुन	घ	14	14	14	14	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	17
2	प	20	32	43	55	6	18	24	41	53	4	16	27	39	50	2
कर्क	घ	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22
3	प	9	20	32	44	56	8	19	31	43	55	7	18	30	42	54
सिंह	घ	26	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28
4	प	1	12	24	35	47	58	10	22	33	45	56	8	19	31	43
कन्या	घ	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34
5	प	48	59	11	22	34	45	57	9	20	32	43	55	6	18	30

का उपयोग करेंगे।

पंचांगों में सूर्य स्पष्ट दिया हुआ रहता ही है, वहां से उस दिन प्रातः का सूर्य स्पष्ट, सूर्य राशि, अंश, कलादि ले लें तथा पूर्वोक्त विधि से इष्टकाल साधन करें। स्पष्ट, सूर्य के राशि, अंशों को लग्न सारणी में देखें। जो अंक मिलें उन्हें इष्टकाल में मिला दें। फिर इस संख्या को पुनः सारणी में देखें तो अभीष्ट संख्या या उसके लगभग संख्या—जिस राशि-अंशों के मिलें—उन्हें नोट कर लें। यही लग्न है।

ऊपर के उदाहरण को लेते हैं, प्रातः सूर्य स्पष्ट

इष्टकाल = 49. 27. 13

वृष 29 अंशों को सारणी में देखा तो राशि के सामने अंशों के नीचे संख्या मिली = 11. 37

49. 27. 13 इष्टकाल
+11. 37 0
61. 4 13

इसे पुनः सारणी में देखा तो यह संख्या तो नहीं, इसके लगभग मीन राशि के सामने 16 अंशों के नीचे 1.8 मिली तो लग्न बनी।

11. 16. 1. 8

पहले जो गणित से लग्न निकाली थी वह थी, 11.15. 5.8 सो लग्न ठीक है। कुछ कला-विकला का अन्तर है।

लग्न निकालने के पश्चात लग्न कुण्डली बनाई जाती है तथा सबसे पहले लग्न का अंक लिखकर एन्टीक्लाकवाईज अर्थात् घड़ी की विपरीत चाल से बाकी अंक लिख देने चाहियें। कुण्डली बनाने के पश्चात् पंचांग की सहायता से जो-जो ग्रह जिस राशि में हों, लिख देने चाहिएं।

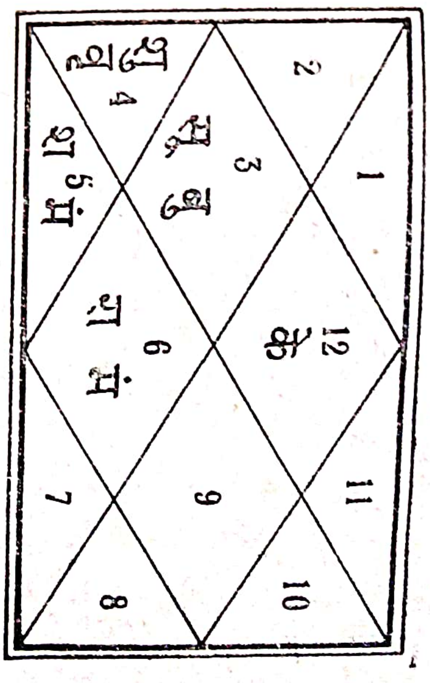
लग्न सारणी अक्षांश 30 उत्तर (2)

अंश →		0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
तुला	घ	34	34	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37
6	प	30	41	53	4	16	27	39	50	2	14	26	38	49	1	13	25
वृश्चिक	घ	40	40	40	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43
7	प	22	34	45	57	9	21	33	44	56	8	19	31	42	54	5	17
धनु	घ	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48
8	प	10	21	33	44	56	7	19	30	40	50	0	10	20	30	40	50
मकर	घ	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53
9	प	20	30	40	50	0	10	20	30	39	47	55	3	11	19	27	36
कुम्भ	घ	55	55	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57
10	प	38	46	54	2	10	18	26	34	41	48	55	2	9	16	23	30
मीन	घ	59	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0
11	प	15	22	29	36	43	50	57	3	10	17	24	31	38	45	52	59

लग्न सारणी अक्षांश 30 उत्तर (2)

अंश →		16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
तुला	घ	37	37	38	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40
6	प	37	48	0	12	24	36	47	59	11	23	35	46	58	10	22
वृश्चिक	घ	43	43	43	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	45	46
7	प	28	40	51	3	14	26	37	49	1	12	24	35	47	58	10
धनु	घ	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51
8	प	0	10	20	30	40	50	0	10	20	30	40	50	0	10	20
मकर	घ	53	53	54	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55
9	प	44	52	0	8	16	24	32	41	49	57	5	13	21	29	38
कुम्भ	घ	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59	59
10	प	37	44	51	58	5	12	19	26	33	40	47	54	1	8	15
मीन	घ	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2
11	प	6	13	20	27	34	41	48	55	2	9	16	23	30	37	44

लग्न कुण्डली

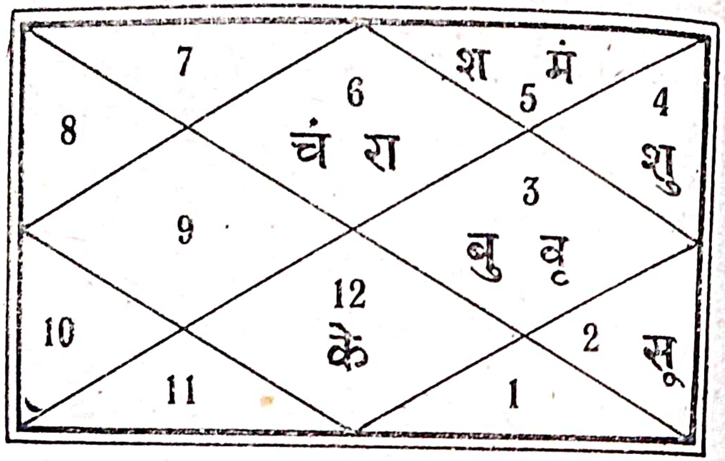


हमने जो उदाहरण लिया था, यह कुण्डली उसी की है। संवत् 2035 शाके 1900 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को रात के 1 बजकर 34 मिनट पर ग्रहों की यही स्थिति थी। कुछ ज्योतिर्विद इन नौ ग्रहों के अलावा नेपच्यून; हर्षल और प्लूटो आदि ग्रहों को भी कुण्डली में लिखते हैं। भारतीय ज्योतिष में इनका अलग से फलित नहीं है। प्राचीन मनीषियों को इनका पता न चला हो ऐसी बात मेरे विचार से नहीं है, पर उन्होंने मात्र उन्हीं ग्रहों को लिया जिनका मानव जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ता था।

लग्न कुण्डली के पश्चात् चन्द्र कुण्डली या राशि लग्न बनाई जाती है। इसमें और लग्न कुण्डली में ग्रहों की स्थिति में कोई अन्तर नहीं होता, मात्र जिस राशि में चन्द्र होता है, उसे लग्न मानकर बाकी ग्रहों को लग्न कुण्डली के अनुसार ही रख देते हैं।

आगे के पृष्ठ पर चन्द्र कुण्डली दी जा रही है।

चन्द्र कुण्डली



लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन पद्धति

पिछले पृष्ठों में आपने लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की प्राचीन विधि का अध्ययन किया था। यहां हम लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन और सरल विधि लिख रहे हैं। प्राचीन विधि के अनुसार लग्न स्पष्ट करने में गणित अधिक करना पड़ता है और सारणी से सूक्ष्म लग्न नहीं आती। पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने इस नवीन पद्धति "साम्पातिक काल" (Sidereal Time) से लग्न साधन की विधि निकाली है।

साम्पातिक काल से लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने के लिए न तो सूर्य स्पष्ट की आवश्यकता होती है न ही इष्टकाल और दिनमान की। जन्म के स्टैण्डर्ड टाइम से ही लग्न साधन किया जा सकता है। इस विधि से लग्न निकालने के लिए नीचे लिखी जानकारी प्राप्त कर लेना अनिवार्य रहता है।

1. जिस स्थान पर जन्मे जातक का लग्न निकालना है वहां के अक्षांश एवं रेखांश।
2. उस स्थान (नगर-ग्राम) का देशान्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर)।
3. उस समय का अयनांश, जिस समय का लग्न साधन करना हो।
4. उस समय का साम्पातिक काल जिस समय का लग्न स्पष्ट करना हो।

आगे साम्पातिक काल की सारणियां दी गई हैं उसमें से जिस सन् में जातक ने जन्म लिया है उस सन् का लिखा साम्पातिक काल सारणी से लेकर लिख लें, फिर सारणी नं० 2 में से महीने एवं तारीख के आगे का लिखा समय, सन् के समय में जोड़ें तथा बच्चे के जन्म का समय (लोकल टाईम) भी इसमें जोड़ लें। यह जोड़ 24 से अधिक हो तो इसमें से 24 घटा लें, यही सम्पातिक काल होगा।

पिछले पृष्ठों में उदाहरणार्थ जिस बच्चे का जन्म समय लिया था (बच्चे का जन्म 14-15 जून 1978 को 1 बजकर 34 मि० रात्रि में हुआ था) उसका साम्पातिक काल बनाना है। सारणी में देखने पर सन् के आगे संख्या मिली 6 घं० 40 मि० 19 सै०। इसने रात्रि में 12 बजे के पश्चात

जन्म लिया है, अतः अगली तारीख 15 जून के आगे लिखे घं० मि० लिए 10 घं० 50 मि० 32 सै० । जन्म समय स्टैण्डर्ड टाईम में है इसका स्थानीय समय (Local Time) बनाया (जन्म समय में से स्टैण्डर्ड समय घटाया, क्योंकि स्टैण्डर्ड टाईम के देशान्तर से जहां बच्चे ने जन्म लिया है उस जगह का देशान्तर कम है।)

जन्म समय—	1. 34. 0	
देशान्तर समय घटाया—	21. 2	
	1. 12. 48	लोकल समय

	घं० मि० सै०	
सन् के आगे की संख्या	6. 40. 19	
महीने व तारीख की संख्या	+ 10. 50. 32	
जन्म समय (शुद्ध)	+ 1. 12. 48	
	18. 43. 39	साम्पातिक काल

यहां साम्पातिक काल आया 18 घं० 43 मि० 39 सै० । यह 24 से कम है अतः 24 घटाने की आवश्यकता नहीं है। 24 से अधिक होता तो इसमें से 24 घटाने पर शेष घं० मि० तुल्य साम्पातिक काल होता।

इसी समय का लग्न निकालने के लिए लग्न सारणी में अक्षांश 26° (3) के नीचे देखा (चूंकि जहां जातक ने जन्म लिया है वहां के अक्षांश हैं 28/38 सारणी में 3, 3 अंशों एवं आधे-आधे घण्टे के अन्तर से लग्न समय लिखा है, अतः 26° अक्षांश के नीचे और 18 घं० 30 मि० के आगे का समय लिया है)। संख्या मिली 10 अंश 20 कला, बाकी के 2 अंश 38 कला के लिए 29° अक्षांश में से 26° अक्षांश की संख्या को घटाया 10.44 — 10.20 = 24 कला यह तीन अक्षांश की गति है तो 2 अक्षांश की गति हुई $\frac{2 \times 24}{3} = 16$ कला 38 शेष की गति हुई $\frac{8 \times 38}{60} = 304$ विकला अर्थात् = 5 कला 4 विकला। इन्हें जोड़ा।

26° अक्षांश	= 10.20.0	
2° 38 अक्षांश	= 21.4	
	10.41.4	= 18 घं० 30 मि० की सायन लग्न

साम्पातिक काल के बाकी बचे 13 मि० के लग्नांश इसमें और जोड़ने हैं। 26° अक्षांश के 18.30 और 19 घं० का अन्तर किया—

	अं०	कला	
19 घं० के	20	30	
18 घं० 30 मि० के घटाए	—10	20	
	10	10	शेष

10 अंश 10 कला 30 मि० की लग्न की गति है तो 13 मि० की गति के लिए इसे 13 से गुणा करके 30 का भाग दे देंगे।

10 × 60 + 10 = 610 कला

$\frac{610 \times 13}{30} = \frac{793}{3} \div 60 =$ 4 अं 24 कला 20 विकला

इसे 18 घं० 30 मिनट की सायन लग्न में जोड़ा

10.41. 4	
+ 4.24·20	
15. 5.24	= 18 घं० 43 मि० 39 सै० की सायन लग्न

15 अंश 5 कला 24 विकला सायन लग्न है। इसमें से अभीष्ट काल का अयनांश घटाने से निरयन लग्न बन जाएगा। सारणी में (अयनांश सारणी में 1978 का अनयांश 23 अंश 32 कला 58 विकला है। 13 से 16 जून का अयनांश 23 विकला है। इन्हें जोड़ा—

1978 का अयनांश—	23.32.58	
15 जून का अयनांश	+ 0. 0. 23	
	23.33.21	= 15 जून 1978 का अयनांश

सायन लग्न 15 अंश 5 कला 24 विकला में अयनांश कम किया

—23.33.21

सायन लग्न में अयनांश नहीं घट सकता, क्योंकि अयनांश अधिक हैं, अतः सायन लग्न में 360 अंश जोड़ दिए।

360. 0.0
15. 5.24
375. 5.24
अयनांश घटाया 23.33.21
351.32.3 निरयन लग्न

351 अंश को 30 पर भाग देकर राशि बनाई
11.21.32.3 निरयन लग्न

दशम साधन विधि

लग्न सारणी में दशम लग्न वाले कालम में 18 घं० 30 मि० के आगे 276 अंश 53 कला लिखे हैं। इसमें 13 मि० के अंश व कला और जोड़कर अयनांश घटा देने से दशम भाव स्पष्ट हो जाएगा।

19 घं० 0 मि० की दशम लग्न—283.49
18 „ 30 „ „ „ „ „ „—276.53
6.56=30 मि० की लग्नाशीत

$6\times 60+56=\frac{416\times 13}{30}=30.0.16$ 13 मि० की दशम लग्न

18 घं० 3० मि० की दशम लग्न 276.53. 0
इसमें 13 मि० की दशम लग्न जोड़ी + 3. 0.16
279.53.16 =सायन दशम लग्न

सायम दशम लग्न 279.53.16
अयनांश घटाया 23.33.21
256.19.55 निरयन दशम लग्न
अंशों की राशि बनाई 256÷30=8.16.19.55 दशम लग्न

साम्पातिक काल सारणी (1)

सन्	घं०	मि०	सै०	सन्	घं०	मि०	सै०
1936	6	37	4	1965	6	40	55
1937	6	40	3	1966	6	39	57
1938	6	39	6	1967	6	39	0
1939	6	38	8	1968	6	38	3
1940	6	37	11	1969	6	41	2
1941	6	40	11	1970	6	40	5
1942	6	39	12	1971	6	39	7
1943	6	38	15	1972	6	38	10
1944	6	37	17	1973	6	41	10
1945	6	40	16	1974	6	40	12
1946	6	39	19	1975	6	39	15
1947	6	38	22	1976	6	38	17
1948	6	37	25	1977	6	41	16
1949	6	40	25	1978	6	40	19
1950	6	39	27	1979	6	39	22
1951	6	38	30	1980	6	38	24
1952	6	37	33	1981	6	41	23
1953	6	40	33	1982	6	40	26
1954	6	39	35	1983	6	39	29
1955	6	38	38	1984	6	38	32
1956	6	37	41	1985	6	41	32
1957	6	40	41	1986	6	40	35
1958	6	39	43	1987	6	39	38
1959	6	38	45	1988	6	38	40
1960	6	37	47	1989	6	41	39
1961	6	40	47	1990	6	40	41
1962	6	39	50	1991	6	39	44
1963	6	38	53	1992	6	38	46
1964	6	37	56	1993	6	41	46

साम्पातिक काल सारणी (2)

ता०	जनवरी घं०मि०सै०	फरवरी घं०मि०सै०	मार्च घं०मि०सै०	अप्रैल घं०मि०सै०	मई घं०मि०सै०	जून घं०मि०सै०
1	0-0-0	2-2-13	3-52-37	5-54-50	7-53-7	9-52-21
2	0-3-57	2-6-9	3-56-33	5-58-47	7-57-4	9-59-17
3	0-7-53	2-10-6	4-0-30	6-2 -43	8-[illegible]-0	10-3-14
4	0-11-50	2-14-2	4-4-26	6-6-40	8-4-57	10-7-10
5	0-15-46	2-17-59	4-8-23	6-10-36	8-8-53	10-11-7
6	0-19-43	2-21-55	4-12-19	6-14-33	8-12-50	10-15-3
7	0-23-39	2-25-52	4-16-16	6-18-29	8-16-46	10-19-0
8	0-27-36	2-29-48	4-20-12	6-22-26	8-20-43	10-20-56
9	0-31-32	2-33-45	4-24-9	6-26-22	8-24-39	10-26-53
10	0-35-29	2-37-42	4-28-5	6-30-19	8-28-36	10-30-49
11	0-39-25	2-41-39	4-32-2	6-34-16	8-32-32	10-34-46
12	0-43-22	2-45-35	4-35-59	6-38-13	8-36-29	10-38-42
13	0-47-18	2-39-32	4-39-56	6-42-9	8-40-25	10-42-39
14	0-51-15	2-53-28	4-43-52	6-46-6	8-44-22	10-46-35
15	0-55-12	2-57-25	4-47-49	6-50-2	8-48-18	10-50-32
16	0-59-8	3-1-21	4-51-45	6-53-59	8-52-15	10-54-28
17	1-3-4	3-5-18	4-55-42	6-57-55	8-56-11	10-58-25
18	1-7-1	3-9-14	4-59-38	7-1-52	9-0-8	11-2-21
19	1-10-57	3-13-11	5-3-35	7-5-48	9-4-4	11-6-18
20	1-14-54	3-17-8	5-7-31	7-9-54	9-8-1	11-10-15
21	1-18-51	3-21-5	5-11-28	7-13-41	9-11-58	11-14-12
22	1-22-48	3-25-1	5-15-25	7-17-38	9-15-55	11-18-8
23	1-26-44	3-28-58	5-19-22	7-21-34	9-19-51	11-22-5
24	1-30-41	3-32-54	5-23-18	7-25-31	9-23-48	11-26-1
25	1-34-17	3-36-51	5-27-15	7-29-28	9-27-44	11-29-58
26	1-38-34	3-40-47	5-31-11	7-33-24	9-31-41	11-33-54
27	1-42-30	3-44-44	5-35-8	7-27-20	9-35-37	11-37-51
28	1-46-27	3-48-40	5-39-5	7-41-17	9-39-34	11-41-47
29	1-50-23	3-52-37	5-43-1	7-45-13	9-43-30	11-45-44
30	1-54-20	×××	5-46-58	7-49-10	9-47-27	11-49-41
31	1-58-26	×××	5-50-54	×××	9-51-24	×××

साम्पातिक काल सारणी (2)

ता०	जुलाई घं०मि०सै०	अगस्त घं०मि०सै०	सितम्बर घं०मि०सै०	अक्तूबर घं०मि०सै०	नवम्बर घं०मि०सै०	दिसम्बर घं०मि०सै०
1	11.53.38	13.55.50	15.58.4	17.36.21	19.58.34	21.56.50
2	11.57.34	13.59.47	16.2.0	18.0.17	20.2.31	22.0.47
3	12.1.31	14.3.44	16.5.57	18.4.14	20.6.27	22.0 43
4	12.5.27	14.7.40	16.9.53	18.8.1	20.10.24	22.8.40
5	12.9.24	14.11.36	16.13.50	18.12.7	20.14.20	22.12.36
6	12.13.21	14.15.33	16.17.46	18.16.3	20.18.17	22.16.33
7	12.17.17	14.19.29	16.21.43	18.20.0	20.22.13	22.20.30
8	12.21.14	14.23.26	16.25.40	18.23.57	20.26.10	22.24.27
9	12.25.10	14.27.23	16.29.37	18.27.54	20.30.6	22.28.23
10	12.29.6	14.31.20	16.33.33	18.31.50	20.34.3	22.32.20
11	12.33.3	14.35.16	16.37.30	18.35.47	20.38.0	22.36.16
12	12 36.59	14.39.13	16.41.26	18.39.43	20.41.56	22.40.13
13	12.40.56	14.43.9	16.45.23	18.43.40	20.45.52	22.44.9
14	12.44.52	14.47.6	16.49.19	18.47.37	20.49.49	22.48.6
15	12.48.49	14.51.2	16.53.16	18.51.33	20.53.45	22.52.2
16	12.52.45	14.54.59	16.57.12	18.55.30	20.57.42	22.55.59
17	12.56.42	14.58.55	17.1.9	18.59.26	21.1.39	22.59.56
18	13.0.38	15.2. 52	17.5.5	19.3.22	21.5.36	23.3.53
19	13.4.35	15.6.48	17.9.2	19.7.19	21.9.32	23.7.49
20	13.8.32	15.10.45	17.12.58	19.11.15	21.13.29	23.11.46
21	13.12.29	15.14.41	17.16.55	19.15.12	21.17.25	23 15.42
22	13.16.25	15.18.38	17.20.51	19.19.8	21.21.22	23.19.39
23	13.20.22	15.22.34	17.24.48	19.23.5	21.25.18	23.23.35
24	13.24.18	15.26.31	17.28.44	19.27.1	21.29.15	23.27.32
25	13.28.15	15.30.27	17.32.41	19.30.58	21.33.11	23.31.28
26	13.32.11	15.34.24	17.36.37	19.34.54	21.37.8	23.35.25
27	13.36.8	15.38.20	17.40.34	19.38.51	21.41.4	23.39.21
28	13.40.4	15.42.17	17.44.31	19.42.48	21.45.1	23.43.18
29	13.44.1	15.46.14	17.48.28	19.46.45	21.48.57	23.47.14
30	13.48.57	15.50.11	17.52.24	19.50.41	21.52.54	23.51.4
31	13.51.54	15.54.7	×××	19.54.38	×××	23.55.7

नोट—लीप के साल में एक दिन जोड़ें।

लग्न सारणी (1-अ)

सम्पतिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश 8° उत्तर	अक्षांश 11° उत्तर	अक्षांश 14° उत्तर	अक्षांश 17° उत्तर	अक्षांश 20° उत्तर
घ० मि०	दशम अ०क०	लग्न अ०क०	लग्न अ०क०	लग्न अ०क०	लग्न अ०क०	लग्न अ०क०
0.0	00.00	93.12	94.25	95.40	96.56	98.14
0.30	8.10	100.3	101.15	102.27	103.41	104.57
1.0	16.17	106.54	108.54	109.13	110.24	111.36
1.30	24.18	113.47	114.53	115.59	117.6	118.14
2.0	32.11	120.43	121.45	122.47	123.50	124.52
2.30	39.55	127.45	128.43	129.40	130.36	131.33
3.0	47.28	134.54	135.45	136.36	137.27	138.18
3.30	54.51	142.10	142.55	143.39	144.22	145.6
4.0	62.5	149.33	150.10	150.46	151.23	151.58
4.30	69.12	157.3	157.31	158.0	158.27	158.55
5.0	76.11	164.38	164.58	165.17	165.36	165.54
5.30	83.7	172.18	172.28	172.38	172.47	172.57
6.0	90.0	180.0	180.0	180.0	180.0	180.0
6.30	96.53	187.42	187.32	187.22	187.13	187.3
7.0	103.49	195.22	195.2	194.43	194.24	194.6
7.30	110.48	202.57	202.29	202.0	201.33	201.5
8.0	117.55	210.27	209.50	209.14	208.37	208.2
8.30	125.9	217.50	217.5	216.21	215.38	214.54
9.0	132.32	225.6	224.15	223.24	222.33	221.42
9.30	140.5	232.15	231.17	230.20	229.24	228.27
10.0	147.49	239.17	238.15	237.13	236.10	235.8
10.30	155.42	246.13	245.7	244.1	242.54	241.46
11.0	163.43	253.6	251.57	250.47	249.36	248.24
11.30	171.50	259.57	258.45	257.33	256.19	255.3
12.0	180.0	266.48	265.35	264.20	263.4	261.46
12.30	188.10	273.41	272.27	271.11	269.53	268.33
13.0	196.17	280.39	279.25	278.9	276.50	275.29
13.30	204.18	287.43	286.30	285.15	283.57	282.35
14.0	212.12	294.57	293.46	292.33	291.16	289.55

लग्न सारणी (1-ब)

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश 8° उत्तर	अक्षांश 11° उत्तर	अक्षांश 14° उत्तर	अक्षांश 17° उत्तर	अक्षांश 20 उत्तर
घं॰ मि॰	दशम अ॰ क॰	लग्न अ॰ क॰	लग्न अ॰ क॰	लग्न अ॰ क॰	लग्न अ॰ क॰	लग्न अ॰ क॰
14.30	219.55	302.21	301.14	300.4	298.50	297.32
15.0	227.28	309.58	308.56	307.51	306.42	305.28
15.30	234.51	317.49	316.54	315.55	314.53	313.45
16.0	242.5	325.54	325.7	324.17	323.23	322.25
16.30	249.12	334.12	333·35	332.55	332.12	331·26
17.0	256.11	342.41	342.15	341.48	341.18	340.45
17.30	263.7	351.18	351.5	350.51	350.36	350.19
18.0	270.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
18.30	276.53	8.41	8.55	9.9	9.24	9.41
19.0	283.49	17.19	17.45	18.12	18.42	19.15
19.30	290.48	25.48	26.25	27.5	27.48	28.34
20.0	297.55	34.6	34.53	35.43	36.37	37.35
20.30	305.9	42.11	43.6	44.5	45.7	46.14
21.0	312.32	50.2	51.4	52.9	53.18	54.32
21.30	320.5	57.39	58.46	59.56	61.10	62.28
22.0	327.49	65.3	66.14	67.27	68.44	70.5
22.30	335.42	72.17	73.30	74.45	76.3	77.25
23.0	343.43	79.21	80.35	81.51	83.10	84.31
23.30	351.50	86.19	87.33	88·49	90.7	91.27
24.0	0.0	93.12	94.25	95.46	96.56	98.14

लग्न सारणी (2-अ)

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश 23° उत्तर	अक्षांश 26° उत्तर	अक्षांश 29° उत्तर	अक्षांश 32° उत्तर	अक्षांश 36° उत्तर
घं०मि०	दशम अं०क०	लग्न अं०क०	लग्न अं०क०	लग्न अं०क०	लग्न अं०क०	लग्न अं०क०
0.0	0.0	99.35	100.59	102.26	103.75	105.34
0.30	8.10	106.14	107.34	108.57	110.24	111.53
1.0	16.17	112.49	114.4	115.22	116.43	118.7
1.30	24.18	119.22	120.33	121.45	123.0	124.17
2.0	32.11	125.56	127.0	128.7	129.16	130.25
2.30	39.55	132.31	133.29	134.29	135.30	136.32
3.0	47.28	139.9	140.0	140.52	141.45	142.40
3.30	54.51	145.50	146.34	147.18	148.4	148.50
4.0	62.5	152.34	153.10	153.47	154.24	155.1
4.30	69.12	159.22	159.50	160.17	160.46	161.14
5.0	76.11	166.13	166.32	166.50	167.9	167.28
5.30	83.7	173.6	173.15	173.25	173.34	173.44
6.0	90.0	180.0	180.0	180.0	180.0	180.0
6.30	96.53	186.54	186.45	186.35	186.26	186.16
7.0	103.49	193.47	193.28	193.10	192.51	192.32
7.30	110.48	200.38	200.10	199.43	199.14	198.46
8.0	117.55	207.26	206.50	206.13	205.36	204.59
8.30	125.9	214.10	213.26	202.42	211.56	211.10
9.0	132.32	220.51	220.0	219.8	218.15	217.20
9.30	140.5	227.29	226.31	225.31	224.30	223.28
10.0	147.49	234.4	233.0	231.53	230.45	229.35
10.30	155.42	240.38	239.27	238.15	237.0	235.43
11.0	163.43	247.11	245.56	244.38	243.17	241.53
11.30	171.50	253.46	252.26	251.3	249.36	248.7
12.0	180.0	260.15	259.1	257.34	256.3	254.26
12.30	188.10	267.10	265.43	264.12	262.36	260.54
13.0	196.17	274.3	272.34	271.10	269.21	267.33
13.30	204.18	281.9	279.39	278.2	276.19	274.29

लग्न सारणी (2-ब)

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश 23° उत्तर	अक्षांश 26° उत्तर	अक्षांश 29° उत्तर	अक्षांश 32° उत्तर	अक्षांश 35° उत्तर
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं० मि०	अ०क०	अ०क०	अ०क०	अ०क०	अ०क०	अ०क०
14.0	212.11	288.30	286.59	285.22	283.36	281.45
14.30	219.55	296.9	294.40	293.4	291.20	289.26
15.0	227.28	304.10	302.44	301.12	299.28	297.38
15.30	234.51	312.33	311.15	309.48	308.13	306.25
16.0	242.5	321.22	320.13	318.56	317.30	315.54
16.30	249.12	330.35	329.39	328.36	327.25	326.4
17.0	256.11	340.9	339.30	338.45	337.54	336.55
17.30	263.7	350.0	349.40	349.16	348.49	348.19
18.0	270.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
18.30	276.53	10.0	10.20	10.44	11.11	11.41
19.0	283.49	19.51	20.30	21.15	22.6	23.4
19.30	290.48	29.25	30.21	31.24	32.35	33.56
20.0	297.55	38.38	39.47	41.4	42.30	44.6
20.30	305.9	47.27	48.45	50.12	51.47	53.35
21.0	312.32	55.50	57.16	58.48	60.32	62.22
21.30	320.5	63.51	65.20	66.56	68.40	70.34
22.0	327.49	71.30	73.1	74.38	76.24	78.15
22.30	335.42	78.51	80.21	81.58	83.41	85.31
23.0	343.43	85.56	87.26	89.0	90.39	92.26
23.30	351.50	92.50	94.17	95.48	97.24	99.6
24.0	0.0	99.35	100.59	102.26	103.57	105.34

अयनांश सारणी (अ)

सन्	अयनांश	सन्	अयनांश
1936	22.57.47	1969	23.25.26
1937	22.58.37	1970	23.26.16
1938	22.59.28	1971	23.27.6
1939	23.0.18	1972	23.27.57
1940	23.1.8	1973	23.28.47
1941	23.1.58	1974	23.29.37
1942	23.2.49	1975	23.30.27
1943	23.3.39	1976	23.31.18
1944	23.4.29	1977	23.32.8
1945	23.5.19	1978	23.32.58
1946	23.6.10	1979	23.33.48
1947	23.7.0	1980	23.34.39
1948	23.7.50	1981	23.35.29
1949	23.8.41	1982	23.36.19
1950	23.9.31	1983	23.37.9

1951	23.10.21	1984	23.38.0
1952	23.11.11	1985	23.38.50
1953	23.12.2	1986	23.39.40
1954	23.12.52	1987	23.40.30
1955	23.13.42	1988	23.41.20
1956	23.14.32	1989	23.42.11
1957	23.15.23	1990	23.43.1
1958	23.16.13	1991	23.43.51
1959	23.17.3	1992	23.44.41
1960	23.17.53	1993	23.45.31
1961	23.18.44	1994	23.46.21
1962	23.19.34	1995	23.47.11
1963	23.20.24	1996	23.48.2
1964	23.20.15	1997	23.48.52
1965	23.22.5	1998	23.49.42
1966	23.22.55	1999	23.50.32
1967	23.23.45	2000	23.51.23
1968	23.24.36		

अयनांश सारणी (ब)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
1	0 वि०	4 वि०	8 विकला	13 वि०	17 वि०	21 वि०
3	1 ,,	5 ,,	9 ,,	13 ,,	17 ,,	21 ,,
5	1 ,,	5 ,,	9 ,,	13 ,,	17 ,,	21 ,,
7	1 ,,	5 ,,	9 ,,	13 ,,	17 ,,	22 ,,
9	1 ,,	5 ,,	9 ,,	14 ,,	18 ,,	22 ,,
11	2 ,,	6 ,,	10 ,,	14 ,,	18 ,,	22 ,,
13	2 ,,	6 ,,	10 ,,	14 ,,	18 ,,	23 ,,
15	2 ,,	6 ,,	10 ,,	15 ,,	18 ,,	23 ,,
17	2 ,,	6 ,,	10 ,,	15 ,,	19 ,,	23 ,,
19	3 ,,	7 ,,	11 ,,	15 ,,	19 ,,	23 ,,
21	3 ,,	7 ,,		15 ,,	19 ,,	23 ,,
23	3 ,,	7 ,,		15 ,,	20 ,,	24 ,,
25	3 ,,	8 ,,		16 ,,	20 ,,	24 ,,
27	3 ,,	8 ,,		16 ,,	20 ,,	24 ,,
29	4 ,,	8 ,,		16 ,,	20 ,,	25 ,,

तारीख	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
1	25 वि	29 वि	34 वि	38 वि	42 वि	46 वि
3	25 ,,	29 ,,	34 ,,	38 ,,	42 ,,	46 ,,
5	25 ,,	30 ,,	34 ,,	38 ,,	42 ,,	47 ,,
7	26 ,,	30 ,,	34 ,,	39 ,,	43 ,,	47 ,,
9	26 ,,	31 ,,	35 ,,	39 ,,	43 ,,	47 ,,
11	26 ,,	31 ,,	35 ,,	39 ,,	43 ,,	47 ,,
13	27 ,,	31 ,,	35 ,,	39 ,,	44 ,,	48 ,,
15	27 ,,	31 ,,	35 ,,	40 ,,	44 ,,	48 ,,
17	27 ,,	31 ,,	36 ,,	40 ,,	44 ,,	48 ,,
19	28 ,,	32 ,,	36 ,,	40 ,,	44 ,,	49 ,,
21	28 ,,	32 ,,	36 ,,	41 ,,	45 ,,	49 ,,
23	28 ,,	32 ,,	36 ,,	41 ,,	45 ,,	49 ,,
25	28 ,,	33 ,,	37 ,,	41 ,,	45 ,,	49 ,,
27	28 ,,	33 ,,	37 ,,	41 ,,	45 ,,	50 ,,
29	29 ,,	33 ,,	37 ,,	41 ,,	46 ,,	50 ,,

जन्मपत्र लेखन-विधि

प्राय: ज्योतिषी बाजार से छपी-छपाईं जन्मपत्रिकाएं ले आते हैं। इनमें अलग से कुछ नहीं करना पड़ता। मात्र गणितीय फल और फलित लिखना पड़ता है। इन छपी जन्मपत्रिकाओं के कारण समय की वचत तो हुई है इसमें तो सन्देह नहीं है, किन्तु जो कलात्मकता प्राचीन पत्रिकाओं के माध्यम से देखने को मिलती थी वह लुप्त होती जा रही है। वैसे भी व्यक्ति कलाप्रेमी न रह कर व्यवसायी हो गया है। बाजार में एफैमरीज सुलभ हैं, पंचांगों में सारणियां दी रहती हैं, जिनसे घण्टों का काम मिनटों में हो जाता है। आप भी भले ही छपी पत्रिका लेकर प्रयोग करें, किन्तु परम्परागत और भारतीय विधि से जन्मपत्रिका लिखने से परिचित होना बुरा नहीं है।

प्रारम्भ में कुछ मांगलिक श्लोक लिखे जाते हैं—

स जयति सिंधुरवदनो देवो यत्पाद पंकज स्मरणम्।
वासिर मणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्॥
भवभीतिहरां चतुर्भुजां सकलार्थ प्रतिपत्तिदायिनीम्।
निजभक्त जनैक पालिकां वरदात्रिम प्रणयामि कालिकाम्॥
आदित्यादि ग्रहा: सर्वे नक्षत्राणि च राशय:।
आयु कुर्वन्तु ते नित्यं यस्यैषा जन्मपत्रिका॥
एकदन्तो महाबुद्धि: सर्वज्ञो गणनायक:।
सर्व सिद्ध करो देवो गौरीपुत्रो विनायक:॥
पूषां पुष्टि दिशतु सततं संतति शीतरोचिभौं मो।
भाग्यं सितकर सुत: शान्ति मांगल्यनित्यम्॥
जीवो राज्यं चिरसुभगत: भार्गवो भूमि पात्रं।
राहु: सोख्यं शिखिन इति ते कीर्तिमभ्रं लिहां च॥

ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा राज्यं हरन्ति च।
ग्रहैर्व्याप्त मिदं सर्वं त्रिलोक्यम् सचराचरम्॥
ब्रह्मा करोतु दीर्घायु विष्णु: कुर्याच्च सम्पदाम्।
हरो रक्षतु गात्राणि यस्यैषा जन्मपत्रिका॥
दिवा रक्षतु वै सूर्य: रात्रौ रक्षतु चन्द्रमा।
उभयो: सन्ध्यायोर्विष्णु: यस्यैषा जन्मपत्रिका॥
श्री जन्मपत्रो शुभदीपकेन व्यक्तं भवेद्भाविफलं समग्रम्।
क्षमा प्रदीपेन यथा ग्रहस्थं घटादि जातं प्रकटत्वमेति॥
कृतं मया नोदकयत्रं साधनं न मेक्षणं चापिन् शंकुधारणम्।
परोपदेशात् समयाव बोधकम् विलिख्यते जन्म फलं नाराणम्॥
जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धिनी कुल सम्पदाम्।
पदवी पूर्व पुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका॥

॥ॐ॥ श्री गणेशाय नम:॥ अथ शुभ सवंत्सरेअस्मिन् श्री नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् संवत् 2035 शाके 1900 प्रवर्त्तमाने उत्तरायनगते श्री सूर्य उत्तर गोलावलम्बिते। श्री गगन चक्र चूडामणौ ग्रीष्मऋतौ मासोत्तमे महामांगल्यप्रदे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी शुभ तिथौ बुधवार वासरे 27 घ० 55 पलानि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे 49 घ० 10 पलानि परं हस्त जन्म नक्षत्रे सिद्ध योगे परं व्यतिपात जन्म योगे तात्कालिके कौलव करणम् 16 घ० 45 पलानि। तद्दिने दिनमानम् 24 घ० 32 पलानि, रात्रिमानम् 25 घ० 28 पलानि अहोरात्रयोरैक्यम् 60 घ० 0 पलानि मिथुनदर्कात्गतांशादि।

अंश कला विकला। सूर्योदयादिष्टम् 49 घ०

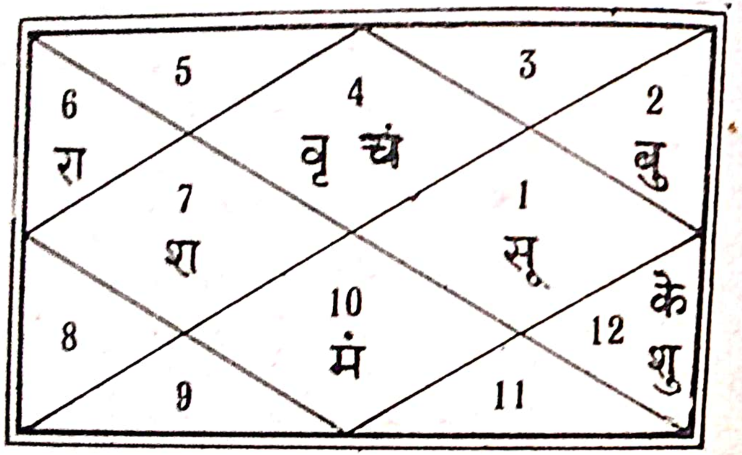
दिल्ली जन्म स्थाने मीन लग्नोदये ब्राह्मण वंशे कौशिक गोत्रे श्रीमान् पंडित वेदमूर्ति बुद्धदेव शर्मा जी तस्यात्मजस्य श्रीमत: पंडित ओमप्रकाश जी शर्मा गृहे सुलक्षणं भार्या सौभाग्यवती कृष्णा शर्मा दक्षिण कुक्षौ पुत्ररत्न जन्म तदभिधानं मार्तण्ड पंचांग होरा शास्त्रानुसारेण हस्त जन्म नक्षत्रे प्रथम चरणे पू इत्यक्षरात् जन्मनाम श्री पूर्णचन्द्र शर्मा जी प्रसिद्ध नामतु श्री प्रमोद कुमाद शर्मा जी तस्य राशि, कन्या, स्वामी बुध, वर्ण वैश्य, वर्ग-

मूषक, योनिः महिष, गणः देव, वश्य मानव, नाड़ी आद्या इत्यादि सर्वंम् विवाहे व्यापारं च चिन्तनीयम् । शुभम् ॥

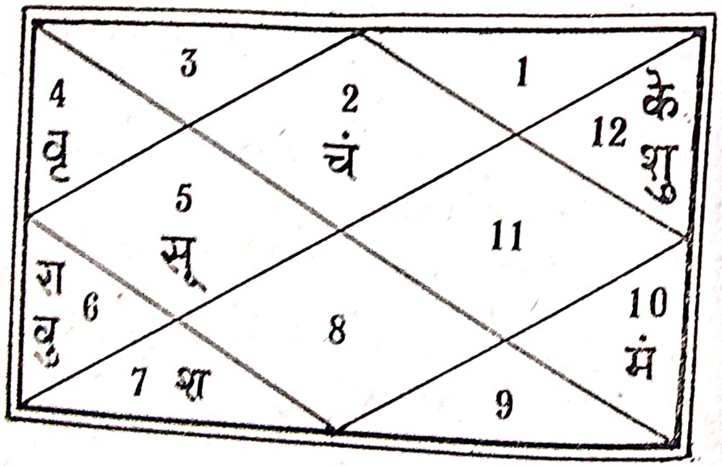
अथ धातादयः भाद्रपद मासे 5/10/15 तिथयः शनिवार, वासरे श्रवण नक्षत्रे, शुक्ल योगः कौलव करणम्, प्रथमप्रहर, मिथुन राशि चन्द्रमाः

॥इतिश्री, शुभम् भवतु, कल्याणमस्तु ॥

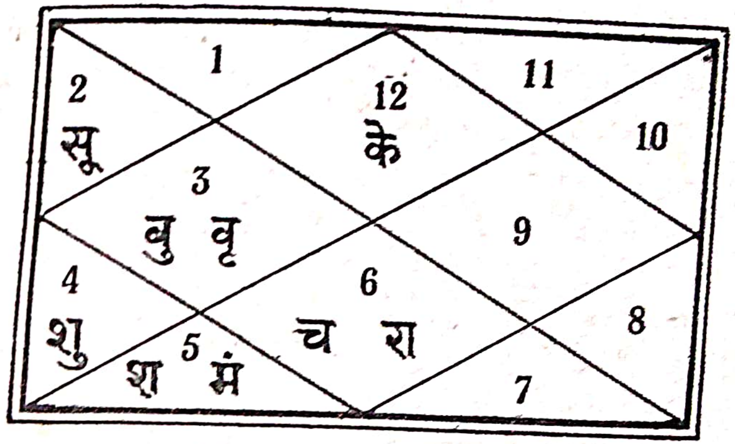
श्रीराम जन्मांगम्



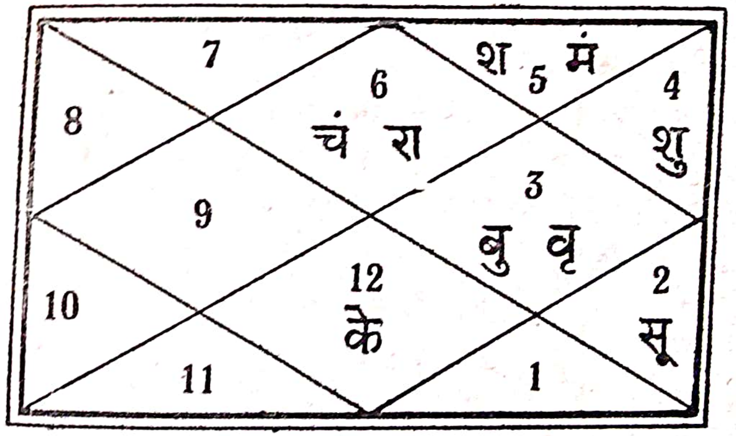
श्रीकृष्ण जन्मांगम्



जन्मांगम्



चन्द्र कुण्डली



इस प्रकार कुण्डली बनाकर, ग्रह स्पष्ट एवं भाव स्पष्ट किए जाते हैं। ग्रह स्पष्ट एवं भाव स्पष्ट करने के पश्चात् ही चलित चक्र बनाया जाता है। चलित चक्र बनाने की दो विधियां हैं। आगे के पृष्ठों में उनका विवेचन किया जाएगा।

दशम साधनविधि

ग्रहों की सही स्थिति किस भाव में है, इसके लिए भाव स्पष्ट किए जाते हैं। भाव स्पष्ट करने के लिए दशम भाव या दशम लग्न स्पष्ट करना अनिवार्य होता है। लग्न साधन करने के पश्चात् उसी प्रकार दशम साधन करते हैं जिस प्रकार से लग्न स्पष्ट किया था। दशम भाव स्पष्ट करने से बाकी के भाव सरलता से स्पष्ट किए जा सकते हैं।

दशम लग्न स्पष्ट करने के लिए इष्टकाल के नत और उन्नत बना कर उन घड़ियों के पल बना लेते हैं। तात्कालिक सूर्य (सायन सूर्य) के भोग्यांश या मुक्तांश लेकर सायन सूर्य की राशि के लंकोदय पलों से गुणा करके 30 का भाग दें तो भोग्यांश या मुक्तांश निकल आते हैं।

भोग्यांशों से दशम लग्न स्पष्ट करनी हो तो नत के पलों में से भोग्य पलों को घटाकर आगे की राशियों का लंकोदय घटाते रहना है। जो राशि न घटे वह अशुद्ध संज्ञक राशि कही जाएगी।

मुक्तांशों से दशम साधन करना हो तो नत पल में से मुक्तांश घटा कर बाकी राशियों के लंकोदय मानों को विपरीत क्रम से घटाते जाना है जैसा लग्न साधन में किया था।

इस प्रकार अशुद्ध संज्ञक राशि के पलों को नत से घटाने में जो शेष बचे उसे 30 से गुणा करके अशुद्ध राशि के लंकोदय से भाग देने पर उत्तर अंश-कला-विकला होगा। भोग्यरीति से करने पर उसी राशि का दशम लग्न होगा, किन्तु मुक्त रीति से गणित करने पर अशुद्ध संज्ञक राशि अंक से घटाने पर सायन दशम होगा और अयनांश घटाने पर निरयन दशम स्पष्ट होगा।

दशम भाव साधन में राशियों के लंकोदय पलों का उपयोग होता है स्वदेशीय लंकोदय पलों का नहीं।

नत—मध्याह्न रेखा से इष्ट का जो अन्तर होता है उसे नत (Meridian Distance) कहते हैं। नत दो प्रकार का है पूर्वनत और पश्चिम नत। मध्याह्न से पहले नत को पूर्वनत और मध्याह्न से पश्चात् के नत को

पश्चिम नत कहते हैं या अर्द्धरात्रि से मध्याह्न तक इष्टकाल हो तो पूर्वनत होता है और मध्याह्न से अर्द्धरात्रि तक का इष्टकाल हो तो पश्चिम नत होता है।

इसे स्पष्ट रूप से समझने के लिए एक गोल चक्कर खींच लें। इसको चार भागों में बांट लें। ऊपर वाला बिन्दु मध्याह्न है, इसे ही दशम स्थान कहते हैं। उसके ठीक सामने वाला बिन्दु अर्द्धरात्रि सूचक या चतुर्थ स्थान है। ऊपर वाले स्थान से बाएं ओर पूर्व नत और दाहिनी ओर पश्चिम नत है। दिन और रात्रि के कारण इनके भी और भेद कर लिए जाते हैं, दिवा पूर्व नत, दिवा पश्चिम नत, रात्रि पूर्व नत, रात्रि पश्चिम नत।

दिवा पूर्व नत—दिन में मध्याह्न काल से पहले और सूर्योदय के पश्चात् का जो इष्टकाल है वह पूर्वनत होता है। दिनार्द्ध में से इष्टकाल को घटा देने से शेष इष्टकाल से मध्याह्न की दूरी निकल आएगी। यही दिवा पूर्व नत है।

दिवा पश्चिम नत—मध्याह्न से लेकर सूर्यास्त के बीच का इष्टकाल होने से इष्टकाल में से दिनार्द्ध घटा देने से दिवा पश्चिम नत होता है।

रात्रि पश्चिम नत—सूर्यास्त के पश्चात् और अर्द्धरात्रि के बीच का इष्टकाल होने से इष्ट में से दिनार्द्ध घटा देने से रात्रि पश्चिम नत होता है।

रात्रि पूर्व नत—अर्द्धरात्रि के और सूर्योदय के बीच का इष्टकाल होने से दिनार्द्ध में रात्रि की शेष घटियां मिला देने से रात्रि पूर्व नत होता है।

उन्नत—30 घटी में से नत घटा दें तो उन्नत होता है। मध्याह्न और अर्द्धरात्रि में 30 घटी का अंतर होता है। मध्याह्न में दशम का स्थान है तो अर्द्धरात्रि में चतुर्थ का स्थान है। मध्याह्न से अर्द्धरात्रि की दूरी को नत और अर्द्धरात्रि से इष्ट की दूरी को उन्नत कहते हैं।

पीछे हमने एक बच्चे का उदाहरण लिया है। उसमें दिनमान 34.32 और इष्टकाल 49.30 है इसका दशम साधन करते हैं।

दिनमान का आधा किया $\frac{34.32}{2}$ = 17.16 दिनार्द्ध

60—49.30=10.30 रात्रि की शेष घटियां

दिनार्द्ध+रात्रि की शेष घटियां=पूर्व नत रात्रि

17.16+10.30=27.46 पूर्व नत

घ० प

27.49

×60 = 1669 नत पल

मिथुन सूर्य के भुक्तांश 22. 23. 47

मिथुन के लंकोदय से गुणा किया × 322

7211.37.34

30 से भाग दिया—

```
        249
30)7211. 38. 34
    60
    121
    120
     11
    ×60
    660
    +38
    698
```

```
        23
30)  698
     60
      98
      90
       8
     ×60
     480
     +34
```



```
30) 514 (17
    30
    214
    210
      4
```

240.23.17

मिथुन के मुक्त पलादि

नतपल = 1666.0 .0

ऋण किए मिथुन के भुक्त पल — 240.23.17

1425.36.43

ऋण किए वृष के लंकोदय — 299. 0. 0

1126 36.43

ऋण किए मेष के लंकोदय — 279. 0. 0

847.36.43

ऋण किए मीन के लंकोदय — 279. 0. 0

568.36. 43

ऋण किए कुम्भ के लंकोदय — 299. 0. 0

269.36.43

ऋण किए मकर के लंकोदय — 322.0 .0 नहीं घट सकते

अत: मकर अशुद्ध संज्ञक राशि हुई।

अशुद्ध संज्ञक राशि मकर के भुक्त पलादि 269.36.43

30 से गुणा किया × 30

808?.21.30

अशुद्ध संज्ञक मकर के लंकोदय से भाग दिया

```
       25
322)8088.21.30
    644
    1648
    1610
      38
     ×60
    2280
     +21
```

60 — 49.30 = 10.30 रात्रि की शेष घटियां

दिनार्द्ध + रात्रि की शेष घटियां = पूर्व नत रात्रि

17.16 + 10.30 = 27.46 पूर्व नत

घ० प

27.49

× 60 = 1669 नत पल

मिथुन सूर्य के भुक्तांश 22. 23. 47

मिथुन के लंकोदय से गुणा किया × 322

7211.37.34

30 से भाग दिया—

```
      249
30)7211. 38. 34
   60
   121
   120
    11
   ×60
   660
   +38
   698
```

```
        23
30)  698
     60
     98
     90
      8
    ×60
    480
    +34
```



```
30) 514 (17
    30
    214
    210
      4
```

240.23.17

मिथुन के भुक्त पलादि

नतपल	=	1666.0 .0
ऋण किए मिथुन के भुक्त पल	—	240.23.17
		1425.36.43
ऋण किए वृष के लंकोदय	—	299. 0. 0
		1126 36.43
ऋण किए मेष के लंकोदय	—	279. 0. 0
		847.36.43
ऋण किए मीन के लंकोदय	—	279. 0. 0
		568.36. 43
ऋण किए कुम्भ के लंकोदय	—	299. 0. 0
		269.36.43
ऋण किए मकर के लंकोदय	—	322.0 .0 नहीं घट सकते

अतः मकर अशुद्ध संज्ञक राशि हुई।

अशुद्ध संज्ञक राशि मकर के भुक्त पलादि 269.36.43

30 से गुणा किया × 30

8088.21.30

अशुद्ध संज्ञक मकर के लंकोदय से भाग दिया

```
       25
322)8088.21.30
     644
     1648
     1610
       38
      ×60
     2280
      +21
```

322) 2301 (7
2254
47
×60
2820
+30
322) 2850 (9
2576
274

25.7.9. मकर के सूक्ष्म अंशादि हैं। इन्हें मकर राशि के अंक 10 से घटाया

	10 .0	.0	.0	
	0 .25	.7	.9	
	9 .4	.52	51	सायन दशम लग्न
—	23	.32	.24	अयनांश कम किया
	8 .11	.20	.27	निरयन दशम लग्न

उदाहरण कुण्डली की दशम लग्न = धनु के 11 अंश 20 कला 27 विकला

लग्न सारणी से दशम स्पष्ट करना

दशम लग्न सारणी से दशम लग्न स्पष्ट करना हो तो इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य के राशि अंकों के नीचे मिले घटी पलों को दशम के इष्टकाल में जोड़ देने से इन्हें पुनः सारणी में देखो तो लगभग वही दशम लग्न होगा।

उदाहरण में इष्टकालिक सूर्य	1. 29.
सारणी में अंक मिले	9. 28.2
दशम इष्टकाल जोड़ा	+32.13.13
	41.41.15

इष्टकाल—दिनार्द्ध = दशम इष्ट काल
49 29.13—17.16 = 32.13.13

इसे पुनः सारणी में देखा तो वह संख्या तो नहीं मिली 41/46 मिली इसका फल मिला 8.12.41.46 यही दशम भाव है

यह सब न कर के भी सीधे लग्न से ही दशम लग्न निकालने की सारणी आगे दी जा रही है। इसमें लग्न अंकों (राशि-अंश) से दशम लग्न निकाला जा सकता है। उदाहरण लग्न है 11.15 सारणी में देखा तो अंक मिले 8.13.40.12। आगे दोनों सारणियां दी जा रही हैं।

दशम लग्न सारणी

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	2	2	2
मेष	0	9	18	27	37	46	55	5	14	23	33	42	51	0	10	19
0	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30
	4	4	4	5	5	5	5	5	5	6	6	6	6	6	6	7
वृष	39	48	58	8	18	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8
1	0	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30
	9	9	9	10	10	10	10	10	11	11	11	11	11	11	12	12
मिथुन	38	48	59	10	20	31	42	53	3	14	25	36	46	57	8	19
2	0	44	28	12	56	40	28	8	52	36	20	4	38	32	16	0
	15	15	15	15	15	15	16	16	16	16	16	16	17	17	17	17
कर्क	0	10	21	32	42	53	4	15	25	36	47	58	8	19	30	41
3	0	44	28	12	56	40	24	8	52	36	20	4	48	32	16	0
	20	20	20	20	21	21	21	21	21	21	22	22	22	22	22	22
सिंह	22	31	41	51	1	11	21	31	41	51	1	11	21	31	4	51
4	0	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30
	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27
कन्या	21	30	39	48	58	7	16	26	35	44	54	3	12	21	31	40
5	0	18	36	54	12	30	48	4	24	42	0	18	36	54	12	30

अंश	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
मेष 0	2	2	2	2	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4
	28	38	47	56	6	15	24	33	43	52	1	11	20	29
	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42
वृष 1	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9
	18	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8	18	28
	28	26	24	22	20	18	16	14	12	10	8	6	4	2
मिथुन 2	12	12	12	13	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14
	29	40	51	1	12	23	34	44	55	6	17	27	39	49
	44	28	12	56	40	24	8	52	36	20	4	48	36	16
कर्क 3	17	18	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20
	51	2	13	23	34	45	56	6	17	28	39	49	0	11
	44	28	12	56	40	24	8	52	36	20	4	48	32	16
सिंह 5	23	23	23	23	23	23	24	24	24	24	24	24	25	25
	1	11	21	31	41	51	1	11	21	31	41	51	1	11
	28	26	24	22	20	18	16	14	12	10	8	6	4	2
कन्या 6	27	27	28	28	28	28	28	28	29	29	29	29	29	29
	49	59	8	17	27	36	45	54	4	13	22	32	41	50
	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30	48	6	24	43

दशम लग्न सारणी

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
तुला 6	30	30	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	31	32	32	32
	0	9	18	28	37	46	55	5	14	23	33	42	51	0	10	19
	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30
वृश्चिक 7	34	34	34	35	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	36	37
	39	48	58	8	18	28	38	48	58	8	18	28	38	48	58	8
	0	58	56	54	52	50	48	46	44	40	42	38	36	34	32	30
धनु 8	39	39	39	40	40	40	40	40	41	41	41	41	41	41	42	42
	38	48	59	10	20	31	42	53	3	14	25	36	46	57	8	19
	0	44	28	12	56	40	24	8	52	36	20	4	48	32	16	0
मकर 9	45	45	45	45	45	45	46	46	46	46	46	46	47	47	47	47
	0	10	21	32	42	53	4	15	25	36	47	58	8	19	30	41
	0	44	28	12	56	40	24	8	52	36	20	4	48	32	16	0
कुम्भ 10	50	50	50	50	51	51	51	51	51	51	52	52	52	52	52	52
	12	31	41	51	1	11	21	31	41	51	1	11	21	31	41	51
	0	58	56	54	52	50	48	46	44	42	40	38	36	34	32	30
मीन 11	55	55	55	55	55	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57
	21	30	39	48	58	7	16	26	35	44	54	3	12	21	31	40
	0	18	36	54	12	30	48	6	24	42	0	18	36	54	12	30

अंश	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
तुला 6	32 28 48	32 38 6	32 47 24	32 56 42	33 6 0	33 15 18	33 24 36	33 33 54	33 43 12	33 52 30	34 1 48	34 11 6	34 20 24	34 29 42
वृश्चिक 7	37 18 28	37 28 26	37 38 24	37 48 22	37 58 20	38 8 18	38 18 16	38 28 14	38 38 12	38 48 10	38 58 8	39 8 6	39 18 4	39 28 2
धनु 8	42 29 44	42 40 28	42 51 12	43 1 56	43 12 40	43 23 24	43 34 8	43 44 52	43 55 36	44 6 20	44 17 4	44 27 48	44 38 32	44 49 16
मकर 9	47 51 44	48 2 28	48 13 12	48 23 56	48 34 40	48 45 24	48 56 8	49 6 52	49 17 36	49 28 20	49 39 4	49 49 48	50 0 32	50 11 16
कुम्भ 10	53 1 28	53 11 26	53 21 24	53 31 22	53 41 20	53 51 18	54 1 16	54 11 14	54 21 12	54 31 10	54 41 8	54 51 6	55 1 4	55 11 2
मीन 11	57 49 48	57 59 6	58 8 24	58 17 42	58 27 0	58 36 18	58 45 36	58 54 54	59 4 12	59 13 0	59 22 48	59 32 6	59 41 24	59 50 42

लग्न से दशम लग्न साधन सारणी

अंश →	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
मेष 0	8 23 56 26	8 24 37 56	8 25 18 26	8 25 59 38	8 26 40 43	8 27 21 42	8 28 2 47	8 28 43 22	8 29 24 27	9 0 5 52	9 0 40 11	9 1 28 59	9 2 15 26	9 3 5 3	9 3 46 38	9 4 36 49
वृष 1	9 16 43 39	9 17 23 21	9 18 29 6	9 19 19 24	9 20 10 41	9 21 1 24	9 21 52 6	9 22 43 54	9 23 33 44	9 24 24 30	9 25 18 18	9 26 6 2	9 27 8 54	9 28 9 54	9 29 10 54	10 0 11 54
मिथुन 2	10 15 46 48	10 16 52 42	10 17 57 58	10 19 3 2	10 20 9 27	10 21 15 3	10 22 20 38	10 23 29 13	10 24 31 51	10 25 27 24	10 26 41 20	10 27 51 23	10 29 5 12	11 0 9 8	11 1 32 53	11 2 46 27

अंश →	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9
मेष	5	6	6	7	8	9	10	11	11	12	13	14	15	15
0	23	10	57	44	31	18	5	7	42	32	24	24	6	56
	10	46	46	48	40	51	1	14	50	43	48	50	1	48
	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10
वृष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	12	13	13	15	16	17	18	18	20	21	24	23	35	47
	54	54	54	54	54	54	54	54	54	54	34	30	40	17
	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11
मिथुन	4	5	6	7	8	10	11	12	13	15	16	17	18	20
2	0	14	28	41	55	9	23	37	51	4	18	31	46	0
	38	24	10	55	55	40	29	17	2	57	42	27	21	13

अंश →	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
	11	11	11	11	11	11	11	11	0	0	0	0	0	0	0	0
कर्क	21	22	23	24	26	27	28	29	1	2	3	4	6	7	8	9
3	14	17	41	55	9	23	36	50	4	18	32	47	2	19	33	45
																42
सिंह	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
4	27	28	29	0	1	2	4	5	6	7	8	9	10	12	13	14
	9	18	57	37	46	55	4	14	23	32	22	6	20	35	44	37
	25	29	52	6	19	33	48	2	16	30	54	32	5	8	12	12
कन्या	1	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2
5	29	0	1	2	3	4	5	6	7	8	10	11	12	13	14	15
	38	41	43	45	47	50	2	54	59	59	1	3	5	7	10	12
	2	8	10	12	1	0	5	8	3	7	13	21	35	52	8	1

अंश→	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
कर्क	11	12	13	14	15	16	17	19	20	21	21	23	24	26
3	0	9	18	27	37	46	55	4	14	23	32	41	50	0
	13	35	39	52	6	9	35	48	12	16	29	43	56	12
सिंह	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
4	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
	44	10	12	14	16	18	37	30	32	34	36	38	40	52
	19	20	55	4	8	9	10	15	55	7	2	5	8	1
कन्या	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2
5	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
	14	16	14	21	21	29	27	30	32	35	37	40	42	43
	0	7	14	22	30	32	1	5	8	9	7	25	50	59

लग्न सारणी

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3
तुला	0	1	2	3	4	5	6	8	9	10	11	12	13	14	15	16
6	45	4	50	52	54	59	59	1	2	5	8	15	23	34	42	50
	7	5	60	13	15	19	22	2	5	14	38	55	17	12	3	0
	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
वृश्चिक	4	5	6	7	8	9	11	12	13	14	16	17	18	19	20	22
7	10	19	29	38	43	53	3	20	35	49	4	16	30	44	58	2
	7	5	3	2	0	1	5	13	25	35	45	8	3	10	1	2
	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
धनु	10	11	13	14	15	16	18	19	20	21	22	24	25	26	27	28
8	39	53	6	20	34	49	2	15	29	43	57	11	14	19	27	30
	14	1	5	3	15	22	11	3	29	10	15	25	48	37	37	37

अंश	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4
तुला	18	19	20	21	22	23	24	26	27	28	29	0	1	3
6	1	10	54	28	38	48	56	9	15	24	33	42	52	1
	1	8	15	22	8	9	35	42	56	2	8	5	3	7
	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	5
वृश्चिक	23	24	25	27	28	29	0	2	3	4	5	6	8	9
7	25	38	55	7	19	34	48	2	16	30	43	53	11	25
	5	3	57	12	25	18	21	7	4	5	3	1	15	0
	5	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6
धनु	29	0	1	2	3	5	6	7	8	9	10	11	12	13
8	30	42	47	53	58	4	10	15	21	26	32	34	36	40
	43	3	4	5	3	15	12	20	30	5	8	3	45	0

अंश	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6
मकर	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
9	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	52	10	1
	1	2	5	2	1	0	3	1	50	22	11	8	15	3	32	—
	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
कुम्भ	11	12	13	14	14	15	16	17	18	18	19	20	21	21	22	23
10	40	5	22	9	56	43	30	21	14	51	38	24	5	46	38	39
	51	32	32	33	30	22	7	5	9	10	52	8	3	15	27	37
	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8
मीन	3	4	4	5	6	6	7	8	9	9	10	10	11	12	13	13
11	24	5	49	28	9	50	32	12	3	34	15	56	27	13	59	40
	39	12	5	3	0	8	2	6	7	5	3	45	47	36	26	12

अंश	मकर 9	कुम्भ 10	मीन 11
16	7 0 1	7 24 16 49	8 14 20 42
17	7 0 53	7 24 59 59	8 15 0 35
18	7 1 43	7 25 12 1	8 15 35 1
19	7 2 33	7 25 56 2	8 16 24 2
20	7 3 24	7 26 34 3	8 17 5 8
21	7 4 15	7 27 15 6	8 17 46 5
22	7 5 6	7 27 56 8	8 18 28 7
23	7 5 56	7 28 37 10	8 19 9 3
24	7 6 46	7 29 18 12	8 19 57 53
25	7 7 38	7 29 59 5	8 20 31 59
26	7 8 29	8 0 40 0	8 21 12 1
27	7 9 20	8 1 21 15	8 21 53 5
28	7 10 10	8 2 30 16	8 22 34 3
29	7 11 7	8 2 3 4	8 23 15 4

ग्रह साधन

पंचांगों में प्रत्येक पक्ष के दो बार किसी इष्टकाल के ग्रह स्पष्ट दिए रहते हैं। उनके नीचे उनकी दैनिक गति का मान दिया रहता है। पंचांग में दिए इन्हीं ग्रहों में से अभीष्ट काल के ग्रह स्पष्ट करने को ग्रह साधन कहा जाता है। पंचांग में दिए स्पष्ट ग्रहों को पंक्ति कहेंगे। पंचांग के स्पष्ट ग्रह के समय और इष्टकाल में जो अंतर है, उस अंतर की ग्रह की गति को चालन कहेंगे।

पंचांग की पंक्ति के इष्टकाल से पहले का इष्टकाल हो तो—ऋण चालन होगा, बाद का हो तो धन चालन होगा, किन्तु कोई ग्रह वक्री हो तो पहले के इष्टकाल में धन और पश्चात के इष्टकाल में ऋण किया जाएगा।

आजकल प्रायः पंचांगों में नित्य के प्रातःकाल के ग्रह स्पष्ट दिए रहते हैं। बाजार में एफेमेरीज़ भी मिल जाती हैं। कई पंचांगकार मात्र पक्ष में दो बार ही ग्रह स्पष्ट देते हैं। हम ऊपर वाले उदाहरण पर ही ग्रह स्पष्ट करेंगे।

संवत् 2035 ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी इष्ट 49.29.13 (1.34 I. S. T) उस दिन का विश्व विजय पंचांग देखा तो ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के प्रातः 5.30 I.S.T. के ग्रह स्पष्ट निम्नांकित मिले।

ग्रह	राशि	अंश	कला	विकला	दैनिक गति
सूर्य	1	29	2	23	57.19
चन्द्र	4	29	38	36	772.10
मंगल	4	6	23	25	33.43
बुध	1	28	26	0	132.3
गुरु	2	18	22	29	13.57
शुक्र	3	3	46	24	70.51
शनि	4	2	10	13	5.15
राहु	5	8	19	29	3.11
केतु	11	8	19	29	3.11

पंक्ति का दिन बुधवार है और इष्टकाल भी बुधवार का ही है। पंक्ति के ग्रह प्रात: 5 बजकर 30 मिनट के हैं और बच्चे का जन्म रात्रि 1 बजकर 34 मिनट का है तो अन्तर आया 19 घं० 56 मि०। चूंकि इष्टकाल आगे का है और राहु एवं केतु को छोड़कर सभी मार्गी हैं, इसलिए इनमें ऋण चालन और बाकी ग्रहों में धन चालन होगा।

सूर्य स्पष्ट $= 1.29.2.23$

सूर्य की 24 घं० की गति $= 57.19$

एक घण्टे की गति $= \frac{57.19}{24} \times 19.56$

12 घं० की गति $= \frac{57.19}{2} = 28.39$

6 घं० की गति $= \frac{28.39}{2} = 14.20$

2 घं० की गति $= \frac{14.20}{3} = 4.47$

120 मि० की गति $=$ 287 विकला

4 " " $= \frac{287}{120} \times 4 = \frac{287}{30} = 10$

12 घं० + 6 घं० + 2 घं — 4 मि० = 19 घं 56 मि०

12 घं० की गति = 28.39

6 " " = 14.20

2 " " = 4.47

20 घं० की गति = 47.46

ऋण किया 4 मि० की गति —0 . 10

47.36 = 19 घं० 56 मि० की गति

सूर्य स्पष्ट में जोड़ा 1 .29 .2 .23

\+ 47 .36

1. 29.49 .59 इष्टकालिक सूर्य

चन्द्र साधन

चन्द्र गति = 0.12.52.10 (दैनिक)

12 घं० की गति = 0.6.26.5

6 घं० की गति = 0.3.13.2

2 घं० की गति = 0.1.24.21

0.11.3.28 = 20 घं की गति

पीछे हमने धन चालन सिद्ध किया था 20 घं० 4 मि०

20 घं० गति में 0.11.3.28

4 मि० की गति जोड़ी + 0. 0.2.44

0.11.6.12

= 20 घं० 4 मि० की गति

14-6-1978 को प्रात: चन्द्र स्पष्ट = 4.29.38.36

चालन जोड़ा + 0.11 .6.12

5.10.44.48

= इष्टकालिक चन्द्र

मंगल साधन

मंगल की दैनिक गति 33 कला 43 विकला

एक दिन की गति = 33.42

12 घं० की गति = 16.51

6 घं० की गति = 8.26

2 घं० की गति = 2.48

20 घं की गति = 28.05

चार मि० की गति जोड़ी + 5.36

28.10.36 = 20 घं० 4 मि० का चालन

4.6.23.25 पंक्ति का स्पष्ट मंगल
+ 0.0.28.10.36 चालन जोड़ा
4.6.51.35.36 =इष्टकालिक मंगल स्पष्ट

बुध साधन

बुध की दैनिक गति = 132 कला 3 विकला
12 घं० की गति = 66.1.30
6 ,, ,, = 33.0.45
2 ,, ,, = 11.0.15
4 मि० की गति = 0.22.0
1.50.24.30=20 घं 4 मि०की गति

पंक्ति का स्पष्ट बुध 1. 28. 26. 0. 0
इष्टकालिक चालन जोड़ा + 1. 50. 24. 30
2. 0. 16. 24. 30 =इष्टकालिक बुध

वृहस्पति साधन

वृहस्पति की दैनिक गति=13 कला 57 विकला
12 घं० की गति=6.58
6 ,, ,, =3.29
2 ,, ,, =1.10
4 मि० की गति=0. 2
11.39 =20 घं० 4 मि० का चालन

पंक्ति का वृहस्पति स्पष्ट = 2.18.22.29
चालन जोड़ा +0. 0.11.39
2.18.34.8 =इष्टकालिक वृहस्पति

शुक्र साधन

शुक्र की दैनिक गति=1 अंश 10 कला 51 विकला

12 घं० की गति=35.26
6 ,, ,, =17.43
2 ,, ,, = 5.54
4 मि० की गति= .11.48
59.14.48 =20 घ० 4 मि० का चालन

पंक्ति का स्पष्ट शुक्र 3.3.46.24.0
चालन जोड़ा 0.0.59.14.48
3.4.45.38.48 =इष्टकालिक शुक्र स्पष्ट

शनि साधन

शनि की दैनिक गति=5 कला 15 विकला
12 घं० की गति=2.37
6 ,, ,, =1.19
2 ,, ,, =0.26
4 मि० की गति=0. 1
4.23 =20 घं० 4 मि० का चालन

पंक्ति का स्पष्ट शनि=4.2.10.13
चालन जोड़ा =+0.0. 4.23
4.2.14.36 =इष्टकालिक शनि स्पष्ट

राहु साधन

राहु की दैनिक गति=3 कला 11 विकला
12 घं० की गति = 1.36
6 ,, ,, = 0.48
2 ,, ,, = 0.16
4 मि० की गति =0.0.32
2.40.32 = 20 घं० 4 मि० का चालन

पंक्ति का राहु स्पष्ट = 5.8.19.29
चालन ऋण किया —0 .0.2.40.32
(चूंकि राहु वक्र गति है) 5 .8.16.48.28 = इष्टकालिक राहु

राहु में 6 राशि जोड़ने से केतु स्पष्ट हो जाता है।

5. 8. 16. 48. 28 राहु स्पष्ट
+6. 0. 0. 0. .0 6 राशि जोड़ी
11. 8. 16. 48. 28 = केतु स्पष्ट

इस प्रकार सब ग्रहों को (इष्टकालिक) स्पष्ट करके नीचे लिखे अनुसार स्पष्ट ग्रह चक्र बनाना चाहिए।

॥अथ सूर्यादि स्पष्ट ग्रह॥

	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	1	5	4	2	2	3	4	5	11
	29	10	6	0	18	4	2	8	8
	50	44	51	16	34	45	14	16	16
	14	48	35	24	8	35	36	48	48
	32		36	30	0	48	0	28	28
दैनिक गति	57/19	772/10	33/43	132/3	13/57	70/51	5/15	3/11	3/11
								वक्री	वक्री

द्वादश भाव स्पष्ट विधि

पिछले पृष्ठों में दशम लग्न (भाव) साधन की क्रिया का ज्ञान हम प्राप्त कर चुके हैं। अब बाकी के भावों को किस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है, इस क्रिया का ज्ञान प्राप्त किया जाएगा।

ऊपर सूक्ष्म रीति से जो दशम लग्न निकाला था वह था 8. 16.19.51 दशम भाव में छः राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव स्पष्ट हो जाता है।

दशम भाव 8. 16. 19. 51
इसमें जोड़ी 6 राशि +6. 0. 0. .0
2. 16. 19. 51 = चतुर्थ भाव

अब हमें लग्न, चतुर्थ एवं दशम भाव का ज्ञान तो हो चुका है। शेष भावों को स्पष्ट करने के लिए चतुर्थ भाव में से लग्न भाव (प्रथम भाव) को घटाकर शेष को 6 पर भाग दें तो आने वाला फल षष्ठांश होगा। इस षष्ठांश को लग्न में जोड़ने से प्रथम भाव की संधि आएगी तथा पुनः इसमें (प्रथम भाव की संधि में) षष्ठांश जोड़ देने से द्वितीय भाव (धन) स्पष्ट हो जाएगा।

दूसरे भाव में षष्ठांश जोड़ने से दूसरे भाव की संधि एवं दूसरे भाव की संधि में षष्ठांश जोड़ने से तीसरा भाव स्पष्ट होगा। तीसरे भाव में षष्ठांश जोड़ने से तीसरे भाव की संधि तथा तीसरे भाव की संधि तथा तीसरे भाव की संधि में षष्ठांश जोड़ने से चतुर्थ भाव होगा।

30 में से षष्ठांश घटाकर यदि शेष को चतुर्थ भाव में जोड़ दें तो चतुर्थ भाव की संधि और चतुर्थ की संधि में वही शेष पुनः जोड़ दें तो पंचम भाव स्पष्ट हो जाएगा। पंचम भाव में शेष जोड़ने से पंचम की संधि तथा इस संधि में पुनः शेष जोड़ने से षष्ट भाव आएगा।

लग्न राशि में 6 राशि जोड़ने से सप्तम भाव स्पष्ट होगा।

लग्न की संधि में 6 राशि जोड़ने से सप्तम भाव की संधि।
द्वितीय भाव में 6 राशि जोड़ने से अष्टम भाव।
द्वितीय भाव की संधि में 6 राशि जोड़ने से अष्टम भाव की संधि।
तीसरे भाव में 6 राशि जोड़ने से नवम भाव।
तीसरे भाव की संधि में 6 राशि जोड़ने से नवम भाव की संधि।
चतुर्थ भाव में 6 राशि जोड़ने से दशम भाव।
चतुर्थ भाव की संधि में 6 राशि जोड़ने से दशम भाव की संधि।
पंचम भाव में 6 राशि जोड़ने से एकादश भाव।
पंचम भाव की संधि में 6 राशि जोड़ने से एकादश भाव की संधि।
षष्ठ भाव में 6 राशि जोड़ने से द्वादश भाव।
षष्ठ भाव की संधि में 6 जोड़ने से द्वादश भाव की संधि स्पष्ट होगी।

	2. 16. 19.51	चतुर्थ भाव
ऋण किया	—11. 21. 32. 3	प्रथम भाव (लग्न)
	2. 24. 47. 48	शेष

शेष को 6 से भाग दिया

6)84. 47. 48(14.7
6
24
24
47
42
5
×60
300
+48
6)348(58
30
48
48
0 त्याज्य

14. 7.58=षष्ठांश

11. 21. 32. 3	प्रथम भाव
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
0. 5. 40. 1	प्रथम भाव संधि
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
0. 19. 47. 59	द्वितीय भाव
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
1. 3. 55. 57	दूसरे भाव की संधि
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
1. 18. 3. 55	तीसरा भाव
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
2. 2. 11. 53	तीसरे भाव की संधि
+0. 14. 7. 58	षष्ठांश जोड़ा
2. 16. 19.51	चतुर्थ भाव

30 में से षष्ठांश घटाया

30. 0. 0	
14. 7. 58	
15. 52. 2	शेष
2. 16. 19. 51	चतुर्थ भाव
+0. 15. 52. 2	शेष जोड़ा
3. 2. 11. 53	चतुर्थ भाव की संधि
+0. 16. 52. 2	शेष जोड़ा
3. 18. 3. 55	पंचम भाव
+0. 15. 52. 2	शेष जोड़ा
4. 3. 55. 57	पंचम भाव की संधि
+0. 15. 52. 2	शेष जोड़ा
4. 19.47.59	षष्ठ भाव
+0. 15. 52. 2	शेष जोड़ा
5. 5. 40. 1	षष्ठ भाव की संधि
+0. 15. 52. 2	शेष जोड़ा
5. 21. 32. 3	सप्तम भाव

0. 19. 47. 59	दूसरा भाव
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
6. 19. 47. 59	आठवां भाग
1. 3. 55. 57	दूसरे भाव की संधि
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
7. 3. 55. 57	आठवें भाव की संधि
1. 18. 3. 55	तीसरा भाव
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
7. 18. 3. 55	नवम भाव
2. 2. 11. 53	तीसरे भाव की संधि
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
8. 2. 11. 53	नवम भाव की संधि
2.16.19. 51	चतुर्थ भाव
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
8. 16. 19.51	दशम भाव
3. 2. 11. 53	चतुर्थ भाव की संधि
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
9. 2. 11. 53	दशम भाव की संधि
3. 18. 3. 55	पंचम भाव
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
9. 18. 3. 55	एकादश भाव
4. 3. 55. 57	पंचम भाव की संधि
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
10. 3. 55. 57	एकादश भाव की संधि
4. 19.47.59	षष्ठ भाव
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
10.19.47.59	द्वादश भाव
5. 5. 40. 1	षष्ठ भाव की संधि
+6. 0. 0. 0	6 राशि जोड़ी
11. 5. 40. 1	द्वादश भाव की संधि

इस प्रकार बारहों भाव स्पष्ट करके नीचे लिखे अनुसार भाव स्पष्ट चक्र बनाना चाहिए।

।। अथ द्वादश भाव स्पष्ट चक्रम ।।

1	0	2	0	3	0	4	0	5	0	6	0
11	0	0	0	1	2	2	3	3	4	4	5
21	5	19	14	18	2	16	2	18	3	19	5
32	40	47	7	3	11	19	11	3	55	47	40
3	1	59	58	55	53	51	53	55	57	59	1
7	**0**	**8**	**0**	**9**	**0**	**10**	**0**	**11**	**0**	**12**	**0**
5	6	6	7	7	8	8	9	9	10	10	11
21	5	19	3	18	2	16	2	18	3	19	5
32	40	47	55	3	11	19	11	3	55	47	40
3	1	59	57	55	53	51	53	55	57	59	1

* 0 संधि के लिए है।

चलित चक्र—चलित चक्र में 24 कोष्ठक बनाये जाते हैं। 12 कोष्ठक 12 भावों के एवं 12 कोष्ठक संधियों के। कुछ विद्वान जन्मकुण्डली की तरह 12 कोष्ठक ही बनाते है। वे संधिगत ग्रह को अगले भाव में लिख देते हैं। चलित चक्र बनाने के लिए हमने पीछे ग्रह स्पष्ट एवं भाव स्पष्ट किये थे। चलित चक्र बनाने के लिए हम पहले ग्रह स्पष्ट लेते हैं, फिर भाव स्पष्ट को। यदि ग्रह स्पष्ट भाव स्पष्ट के तुल्य या कम होगा तो उसी भाव में लिखा जायेगा। यदि स्पष्ट ग्रह संधि तुल्य या अगले भाव से कम होगा तो संधि में लिखा जायेगा।

उपरोक्त उदाहरण का चलित चक्र बनाते हैं।

ग्रह वाले कोष्ठक में सूर्य स्पष्ट 1/29/50/40/24 है और भाव स्पष्ट में तीसरा भाव 1/18/3/55 है। स्पष्ट सूर्य के अंश इससे अधिक हैं, अतः सूर्य तीसरे भाव की संधि में लिखा जायेगा।

चन्द्र स्पष्ट 5/10/44/48 है, सातवां भाव है 5/21/32/3। स्पष्ट है कि चन्द्र स्पष्ट के अंक छठे भाव के अंकों से अधिक हैं और सातवें भाव से कम, अतः चन्द्र षष्ठ भाव की संधि में लिखा जाएगा।

मंगल स्पष्ट है 4/6/51/32/36 और पांचवें भाव की संधि के अंक हैं 4/3/55/57 मंगल स्पष्ट के अंक इस से अधिक हैं, अतः मंगल षष्ठ भाव में होगा।

बुध स्पष्ट है 2/0/16/24/30 और तीसरे भाव की संधि के अंक हैं 2/2/11/53 ये बुध स्पष्ट से अधिक हैं, अतः बुध तीसरे भाव की संधि में लिखा जायेगा।

वृहस्पति स्पष्ट है 2/18/34/8, चौथा भाव है 2/16/19/31, ये अंक वृहस्पति के अंकों से कम हैं, अतः वृहस्पति चौथे भाव की संधि में लिखा जाएगा।

इष्टकालिक शुक्र स्पष्ट है 3/4/35/45/48 और ये अंक चौथे भाव की संधि से अधिक और पांचवें भाव से कम हैं, अतः शुक्र पंचम भाव में रहेगा।

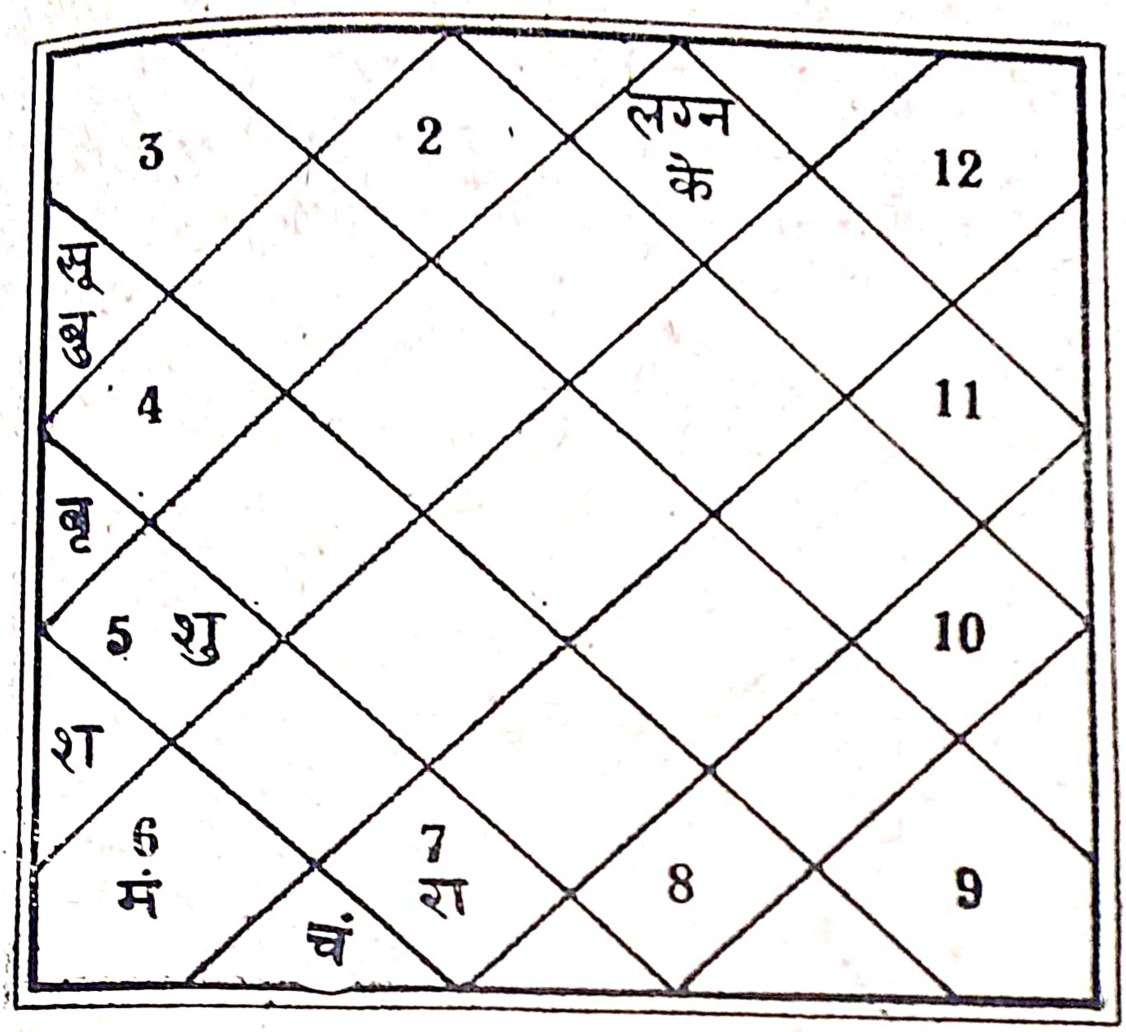
शनि स्पष्ट है 4/2/14/36 पांचवें भाव की संधि है 4/3/55/57 ये अंक शनि स्पष्ट से अधिक हैं, अतः शनि पांचवें भाव की संधि में रहेगा।

इष्टकालिक राहु स्पष्ट है 5/8/16/48/28 और सातवां भाव है 5/21/32/3 राहु के अंक षष्ठ भाव की संधि से अधिक एवं सप्तम भाव से कम हैं, अतः राहु सप्तम भाव में लिखा जाएगा।

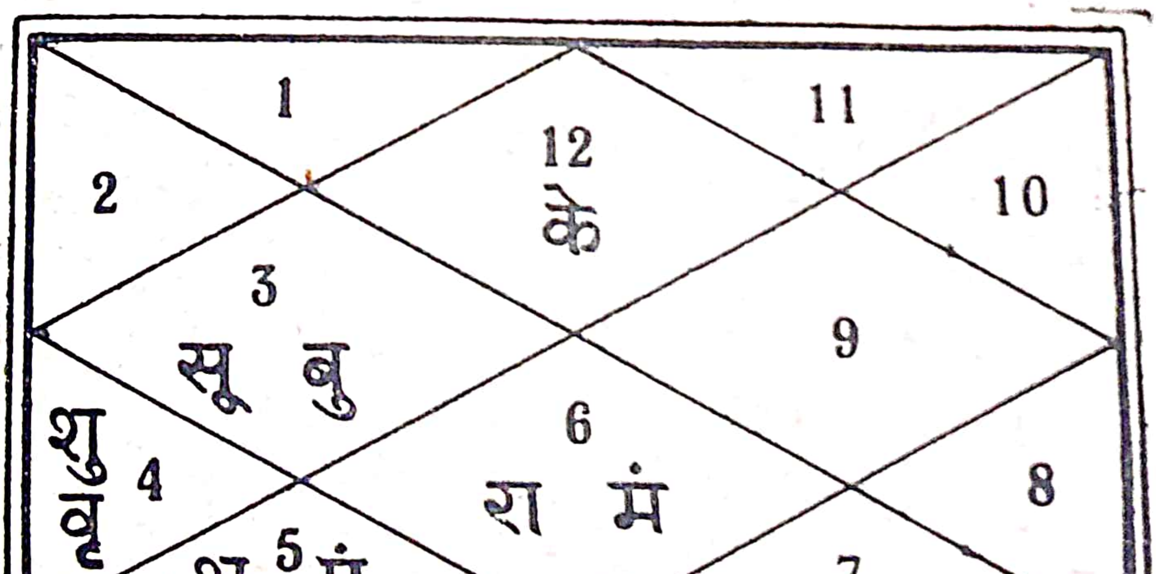
केतु स्पष्ट है 11/8/16/28/48 ये संख्या प्रथम भाव से कम और बारहवें भाव की संधि से अधिक है, अतः केतु प्रथम भाव (लग्न) में रहेगा। अब चलित चक्र बनाते हैं।

आगे पृष्ठ 123 पर चलित चक्र देखें।

चलित चक्र (24 कोष्ठक)



चलित चक्र (12 कोष्ठक)



वर्ग साधन

जन्मपत्रिका बनाने से हमें यह पता चल जाता है कि जातक के जन्म लेने के समय कौन-सा ग्रह किस स्थिति में था। ग्रहों की स्थिति के पश्चात् हम उन के बलाबल का ज्ञान प्राप्त करते हैं, क्योंकि ग्रहों के बलाबल के आधार पर ही हम उनके द्वारा देय फल की स्थिति से अवगत हो सकते हैं। ग्रहों के बल को जानने के लिए ही षड्वर्ग, सप्त वर्ग, अष्टक वर्ग एवं दश वर्ग साधन किए जाते हैं। वर्ग साधन के पश्चात हम ग्रह की शक्ति, प्रभाव और कारकता को जान लेते हैं।

ये दश वर्ग हैं—लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश द्वादशांश, षोडशांश, त्रिशांश और षष्ठ्यांश। इनमें भी सप्त वर्ग विशेष महत्व के हैं, लग्न, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश। कुछ ज्योतिर्विद् षड् वर्ग साधन तक ही करते हैं।

लग्न एक स्थूल बिन्दु है, इसे सूक्ष्म स्तर पर लाने के लिए ही हम लोग वर्ग साधन करते हैं। दिन-रात में 60 घटी होती हैं तथा 12 राशियां उदित होती हैं। इस प्रकार एक लग्न (राशि) का लगभग 5 घटी का समय होता है। होरा एक राशि के दो भाग को कहते हैं। द्रेष्काण में हम एक राशि के तीन भाग कर लेते हैं, सप्तमांश में 7, नवमांश में 9 एवं त्रिशांश में 30 भाग कर लेते हैं।

होरा—राशि के दो भाग करने को होरा कहते है। एक राशि में 30° अंश होते हैं तो 15°, 15° अंशों की दो होरा एक राशि में होती हैं। ये होरा सूर्य और चन्द्र की होती हैं।

सम राशियों में—वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन—इन की

पहली होरा (1 से 15 अंशों तक) चन्द्रमा की और दूसरी होरा (15 से 30 अंशों तक) सूर्य की होती है।

विषम राशियों में—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु तथा कुम्भ में पहली होरा (1 से 15 अंशों) तक सूर्य की तथा दूसरी (16 से 30 अंशों तक) चन्द्रमा की होती है।

मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ	अंश
5	5	5	5	5	5	1 से 15 अंश तक
4	4	4	4	4	4	16 से 30 अंश तक

वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन	अंश
4	4	4	4	4	4	1 से 15 अंश तक
5	5	5	5	5	5	16 से 30 अंश

उदाहरण लग्न 11/21/32/3 अर्थात मीन राशि के 21 अंश 32 कला 3 विकला है। चक्र में मीन राशि के 15 अंशों तक चन्द्र की होरा तथा 16 से 30 तक सूर्य की होरा है, अतः लग्न (होरा लग्न) 5 सूर्य का माना जायेगा।

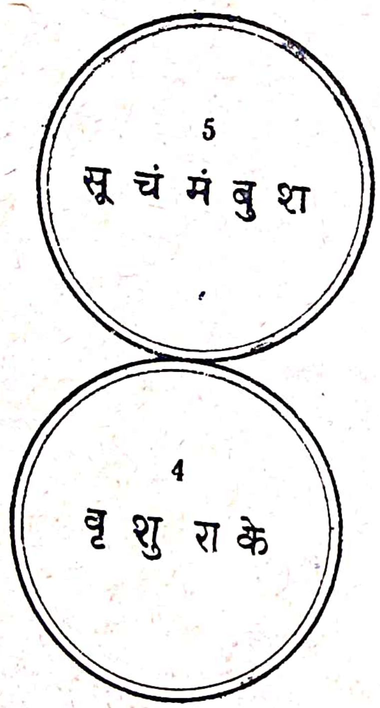
ग्रह स्थापित करने के लिए ग्रह स्पष्ट चक्र में देखा, सूर्य 1/29/50 14/32 अर्थात वृष के 29 अंश, अतः सूर्य को सूर्य की होरा 5 में लिखेंगे।

चन्द्र स्पष्ट है 5/10/44/48 अर्थात कन्या राशि के 10 अंश 44 कला और 48 विकला है। वृष में 16 से 30 अंशों तक सूर्य की होरा है इसलिए चन्द्र को भी सूर्य की होरा 5 में ही लिखेंगे। मंगल स्पष्ट है 4/6/51/35/36 अर्थात सिंह राशि के 6 अंश 5 कला 35 विकला और 36 प्रति विकला। सिंह में 5 अंशों तक सूर्य की होरा होने से मंगल भी सूर्य की होरा में ही रहेगा। बुध स्पष्ट है 2/0/16/24/30 यानि मिथुन के 0 अंश 16 कला 24 विकला और 30 प्रति विकला। यह भी सूर्य की होरा में रहेगा। वृहस्पति स्पष्ट है 2/18/34/8 यह चन्द्र की होरा में ही लिखा जायेगा, क्योंकि मिथुन में 16 से 30 अंश तक चन्द्र की होरा है। शुक्र स्पष्ट है

3/4/35/45/48, कर्क के 4 अंश 35 कला 45 विकला और 48 प्रति विकला। इसलिए चन्द्र की होरा में लिखा जायेगा। शनि को सिंह राशि के 2 अंश 14 कला 36 विकला पर होने से सूर्य की होरा में लिखेंगे। राहु कन्या राशि के 8 अंश 16 कला 48 विकला और 18 प्रति विकला है, अतः इसे भी चन्द्र की होरा 4 में लिखेंगे। केतु स्पष्ट है 11/8/16/48/28, अतः इसे भी चन्द्र की होरा में लिखेंगे।

नीचे उदाहरण कुण्डली का होराचक्र स्पष्ट किया जा रहा है।

॥ अथ होरा चक्रमिदम ॥



द्रेष्काण साधन

राशि के तीसरे भाग को द्रेष्काण कहा जाता है। एक राशि में 30 अंश होते हैं। इसके तीन भाग करने से 10-10 अंशों का एक भाग होगा। 1 से 10 अंश तक प्रथम द्रेष्काण, 11 से 20 अंश तक द्वितीय द्रेष्काण और 21 से 30 अंश तक तृतीय द्रेष्काण। इस प्रकार एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। हर राशि में प्रथम द्रेष्काण उसका स्वयं का रहता है, दूसरा पांचवी राशि का और तीसरा नवीं राशि का द्रेष्काण होता है। नीचे लिखे चक्र से यह भली भांति स्पष्ट हो जायेगा।

द्रेष्काण बोधक सारणी

मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	म		अंश
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	प्रथम द्रे०	1 से 10 अंश
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	द्वितीय द्रे०	11 से 20 अंश
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	तृतीय द्रे०	21 से 30 अंश

हमारा उदाहरण लग्न है 11/21/ 2/3, सारणी में मीन के 21 से 30 अंश पर मीन का तीसरा द्रेष्काण है,और तीसरे द्रेष्काण की राशि है

वृश्चिक, अतः द्रेष्काण लग्न वृश्चिक राशि का रहेगा।

द्रेष्काण चक्र में ग्रह स्थापन के लिए भी यही विधि रहेगी। जैसे सूर्य स्पष्ट है वृष राशि के 29 अंश 50 कला14 विकला 32 प्रति विकला पर। सारणी में यह संख्या वृष के तीसरे द्रेष्काण में है और इस द्रेष्काण की राशि है मकर, अतः सूर्य मकर में लिखा जायेगा।

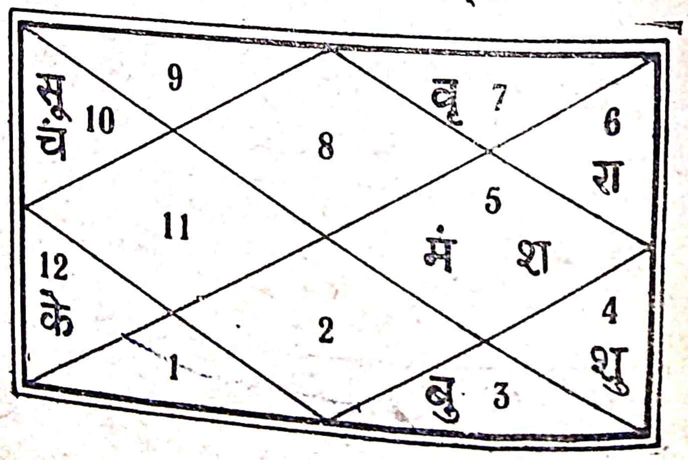
चन्द्र स्पष्ट है 5/10/44/48 जो कि कन्या के दूसरे द्रेष्काण अर्थात मकर राशि में रहेगा। मंगल स्पष्ट 4/6/51/35/36 है, सिंह के प्रथम द्रेष्काण अर्थात सिंह में ही लिखा जायेगा। बुध स्पष्ट 2/0/16/24/30 है मिथुन के प्रथम द्रेष्काण में तो मिथुन में ही रहेगा। बृहस्पति मिथुन के 18 अंश 34 कला 8 विकला होने से मिथुन के दूसरे द्रेष्काण यानि तुला राशि में लिखा जायेगा।

शुक्र स्पष्ट 3/4/45/48 है, यह कर्क के प्रथम द्रेष्काण में होने से कर्क राशि में ही रहेगा।

शनि स्पष्ट है 4/2/14/36/0, यह सिंह के प्रथम द्रेष्काण में होने से सिंह में लिखा जायेगा।

राहु स्पष्ट है 5/8/16/48/28, मीन के प्रथम द्रेष्काण में होने से यह कन्या में ही रहेगा।

॥ अथ द्रेष्काण चक्रमिदम् ॥



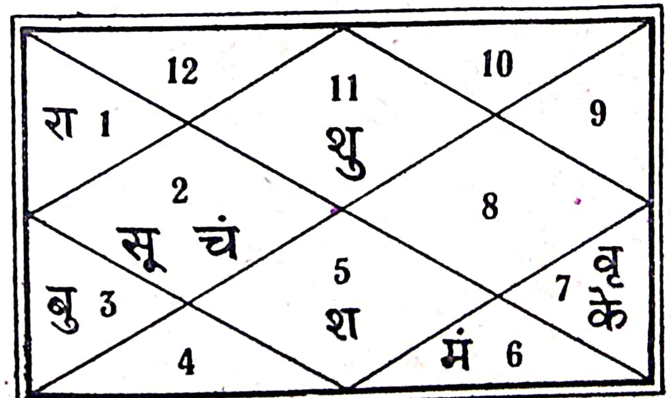
केतु स्पष्ट 11/8/16/48/28 है, मीन के प्रथम द्रेष्काण में रहने से यह भी मीन में लिखा जायेगा।

सप्तमांश साधन

एक राशि के सात भाग कर देने से हर भाग सप्तमांश या सप्तांश कहा जायेगा। प्रत्येक राशि में एक सप्तमांश 4°/17′/8″ का होता है। सप्तमांश में विषम राशि का प्रथम सप्तमांश उसका स्वयं का होता है और विषम राशि में उस राशि से सप्तम राशि का। सुविधा के लिए पृष्ठ 130 पर दी गई सारणी देखें।

सप्तमांश चक्र बनाने के लिए लग्न और ग्रहों के स्थापन के लिए प्रत्येक ग्रह के स्पष्ट मान से विचार करना पड़ता है। अब उदाहरण कुण्डली का सप्तमांश चक्र बनाने के लिए सर्वप्रथम लग्न को लेते हैं। लग्न है 11.21.32.3 सप्तमांश बोधक सारणी में देखा मीन के 21 अंश 25 कला और 32 विकला पर पांचवां सप्तमांश अर्थात मकर राशि है, किन्तु हमारी लग्न के अंश तो बराबर हैं, कलादि अधिक हैं, अतः अगला सप्तमांश अर्थात कुम्भ सप्तमांश लग्न होगा। लग्न कुण्डली की भांति चक्र बनाकर सूर्यादि ग्रहों को उनके स्पष्ट मान के अनुसार लिख देंगे। नीचे उदाहरण कुण्डली का सप्तमांश चक्र दिया जा रहा है।

॥ सप्तांश चक्रमिदम् ॥



नवमांश

—एक राशि के नवें भाग को नवमांश या नवांश कहा जाता

सप्तमांश बोधक सारणी

अंश-कला विकला	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
4/17/8	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6
8/34/17	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7
12/5/25	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8
17/ 8/34	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9
21/25/42	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10
25/42/51	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11
30/ 0/ 0	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12

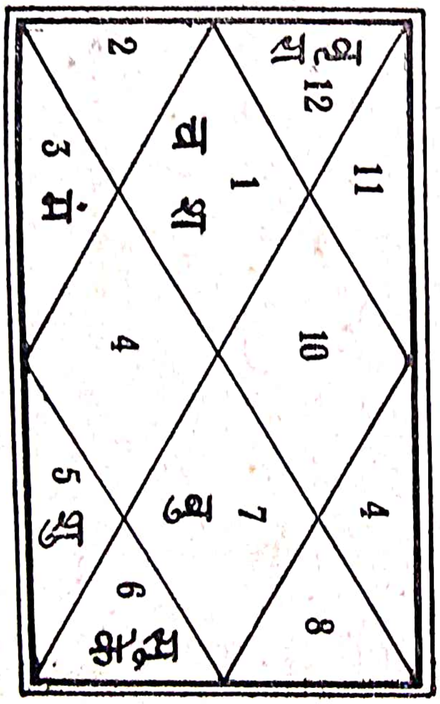
है। एक नवांश का मान होता है 3 अंश 20 कला अर्थात एक राशि के मान (घटी-पलों) का यह भाग समयात्मक रूप में है। ज्योतिष में राशियों को तीन खण्डों में विभाजित किया है, चर राशियां, स्थिर राशियां और द्विस्वभाव राशियां। मेष, कर्क, तुला और मकर चर राशियां हैं। वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर राशियां हैं। मिथुन, कन्या, धनु और मीन द्विस्वभाव राशियां हैं। नवमांश बनाने का सूत्र है कि चर राशि का प्रथम नवांश उसकी अपनी राशि से प्रारम्भ होता है। स्थिर राशि का नवांश अपनी राशि से नवीं राशि से प्रारम्भ होता है तथा द्विस्वभाव राशि का नवांश अपनी राशि से पांचवीं राशि से प्रारम्भ होता है।

सुविधा के लिए हम एक चक्र बना लेते हैं।

नवमांश चक्र भी ठीक वैसे ही बनेगा जिस प्रकार हमने सप्तमांश चक्र बनाया था। इसे भी हम उपरोक्त उदाहरण पर घटित करते हैं। हमारा स्पष्ट लग्न है 11.21.32.3 इसे सारणी में देखने से ज्ञात हुआ कि मीन राशि के 20 अंश से 23 अंश 20 कला तक सातवां नवमांश अर्थात् मकर राशि है, अतः नवमांश लग्न मकर होगा।

उदाहरण कुण्डली का नवमांश चक्र नीचे लिखे अनुसार बनेगा।

॥ नवमांश चक्रमिदम् ॥



स्पष्ट सूर्य है 129/50/14 यह वृष के आखरी नवांश अर्थात कन्या में रहेगा। चन्द्र मेष में, मंगल मिथुन में, बुध तुला में, वृहस्पति मीन में, शुक्र सिंह में शनि मेष में, राहु मीन में तथा केतु कन्या में लिखा जाएगा।

पृष्ठ 132 पर नवमांश बोधक सारणी भी दी जा रही है।

॥ नवमांश बोधक सारणी ॥

अंश कलादि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
3/20	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
6/40	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10/00	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13/20	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16/40	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20/00	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23/20	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26/40	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30/00	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

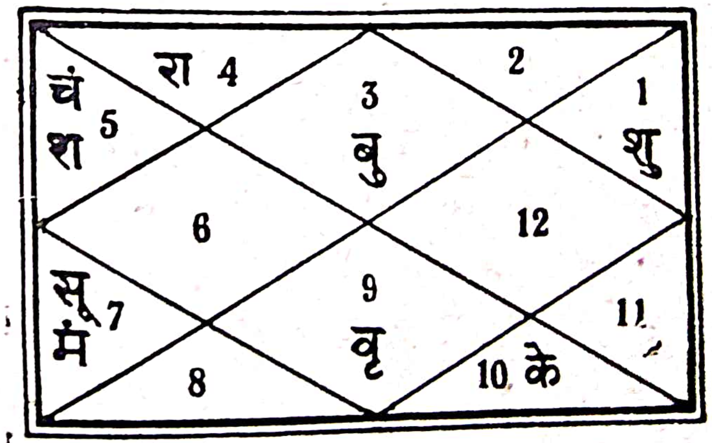
दशमांश

एक राशि को समयात्मक रूप में जब दस भागों में बांट लेते तो उसके प्रत्येक भाग को दशमांश कहते हैं। दशमांश लग्न बनाने का सूत्र है कि विषम राशि में दशमांश लग्न उसी राशि से और सम राशि में नवम राशि से दशमांश लग्न की गणना की जाती है। दशमांश चक्र भी पहले की भांति बनेगा। लग्न स्पष्ट को सारणी में देखेंगे तो दशमांश निकल आएगा। ग्रह स्थापन के लिए उनके स्पष्ट मान का उपयोग होगा। दशमांश चक्र को सुविधा से बनाने के लिए दशमांश बोधक सारणी पृष्ठ 134 पर स्पष्ट की जा रही है।

पृष्ठ 134 परदी गई सारणी से अब हम उदाहरण कुण्डली का दशमांश चक्र बनाते हैं। हमारा उदाहरण लग्न है 11.21.32.3 इसे ज्ञान सारणी में देखा तो मीन राशि के नीचे और 24° अंश के सामने संख्या मिली 3। यह आठवां दशमांश मिथुन राशि का है, अत: दशम लग्न मिथुन होगा।

ग्रह स्पष्ट के अनुसार सूर्य वृष के 29° अंश पर है, अत: तुला में लिखा जाएगा। चन्द्र कन्या के 10 अंशों पर है, अत: सिंह में लिखा जाएगा। मंगल सिंह के 6 अंश और 51 कलादि पर होने से तुला मे लिखा जाएगा। बुध मिथुन के 0 अंश पर है, अत: मिथुन में ही रहेगा। बृहस्पति मिथुन के 18° अंश 34 कला पर है, अत: यह धनु में रहेगा। शुक्र कर्क का 4 अंश पर होने से मेष में रहेगा। शनि सिंह का 2 अंश पर होने से सिंह में ही लिखा जाएगा। राहु कन्या के 8 अंश पर होने से कर्क में तथा केतु मीन के 8 अंश पर होने से मकर में लिखा जाएगा।

॥ दशमांश चक्रमिदम् ॥



॥ दशमांश बोधक सारणी ॥

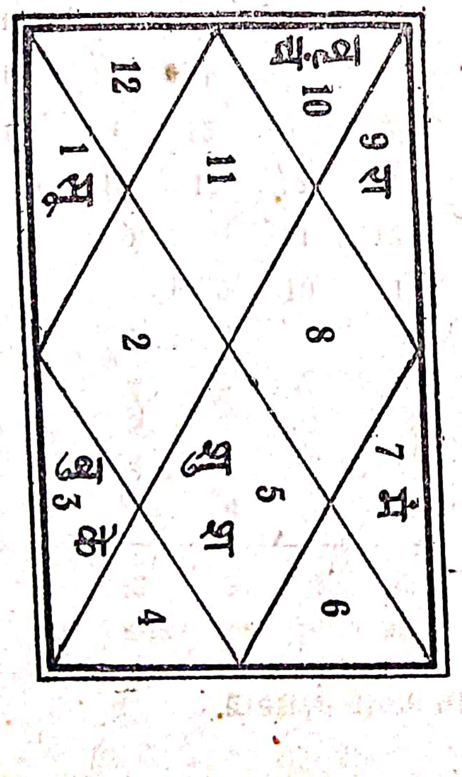
अंश कलादि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
3/0	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
6/0	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
9/0	3	12	5	2	7	4	6	6	11	8	1	10
12/0	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
15/0	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
18/0	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1
21/0	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
24/0	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
27/0	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
30/0	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

द्वादशांश साधन

जब एक राशि को बारह बराबर भागों में बांट लिया जाता है तो प्रत्येक भाग को द्वादशांश कहा जाता है। एक द्वादशांश 2°30 कला मान (चूंकि एक राशि में 30° अंश होते हैं) का रहेगा। द्वादशांश बनाने का सूत्र है कि राशि का पहला द्वादशांश उसका स्वयं का, दूसरा अगली राशि का, तीसरा उससे अगली राशि का आदि। इसे उदाहरण लग्न पर घटित करते हैं। उदाहरण लग्न है 11.21.32.3 सारणी में देखा तो मीन राशि के नीचे और 22° अंश तीस कला के सामने वृश्चिक राशि अर्थात् नवां द्वादशांश लग्न हुआ वृश्चिक राशि का।

इसी प्रकार अन्य स्पष्ट ग्रहों के मान लेकर ग्रह स्थापन करेंगे। सूर्य को मेष में, चन्द्र को मकर में, मंगल को तुला में, बुध को मिथुन में, गुरु को मकर में, शुक्र को सिंह में, शनि को सिंह में, राहु को धनु में और केतु को मिथुन में लिखेंगे। द्वादशांश बोधक सारणी पृष्ठ 136 पर देखें।

॥ द्वादशांश चक्रमिदम् ॥



षोडशांश साधन

यदि एक राशि को सोलह बराबर-बराबर भागों में विभक्त कर लिया जाए तो प्रत्येक भाग षोडशांश कहलाएगा। एक षोडशांश का मान 1 अंश 5 कला और 30 विकला होता है। षोडशांश लाने की गणितात्मक

द्वादशांश बोधक सारणी

अंश कलादि	मेष 0	वृष 1	मिथुन 2	कर्क 3	सिंह 4	कन्या 5	तुला 6	वृश्चिक 7	धनु 8	मकर 9	कुम्भ 10	मीन 11
2/30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
5/00	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
7/30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
10/00	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
12/30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
15/00	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
17/30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
20/00	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
22/30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
25/00	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
27/30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
30/00	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

विधि है कि चर राशियों (मेष, कर्क, तुला, मकर) में प्रथम षोडशांश मेष से तथा स्थिर राशियों (वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ) का प्रथम षोडशांश सिंह राशि से तथा द्विस्वभाव राशियों मिथुन, कन्या, धनु, एवं मीन का प्रथम षोडशांश धनु राशि का माना जाता है।

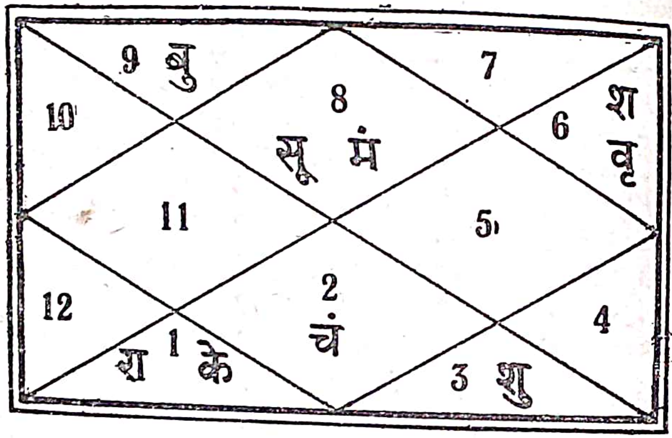
।। षोडशांश बोधक सारणी ।।

चर मेष, कर्क, तुला, मकर	स्थिर वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ	द्विस्वभाव मिथुन, कन्या धनु, मीन	अंशादि
1	5	9	1/52/30
2	6	10	3/45/0
3	7	11	5/37/30
4	8	12	7/30/0
5	9	1	9/22/30
6	10	2	11/15/0
7	11	3	13/7/30
8	12	4	15/0/0
9	1	5	16/52/30
10	2	6	18/45/0
11	3	7	20/37/30
12	4	8	22/30/0
1	5	9	24/22/30
2	6	10	26/15/0
3	7	11	28/7/30
4	8	12	30/0/0

षोडशांश कुण्डली भी पूर्ववत ही बनेगी। लग्न स्पष्ट जिस राशि के षोडशांश में होगा, वही राशि लग्न में लिखी जाएगी। हमारा उदाहरण लग्न मीन के 21 अंश 32 कला और 3 विकला है। मीन द्विस्वभाव राशि है, इसका बारहवां षोडशांश 20/37/30 है। हमारा लग्न इससे अधिक मान का है, अतः तेरहवां षोडशांश अर्थात वृश्चिक राशि षोडशांश कुण्डली का लग्न होगा।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के स्पष्ट मान को भी षोडशांश बोधक सारणी में देखकर कुण्डली में स्थापित कर देना चाहिए। उदाहरण कुण्डली की षोडशांश कुण्डली में सूर्य वृश्चिक में, चन्द्र वृष में, मंगल वृश्चिक में, बुध धनु में, गुरु कन्या में, शुक्र मिथुन में, शनि कन्या में, राहु मेष में और केतु भी मेष में ही लिखा जायेगा।

॥ षोडशांश चक्रमिदम् ॥



त्रिशांश साधन

किसी भी एक राशि के तीसवें भाग को त्रिशांश कहते हैं। राशियों को गणित के अनुसार सम और विषम संख्यक माना गया है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियां विषम संख्यक राशियां कही जाती हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और कुम्भ राशियां समसंख्यक मानी गई हैं।

विषम राशियों में पहला त्रिशांश मंगल का 5° तक रहता है। दूसरा 6 से 10 तक शनि का, तीसरा 11° से 18° अंश तक गुरु का, चौथा 19° से 25° बुध का और पांचवा 26° से 30° तक शुक्र का होता है।

राशियों के अनुसार पहला त्रिशांश मेष राशि, दूसरा कुम्भ राशि, तीसरा धनु राशि, चौथा मिथुन राशि और पांचवां तुला राशि का रहता है।

सम राशियों में पहला त्रिशांश (5 अंश तक) शुक्र का, दूसरा (6 से

12 अंश तक) बुध का, तीसरा (13 से 20 अंश तक) गुरु का, चौथा 21 से 25 अंश तक) शनि का, पांचवां (26 से 30 अंश तक) मंगल का रहता है।

राशियों के अनुसार प्रथम त्रिशांश वृष राशि, दूसरा कन्या राशि तीसरा मीन राशि, चौथा मकर राशि और पांचवां वृश्चिक राशि का होता है।

॥ विषम राशि त्रिशांश बोधक सारणी ॥

मेष 0	मिथुन 2	सिंह 4	तुला 6	धनु 8	कुम्भ 10	अंशादि
1 मं	1 मं	1 मं	1 मं	1 मं	1 मं	1 से 5
11 श	11 श	11 श	11 श	11 श	11 श	6 से 10
9 वृ	9 वृ	9 वृ	9 वृ	9 वृ	9 वृ	11 से 18
3 बु	3 बु	3 बु	3 बु	3 बु	3 बु	14 से 25
7 शु	7 शु	7 शु	7 शु	7 शु	7 शु	26 से 30

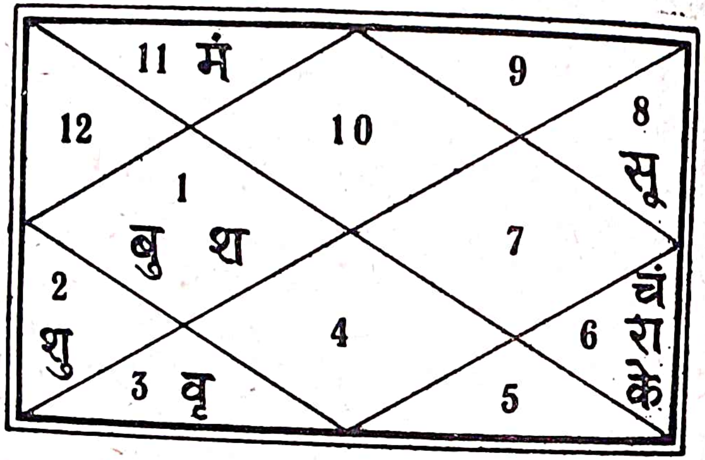
॥ सम राशि त्रिशांश बोधक सारणी ॥

वृष 1	कर्क 3	कन्या 5	वृश्चिक 7	मकर 9	मीन 11	अंशादि
2 शु	2 शु	2 शु	2 शु	2 शु	2 शु	1 से 5 अंश
6 बु	6 बु	6 बु	6 बु	6 बु	6 बु	6 से 12 अंश
12 वृ	12 वृ	12 वृ	12 वृ	12 वृ	12 वृ	13 से 20 अंश
10 श	10 श	10 श	10 श	10 श	10 श	21 से 25 अंश
8 मं	8 मं	8 मं	8 मं	8 मं	8 मं	26 से 30 अंश

अब उदाहरण लग्न का त्रिशांश चक्र बनाते हैं। लग्न समराशि मीन का 21.32.3 है। यह चौथा त्रिशांश शनि की राशि मकर का है, अतः त्रिशांश लग्न मकर राशि होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी स्थापना

करनी चाहिए। सूर्य वृश्चिक में, चन्द्र कन्या में, मंगल कुम्भ में, बुध मेष में, वृहस्पति मिथुन में, शुक्र वृष में, शनि मेष में, राहु कन्या में तथा केतु भी कन्या में ही स्थित होगा।

।। त्रिशांश चक्रमिदम् ।।



षष्ट्यंश साधन

किसी भी राशि में साठ षष्ट्यंश होते हैं अर्थात् प्रत्येक षष्ट्यंश 30 कलामान का होता है। जिस लग्न या ग्रह का षष्ट्यंश साधन करना हो उसकी गणितात्मक विधि यह है कि राशि को छोड़कर अंश-कलादि की कलाएं बना लेनी चाहिएं। इस योगफल को 30 पर भाग देना चाहिए (चूंकि एक षष्ट्यंश 30 कला का होता है)। जो राशि आए, उसमें एक और जोड़ देने से षष्ट्यंश की राशि आ जाएगी। विषम राशि वाले ग्रह का देवतांश विषम देवतांश के नीचे और सम राशि वाले ग्रह का देवतांश समदेवतांश के नीचे मिलेगा।

प्रसंगवश हम षष्ट्यंश लाने की विधि समझ लेते हैं। यद्यपि आज इतने सूक्ष्म गणित को फलादेश में अधिक महत्व नहीं दिया जाता तथापि षष्ट्यंश कुण्डली ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का परिचय देती है और दशवर्ग कुण्डली बनाने एवं कुण्डली के फल का सही-सही मूल्यांकन करने में सहायक होती है।

जयपुर जिले में एक वयोवृद्ध ज्योतिषी थे। उनके पास "सिद्धान्त

चन्द्रिका" नामक ग्रन्थ देखने का सौभाग्य मिला था। उस ग्रन्थ में फलादेश का मुख्य आधार नवमांश कुण्डली को ही माना गया था। आज भी प्रायः कुछ विद्वत्जन नवमांश को ही सर्वाधिक महत्त्व देते हैं, क्योंकि नवमांश कुण्डली से ग्रहों की सही स्थिति पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है।

उदाहरण लग्न से गणित द्वारा षष्ट्यंश बनाने के लिए क्रिया निम्न-रूपेण होगी।

लग्न = 11.21.32.3

राशि छोड़कर अंशों की कला बनाई—

$$\begin{array}{r} 21 \\ \times 60 \\ \hline 1260 \end{array}$$

$$1260+32=\frac{1292}{30}=43 \text{ लब्धि, शेष } =2$$

$$30)\overline{1292}(43$$
$$\begin{array}{r} 120 \\ \hline 92 \\ 90 \\ \hline 2 \end{array}$$

लब्धि में 1 जोड़ा = 43 + 1 = 44

मीन का 44वां षष्ट्यंश तुला राशि है, अतः षष्ट्यंश लग्न तुला राशि होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भी षष्ट्यंश निकाल लेने चाहिएं।

सुविधा के लिए आगे पृष्ठ 142 पर षष्ट्यंश बोधक सारणी दी गई ।है इसमें लग्न राशि के नीचे 22 अंश (44वें) के सामने तुला राशि और देवतांश में अमृत लिखा है। इसी प्रकार सभी ग्रहों को स्थापित कर लेना चाहिए।

॥ षष्ट्यंश बोधक सारणी ॥

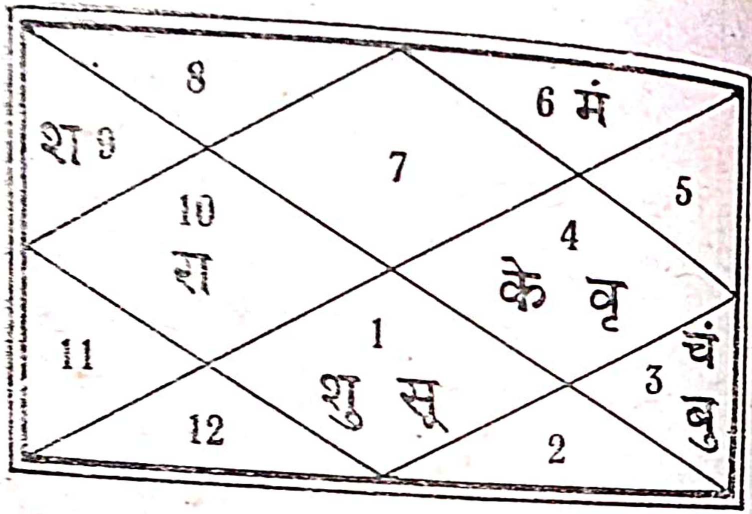
विषम देवता	योग संख्या	अंशादि	मे० 0	वृ० 1	मि० 2	क० 3	सिं० 4	क० 5	तु० 6	वृ० 7	ध० 8	म० 9	कुं० 10	मी० 11	सम देवता
घोर	1	0.30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	इन्दुरेखा
राक्षस	2	1. 0	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	भ्रमण
देव	3	1.30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	पयोधि
कुबेर	4	2. 0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	सुधा
यक्ष	5	2.30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	शीतल
किन्नर	6	3. 0	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	अशुभ
भ्रष्ट	7	3.30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	शुभ
कुलघ्न	8	4. 0	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	निर्मल
गरल	9	4.30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	दण्डायुध
अग्नि	10	5. 0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	कालाग्नि
माया	11	5.30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	प्रवीण
प्रेतपुरीश	12	6. 0	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	इन्द्रमुख
जलपति	13	6.30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	दंष्ट्राकराल
देवगणेश	14	7. 0	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	शीतल
काल	15	7.30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	मृदु

विषम देवता	योग संख्या	अंशादि	मे० 0	वृ० 1	मि० 2	क० 3	सिं० 4	क० 5	तु० 6	वृ० 7	ध० 8	म० 9	कुं० 10	मी० 11	सम देवता
अहि	16	8. 0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	सौम्य
अमृत	17	8.30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	काल
चन्द्र	18	9. 0	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	पातक
मृत्यु	19	9.30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	वंशक्षय
कोमल	20	10.0	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	कुलनाश
पद्म	21	10.30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	विष
लक्ष्मीश	22	11. 0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	पूर्णेन्दु
वागीश	23	11.30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	अमृत
दिगम्बर	24	12. 0	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	सुधा
देव	25	12.30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कण्टक
आर्द्र	26	13. 0	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	अभय
कलिनाश	27	13.30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	घोर
भूप	28	14. 0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	दावाग्नि
समुद्र	29	14.30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	काल
मान्दि	30	15. 0	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	मृत्यु

विषम देवता	योग संख्या	अंशादि	मे० 0	वृ० 1	मि० 2	क० 3	सि० 4	क० 5	तु० 6	वृ० 7	ध० 8	म० 9	कुं० 10	मी० 11	सम देवता
मृत्यु	31	15.30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	मान्दि
काल	32	16. 0	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	समुद्र
दावाग्नि	33	16.30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	भूप
घोर	34	17. 0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	कलिनाश
भय	35	17.30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	आर्द्र
कण्टक	36	18. 0	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	देव
सुधा	37	18.30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	दिगम्बर
अमृत	38	19. 0	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	वागीश
पूर्णेन्द्र	39	19.30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	लक्ष्मीश
विष	40	20. 0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	पद्म
कुलनाश	41	20.30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कोमल
वंशक्षय	42	21. 0	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	मृदु
पातक	43	21.30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	चन्द
काल	44	22. 0	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	अमृत
सौम्य	45	22.30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	अहि

विषम देवता	योग संख्या	अंशादि	मे० 0	वृ० 1	मि० 2	क० 3	सि० 4	क० 5	तु० 6	वृ० 7	ध० 8	म० 9	कुं० 10	मि० 11	सम देवता
मृदु	46	23. 0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	काल
शीतल	47	23.30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	देव गणेश
दंष्ट्राकराल	48	24. 0	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	जलपति
इन्द्रमुख	49	24.30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	प्रेत पुरीश
प्रवीण	50	25. 0	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	माया
कालाग्नि	51	25.30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	गरल
दण्डायुध	52	26. 0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	अग्नि
निर्मल	53	26.30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	कुलघ्न
शुभ	54	27. 0	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	भ्रष्ट
अशुभ	55	27.30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	किन्नर
शीतल	56	28.00	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	यक्ष
सुधा	57	28.30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	कुबेर
पयोधि	58	29. 0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	देव
भ्रमण	59	29.30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	राक्षस
इन्दुरेखा	60	30. 0	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	घोर

॥ षष्ट्यंश चक्रमिदम् ॥



ग्रहों का निसर्ग-मैत्री विचार

ग्रहों के बलाबल का निर्णय करने के लिए पंचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है। निसर्ग-मैत्री एवं तात्कालिक मैत्री का निर्णय लग्न कुण्डली से करके ही पंचधा मैत्री चक्र बनाना चाहिए। पंचधा मैत्री में ग्रहों की पांच स्थितियां स्पष्ट होती हैं। अतिमित्र, सम, शत्रु, अतिशत्रु।

ज्योतिष में सूर्य के गुरु, चन्द्र और मंगल मित्र, बुध सम, शुक्र व शनि शत्रु माने जाते हैं। चन्द्र के सूर्य, बुध मित्र एवं शुक्र, मंगल, गुरु, शनि सम माने जाते हैं। मंगल के सूर्य, चन्द्र और गुरु मित्र, शुक्र एवं शनि सम तथा बुध शत्रु हैं। बुध के सूर्य, शुक्र मित्र, शनि, गुरु एवं मंगल सम तथा चन्द्र शत्रु है। गुरु के सूर्य, चन्द्र, मंगल मित्र, शनि सम एवं बुध व शुक्र शत्रु हैं। शुक्र के बुध शनि मित्र, गुरु, सम एवं सूर्य व चन्द्र शत्रु हैं। शनि के बुध, शुक्र मित्र, गुरु सम तथा सूर्य, चन्द्र व मंगल शत्रु हैं।

सुविधा के लिए निसर्ग-मैत्री बोधक एवं तात्कालिक मैत्री बोधक सारणी आगे पृष्ठ 147 पर दी जा रही है।

॥ निसर्ग-मैत्री बोधक सारणी ॥

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
चन्द्र	सूर्य, बुध	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि	
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	मंगल, गुरु, शनि	शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	मंगल-गुरु	सूर्य, चन्द्र
शनि	शुक्र, बुध	गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल

॥ तात्कालिक मैत्री चक्र ॥

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	बु गु शु × श मं	बु गु शु × श मं	सू चं बु × गु शु	सू चं शु × श मं	सू चं शु × श मं	सू चं मं बु गु श	सू चं बु गु शु ×
शत्रु	चं	सू	श	गु	बु	×	मं

।। पंचधा मैत्री चक्रमिदम् ।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अधि-मित्रा	मं गु.	बु	सू चं गु	सू शु	सू चं मं	बु श	बु शु
मित्रा	बु	मं गु शु श	शु	मं श	श	मं गु.	गु
सम	शु श चं	सू	बु	चं	शु	सू चं	सू चं
शत्रु	×	×	श	गु	×	×	×
अधि-शत्रु	×	×	×	×	बु	×	मं

तात्कालिक मैत्री विचार की विधि है यह कि ग्रह जिस स्थान में स्थित होता है उससे दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवें एवं बारहवें स्थान पर स्थित ग्रह को मित्र समझता है तथा साथ में बैठे, पांचवें, छठवें, आठवें एवं नवें स्थान के ग्रहों को शत्रु समझता है।

निसर्ग-मैत्री और तात्कालिक मैत्री चक्र की सहायता से पचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है। पंचधा मैत्री चक्र में पांच स्थितियां हुआ करती हैं। अतिमित्र, मित्र, सम, शत्रु एवं अतिशत्रु। यदि कोई ग्रह तात्कालिक और निसर्ग-मैत्री चक्र दोनों में किसी ग्रह का मित्र रहता है तो उसे अतिमित्र की संज्ञा दी जाती है।

जब कोई ग्रह किसी ग्रह की निसर्ग मैत्री में सम और तात्कालिक मैत्री में मित्र हो तो उसे मित्र की संज्ञा दी जाएगी। जब वह ग्रह निसर्ग-मैत्री से मित्र और तात्कालिक मैत्री से शत्रु हो तो उसे सम की संज्ञा दी जाएगी।

जब वही ग्रह निसर्ग-मैत्री चक्र में सम और तात्कालिक-मैत्री चक्र में शत्रु हो तो शत्रु और निसर्ग-मैत्री एवं तात्कालिक-मैत्री दोनों में शत्रु हो तो उसे ग्रह को अतिशत्रु संज्ञा दी जाएगी।

उपरोक्त कथन को सूत्र रूप में इस प्रकार समझना चाहिए।

मित्र+मित्र=अतिमित्र
मित्र+शत्रु=सम
मित्र+सम=मित्र
शत्रु+मित्र=सम
शत्रु+सम=शत्रु
शत्रु+शत्रु=अतिशत्रु

पंचधा मैत्री चक्र में ग्रहों का बल निम्न रूपेण माना गया है।

	कलादि बल
अतिमित्र=	22/30/0
मित्र=	15/0/0
सम=	7/30/0
शत्रु=	3/45/0
अतिशत्रु=	1/52/00
अपने ही भावों में हो तो=	30/0/0
उच्च का हो तो=	60/0/0
मूल त्रिकोण में हो तो=	45/0/0

दशवर्ग साधन

पीछे हम पंचधा मैत्री चक्र बनाना सीख चुके हैं। इसमें किस ग्रह का कितना बल होता है यह भी मालूम कर चुके हैं। आगे उसी विधि से ग्रहों का बल निकालना सीखेंगे। कोई ग्रह लग्न, होरा, द्रेष्काण आदि में पंचधा

मैत्री के अनुसार अपने स्वस्थान-शत्रुग्रही-मित्रग्रही आदि के विचार से जिस भाव में स्थित है उसके अनुसार बल का विचार करना भी जन्मपत्रिका में आवश्यक होता है। जैसे कोई ग्रह लग्न में या अन्य वर्ग में अधिशत्रु ग्रही है तो उसका बल पंचधा मैत्री चक्र के अनुसार 1/52 होगा। इसी प्रकार पंचधा मैत्री के अनुसार कुण्डली में स्थित सभी ग्रहों का प्रत्येक वर्ग में बल निकाला जाता है।

दशवर्ग में ग्रह (लग्न) होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, दशमांश, षोडशांश एवं षष्ट्यंश मान गए हैं।

अब हम उदाहरण कुण्डली का दशवर्ग चक्र बनाते हैं।

कुण्डली में सूर्य वृष राशि में है, वृष राशि का स्वामी शुक्र है तथा पंचधा मैत्री के अनुसार शुक्र सूर्य का सम ग्रह है। सम ग्रह का बल होता है 7/30/0, अतः ग्रह में सूर्य का बल 7/30/0 हुआ।

होरा कुण्डली में सूर्य सिंह राशि में है व सिंह सूर्य की अपनी राशि है, अतः सूर्य का बल 30/0/0 हुआ।

द्रेष्काण कुण्डली में सूर्य मकर राशि में है व मकर राशि का स्वामी है शनि। शनि पंचधा मैत्री के अनुसार सूर्य का सम है, अतः सूर्य का बल 7/30/0 हुआ।

सप्तमांश में सूर्य वृष राशि का है। वृष का स्वामी शुक्र पंचधा मैत्री के अनुसार सूर्य का सम है, अतः सूर्य बल 7/30/0 हुआ।

नवमांश कुण्डली में सूर्य कन्या राशि में है। पंचधा मैत्री के अनुसार कन्या राशि का स्वामी बुध सूर्य का मित्र है, अतः बल 15/0/0 हुआ।

द्वादशांश में सूर्य मेष राशि में है, मेष राशि का स्वामी मंगल पंचधा मैत्री के अनुसार सूर्य का अधिमित्र है, अतः बल 22/30/0 हुआ।

त्रिशांश कुण्डली में सूर्य वृश्चिक राशि का है, वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल सूर्य का अधिमित्र है, अतः बल 22/30/0 हुआ।

दशमांश कुण्डली में सूर्य तुला राशि में है। तुला राशि का स्वामी शुक्र पंचधा मैत्री के अनुसार सूर्य का सम है, अतः सूर्य का बल 7/30/0 हुआ।

षोडशांश कुण्डली में सूर्य वृश्चिक राशि में है। वृश्चिक का स्वामी मंगल सूर्य का अतिमित्र होने से सूर्य का बल 22/30/0 हुआ।

॥ दशवर्गी बलबोधक चक्र ॥

वर्ग	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गृह	शु सम 7′/30″	बुध अ० मि० 22′/30″	सू अ० मि० 22′/30″	बु स्व 30/0	बु अ० शत्रु 1′/52″	चं सम 7′/30″	सू सम 7′/30″
होरा	सू स्व 30′/0	सू सम 7′/30″	सू अ० मि० 22′/30″	सू अ० मि० 22′/30″	चं अ० मि० 22′/30″	चं सम 7′/30″	सू सम 7′/30″
द्रेष्काण	श सम 7′/30″	श मित्र 15′/0″	सू अ० मि० 22′/30″	बु स्व 30′/0″	शु सम 7′/30″	च सम 7′/30″	सू सम 7′/30″
सप्तमांश	शु सम 7′/30″	शु मित्र 15′/0″	बु सम 7′/30″	बु स्व 30′/0″	शु सम 7′/30″	श अ० मि० 22′/30″	सू सम 7′/30″
नवमांश	बु मित्र 15′/0″	मं मित्र 15′/0″	बु सम 7′/30″	शु अ० मि० 22′/30″	गु स्व 30′/0″	सू सम 7′/30″	मं अ० शत्रु 1′/52″

वर्ग	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
द्वादशांश	मं अ० मि० 22′/30″	श मित्र 15′/0″	शु मित्र 15′/0″	बु स्व 30′/0″	श मित्र 15′/0″	सू सम 7′/30″	सू सम 7/′″30
त्रिशांश	मं अ० मि० 22′/30″	बु अ० मि० 22/30	श शत्रु 3′/45″	मं मित्र 22′/30″	बु अ० शत्रु 1′/52″	शु स्व 30′/0″	मं अ० शत्रु 1′/52″
दशमांश	शु सम 7′/30″	सू सम 7′/30″	शु मित्र 22′/30″	बु स्व 30′/0″	गु स्व 30′/00″	मं मित्र 22′/30″	सू सम 7′/30″
षोडशांश	मं० अ० मि० 22′/30″	शु मित्र 15′/0″	मं स्व 30′/00	गु शत्रु 3′/45″	बु अ० शत्रु 1′/52″	बु अ० मि० 22′/30″	बु अ० मि० 22′/30″
षष्ट्यंश	मं अ० मि 22′/30″	बु अ० मि० 22′/30″	बु सम 7′/30″	बु स्व 30′/0″	चं अ० मि० 22′/30″	मं मित्र 15′/0″	गु मित्र 15′/0″
योग	2°/45′/0″	2°/37′/30″	2°/41′/15″	4°/11′/15″	2°/28′/36″	2°/30′/0″	1°/25′/14″

षष्ट्यंश कुण्डली में सूर्य मेष में है। मेष राशि का स्वामी मंगल, सूर्य का अतिमित्र है, अतः सूर्य का बल 22/30/0 हुआ।

इस प्रकार दशवर्ग में सूर्य का बल हुआ 2 अंश 45 कला। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का बल भी निकाल लेना चाहिए।

पहले जो दशवर्ग चक्र बनाया है उसी के अनुसार दशवर्ग बल स्पष्ट किया जाएगा। इसमें जन्म के समय ग्रहों के बल का योग कर लेते हैं, जिससे हम कुण्डली के बल का मूल्यांकन कर सकते हैं।

दशवर्ग चक्र में गृह में सूर्य का बल 7′/30″ चन्द्र का 22′/30″ मंगल का 22′/30″ बुध का 30′/0″ गुरु का 1′/52″ शुक्र का 7′/30″ एवं शनि का 7′/30″ है। इनका योग किया तो योगफल आया 1°/39′/22″ यानि एक अंश उन्तालीस कला और बाईस विकला।

इसी प्रकार अन्य वर्गों के बल का भी योग कर लेना चाहिए ताकि उस वर्ग का पूर्ण बल ज्ञात हो जाए। उदाहरण कुण्डली का दशवर्ग चक्र निम्नरूपेण बनेगा।

॥ दशवर्ग बल चक्रमिदम् ॥

वर्ग	गृह	होरा	द्रेष्काण	सप्तमांश	नवमांश
बल	1° 39′ 22″	2° 0′ 0″	1° 37′ 30″	1° 37′ 30″	1° 39′ 52″

वर्ग	द्वादशांश	त्रिशांश	दशमांश	षोडशांश	षष्ट्यंश
बल	1° 52′ 30″	1° 45′ 39″	2° 7′ 30″	1° 59′ 57″	2° 15′ 0″

पारिजातादि संज्ञा-विचार

पारिजातादि संज्ञा ज्ञात करने के लिए दशवर्ग चक्र को उपयोग में लाया जाता है। इसकी विधि है—जो ग्रह, अपने गृह, उच्च के ही गृह या मित्र गृही होता है उसे स्वक्षादि संज्ञा दी जाती है। जो ग्रह दो बार स्वक्षादि हो उसे पारिजात, तीन बार होने से उत्तम, चार बार होने से गोपुर, पांच बार से देवलोक, आठ से ब्रह्म लोक, नौ से ऐरावत और दस बार होने से श्रीधाम संज्ञा होती है।

उदाहरण कुण्डली का पारिजातादि संज्ञाचक्र नीचे लिखे अनुसार बनेगा।

॥ पारिजातादि संज्ञा चक्रमिदम् ॥

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
संज्ञा	पारावत	ब्रह्मलोक	पारावत	ऐरावत	सिंहासन	सिंहासन	पारिजात

चरकारक साधन

चरकारक साधन करने के लिए ग्रह स्पष्ट चक्र को ही माध्यम बनाया जाता है। राशि को छोड़कर मात्र अंशों को लेते हैं। जिस ग्रह के अंश सबसे अधिक होते हैं, उसे आत्मकारक ग्रह कहा जाता है। उससे कम अंशों वाला ग्रह अमात्यकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह भ्रातृकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह मातृकारक, उससे कम अंशों वाला ग्रह पुत्रकारक, उससे कम अंशों वाला जातिकारक तथा सबसे कम अंशों वाला ग्रह स्त्रीकारक माना जाता है।

उपरोक्त विवेचन को यदि हम उदाहरण पर घटित करें तो चरकारक चक्र निम्न प्रकार बनेगा।

॥ चरकारक चक्रमिदम् ॥

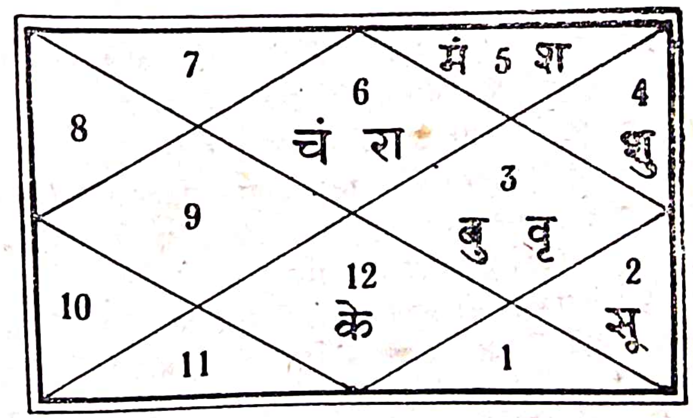
ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
स्पष्ट अंश	29°	10°	4°	0°	18°	4°	2°
कलादि	50′	44′	6′	16′	34′	45′	14′
	आत्म-कारक	भ्रातृ-कारक	पुत्र-कारक	स्त्री-कारक	अमात्य-कारक	मातृ-कारक	जाति-कारक

कारकांश कुण्डली साधन

कारकांश चक्रमिदम् बनाने की विधि यह है कि आत्मकारक ग्रह नवांश कुण्डली के जिस भाव में होता है, उसी भाव की राशि का कारकांश लग्न माना जाता है। ग्रहों की स्थापना चन्द्र कुण्डली के अनुसार की जाती है यानि चन्द्र कुण्डली में जिस-जिस राशि में ग्रह स्थित होते हैं वैसे ही लिख दिए जाते हैं।

उदाहरण में सूर्य आत्मकारक ग्रह है और नवांश कुण्डली में सूर्य कन्या राशि में है, अतः कारकांश लग्न कन्या राशि का ही होगा।

॥ कारकांश चक्रमिदम् ॥

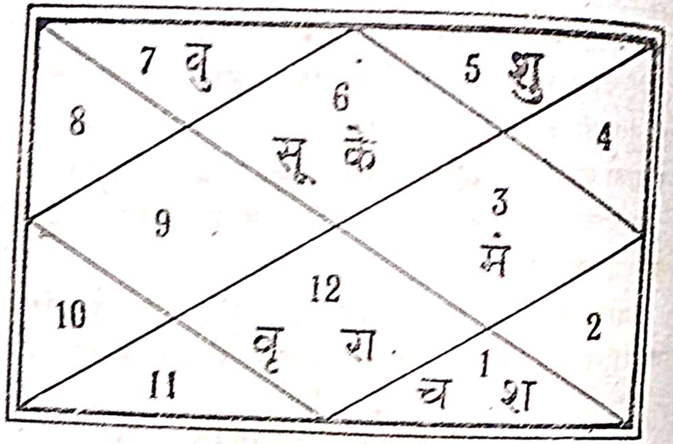


श कुण्डली

कारकांश कुण्डली के पश्चात् स्वांश कुण्डली बनाई जाती है। कार-

वांश कुण्डली का जो लग्न होता है, वही लग्न स्वांश कुण्डली का भी ग्रहण करता है। स्वांश कुण्डली और कारकांश कुण्डली में मात्र ग्रहों के स्थान में अन्तर रहता है। कारकांश कुण्डली में जन्म लग्न जिस प्रकार की ग्रह स्थिति होती है तो नवमांश कुण्डली की भांति वही ग्रह स्थिति स्वांश में भी रहती है। नीचे उदाहरण लग्न का स्वांश चक्रमिदम् स्पष्ट करते हैं।

॥ स्वांश चक्रमिदम् ॥

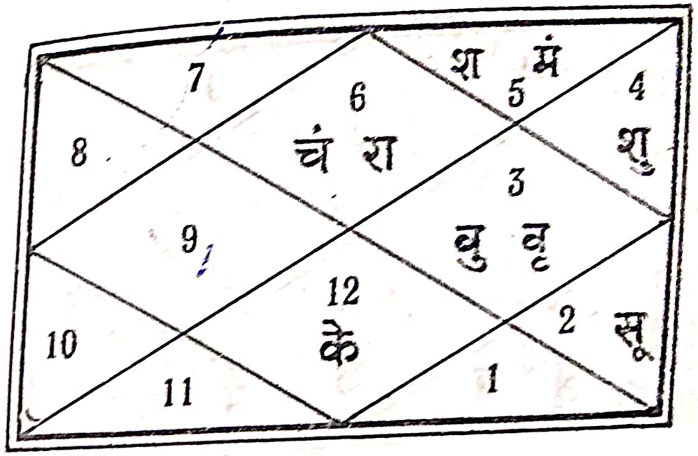


पदलग्न कुण्डली

स्वांश चक्र के पश्चात् पदलग्न कुण्डली भी बनाई जाती है। पदलग्न कुण्डली को जन्मकुण्डली के आधार पर ही बनाया जाता है। इसे बनाने का सूत्र यह है कि लग्न से लग्नेश जिस स्थान पर स्थित होता है, लग्नेश से उतने स्थान बाद की राशि का लग्न पदलग्न होगा। मान लीजिए लग्नेश सप्तम भाव में है तो लग्न प्रथम भाव होगा। यदि लग्नेश अष्टम भाव में है तो तीसरे भाव की राशि का पदलग्न होगा।

लग्न के पश्चात ग्रहों को उन्हीं राशियों में लिख देते हैं जिनमें वे ग्रह लग्नकुण्डली में होते हैं। पूर्व उदाहरण की लग्न मीन है और लग्नेश गुरु चौथे स्थान में मिथुन राशि का है। चूंकि लग्न से लग्नेश चतुर्थ स्थान पर है, अतः लग्नेश से चतुर्थ स्थान यानि सप्तम स्थान की राशि कन्या ही पदलग्न रहेगा।

॥ पदलग्न चक्रमिदम् ॥



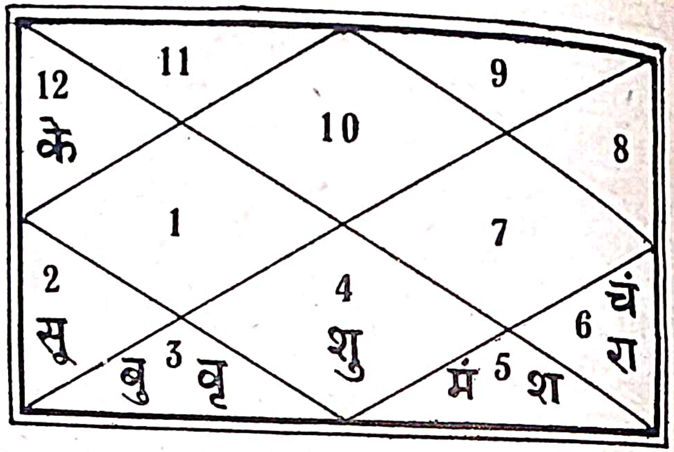
उप पदलग्न साधन

जन्मपत्रिका में पदलग्न के पश्चात उप पदलग्न चक्र बनाया जाता है। इसको बनाने के लिए भी जन्मकुण्डली को आधार माना जाता है। पदलग्न में लग्नेश को लेकर लग्नसाधन किया था। यहां द्वादशेष को लेकर साधन किया जाता है। उप पदलग्न बनाने का सूत्र इस प्रकार है।

यदि द्वादशेष द्वादश भाव में हो तो द्वादश भाव की राशि उप पदलग्न, द्वादशेष लग्न में हो तो दूसरे भाव की राशि उप पदलग्न अर्थात द्वादशेष द्वादश भाव से जिस भाव में होगा उस भाव से उतने भावपर्यन्त राशि का उप पदलग्न होगा।

उदाहरण कुण्डली में शनि द्वादशेष होकर छठे भाव में सिंह राशि का है, अतः उप पदलग्न एकादश भाव की राशि मकर होगी।

॥ उप पद लग्न चक्रमिदम् ॥



होरा लग्न साधन

होरा लग्न साधन की गणितात्मक विधि यह है कि इष्टकाल के घटी व पलों को 2 से गुणा करके 5 का भाग दें तो लब्धितुल्य राशि, शेष को 60 से गुणा कर पलों को जोड़कर 10 का भाग दें तो लब्धितुल्य अंश, शेष को 6 से गुणा कर लें तो फलादि प्राप्त होगी। इन प्राप्त राशि, अंश, कला में सूर्य स्पष्ट को जोड़ दिया जाये तो योगतुल्य होरा लग्न होगा। होरा लग्नचक्र में शेष ग्रहों की स्थिति जन्मकुण्डली के अनुसार ही रहती है।

पूर्व उदाहरण में इष्टकाल = 50 घटी 20 पल

इसे 2 से गुणा करके 5 का भाग दिया = $\frac{100.40}{5}$

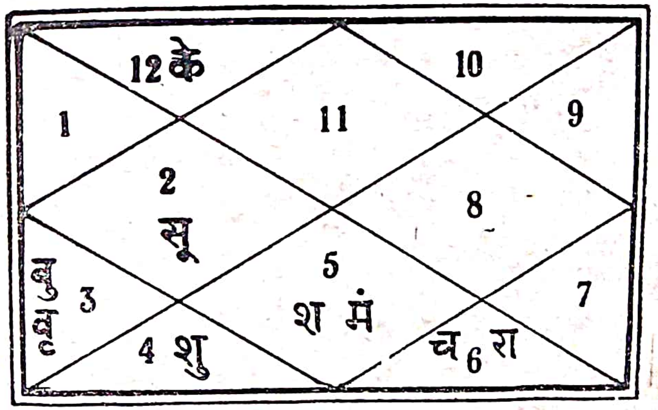
```
      20
 5) 100.40
    100
      0
 ×   60
     0+40
10)  40 (4
     40
      ×
```

रा	अं
20	4
− 12	0
8	4

8 राशि 4 अंश में सूर्य स्पष्ट जोड़ा

सूर्य स्पष्ट	1.29 50.14	
	8. 4 0 0	
	10. 3 50.14	होरा लग्न

॥ होरा लग्न चक्रमिदम् ॥



ग्रहबल विचार

जन्मकुण्डली का यथार्थ फलकथन करने के लिए ग्रहबल पर विचार करना भी अति आवश्यक है। ग्रहबल छः प्रकार का माना गया है (इसे ही षड्बल साधन भी कहते हैं)

1. **स्थानबल**—पांच प्रकार के बलों का योग स्थानबल कहलाता है। ये पांच बल हैं उच्च बल, सप्तवर्गी बल, भांश बल, (युग्मायुग्म बल), केन्द्र बल, द्रेष्काण बल।

2. **दिग्बल।**

3. **कालबल**—यह चार बलों का योग होता है। ये चार प्रकार के बल हैं—नतोन्नत बल, पक्ष बल, दिवा-रात्रि त्रिभाग बल तथा वर्ष आदि बल (समाधि बल)।

4. **चेष्टा बल।**

5. **नैसर्गिक बल।**

6. **दृग्बल।**

1. स्थान बल साधन

उच्च बल—ग्रह के उच्च या नीच स्थान के अनुसार ही बल का भी विचार किया जाता है। जो ग्रह उच्चांशों में होता है, वह पूर्णबली ग्रह माना जाता है और जो नीचांशों में होता है वह बलहीन होता है। ग्रह के उच्चांशों और नीचांशों में 6 राशि का अन्तर रहता है अर्थात कोई उच्च का ग्रह जिस राशि में होता है उससे सातवीं राशि में नीच का या बलशून्य हो जाता है।

बल साधन करने के लिए ग्रह का पूर्ण बल एक अंश माना गया है।

उच्च बल साधन करने की गणितात्मक विधि यह है कि ग्रह स्पष्ट में से ग्रह का नीचांश घटा देना चाहिए। यदि घटाते समय ग्रह स्पष्ट की राशि में से नीचांश न घटे तो ग्रह स्पष्ट में 12 राशि जोड़कर घटा लेना चाहिए। शेष यदि 6 राशि से अधिक हो तो पुनः 12 से घटाना चाहिए एवं शेष को 3 से भाग देना चाहिए।

॥ उच्च-नीच राशि अंश बोधक सारणी ॥

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रह
राशि	0	1	9	5	3	11	6	2	8	उच्च
अंश	10°	3	28	15	5	27	20	0	0	
राशि	6	7	3	11	9	5	0	8	2	नीच
अंश	10°	3	28	15	5	27	20	0	0	

दूसरी विधि यह है कि ग्रह के स्पष्ट में से ग्रह के नीचांश घटा लेने चाहिएं। यदि शेष 6 राशि से अधिक है तो पुनः 12 में से घटाकर शेष की विकला बना लेनी चाहिएं तथा उन विकलाओं को 10800 पर भाग देना चाहिए। लब्धितुल्य कलादि होगी। शेष को 60 से गुणा करके 10800 का भाग देना चाहिए। लब्धि तुल्य विकलादि होंगी। इन कलादि के अंशादि बना लें। उदाहरण कुण्डली पर उपरोक्त विवेचन को घटित करते हैं।

सूर्य

सूर्य स्पष्ट = 1. 29. 50. 14

सूर्य के नीचांश ऋण किये = —6. 10. 0. 0

7. 19. 50. 14

शेष चूंकि 6 राशि से अधिक है, अतः इसे 12 में से घटाया—

12. 0. 0. 0
7. 19. 50. 14
4. 10. 9. 46 — शेष की विकला वनाईं

×30

120+10=130

×60

7800+9=7809

×60

468540+46=468586 विकलायें

468586÷10800=43.′ 23″

10800) 468586 (43
43200
36586
32400
4186
×60
10800) 251160 (23
21600
35160
32400
2760 शेष त्याज्य सूर्य का उच्च वल = 0°/43′/23″

0 अंश 43 कला 23 विकला

चन्द्र

चन्द्र स्पष्ट= 5. 10. 24. 48

नीच राश्यंश ग्रहण किये —7. 3. 0. 00

10. 7. 24. 48

6 राशि से अधिक होने से 12 में से घटाया

12. 0. 0. 0
—10. 7. 24. 48
1. 22. 25. 12

×30

30+22=52. 35. 12+3 — पहली रीति से

3) 52.35 (17
3
22
21
1
×60
60
+35
3) 95 (31
9
5
3
2 त्याज्य

चन्द्र उच्च वल = $0^0/17'/31''$

इसी प्रकार अन्न ग्रहों का उच्च बल निकाल लेना चाहिए। उदाहरण का उच्च वल चक्र निम्न प्रकार बनेगा।

॥ ग्रह उच्च बल चक्रमिवम् ॥

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	अंश
43	17	2	25	54	27	34	27	27	कला
23	31	57	5	31	25	5	15	15	विकला

सप्तवर्गी बल

सप्तवर्ग में गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश एवं त्रिशांश आते हैं। पीछे हमने दशवर्ग बल साधन किया था। उसी में से हम उपरोक्त सातों वर्गों का बल लेकर सप्तवर्ग बल चक्रमिदम् बनाते हैं।

।। सप्तवर्गी बल चक्रमिदम् ।।

गृह	होरा	द्रेष्काण	सप्तमांश	ग्रहवर्ग
1	2	1	1	अंश
39	0	37	37	कला
22	0	30	30	विकला

नवमांश	द्वादशांश	त्रिशांश	ग्रहवर्ग
1	1	1	अंश
39	52	35	कला
30	30	39	विकला

भांश या युग्मायुग्म बल

स्थान बल के अन्तर्गत यह तीसरा बल है। इस बल का साधन करने के लिए ग्रहों को स्त्री-पुरुष संज्ञा दी जाती है। ज्योतिष में चन्द्र और शुक्र को स्त्री संज्ञक ग्रह माना गया है। सूर्य, मंगल एवं गुरु को पुरुष संज्ञक तथा बुध एवं शनि को नपुंसक ग्रह माना है, किन्तु भांश बल साधन करने के लिए हम स्त्री व पुरुष, ये दो संज्ञाएं ही ग्रहों की मानेंगे। नपुंसक ग्रहों को भी पुरुष ग्रह मान लिया जाएगा।

राशियों में भी सम राशियां जैसे वृष, कर्क, कन्या आदि स्त्री संज्ञक और विषम राशियां जैसे मेष, मिथुन, सिंह आदि पुरुष संज्ञा वाली मानी जाती हैं। स्त्री ग्रह, सम राशि (स्त्री संज्ञक) में बलवान और पुरुष ग्रह विषम राशि (पुरुष संज्ञक) में बलवान होते हैं।

भांश बल निकालने के लिए लग्न कुण्डली को ही आधार माना जाता है। महर्षि पराशर जी के मत से जो ग्रह राशि और नवांश दोनों में—स्त्री ग्रह स्त्री संज्ञक राशि में तथा पुरुष ग्रह पुरुष संज्ञक राशि में—अपनी संज्ञा वाली राशियों में हों तो 15 कला बली ग्रह माना जाएगा अन्यथा वह शून्य बली होगा, किन्तु केशवाचार्य जी के मत से ग्रह कुण्डली या नवमांश किसी एक में भी अपनी संज्ञा वाली राशि में हो तो 15 कला वाला बली होगा। यदि दोनों में (कुण्डली एवं नवमांश) हो तो 30 कला वाला बली माना जाएगा।

हम महर्षि पराशर जी के मत से ही भांश बल साधन करते हैं।

कुण्डली में सूर्य सम राशि तथा नवांश में भी सम राशि में ही है। सूर्य पुरुष ग्रह है और स्त्री संज्ञक राशि में है। अतः शून्य बली हुआ। 0/0/0

चन्द्र स्त्री संज्ञक ग्रह है। कुण्डली (लग्न) में सम राशि तथा नवांश चक्र में विषम राशिस्थ होने से शून्य बली रहेगा। 0/0/0

बुध जन्मकुण्डली में विषम राशिस्थ तथा दशमांश में भी विषम राशिस्थ है, अतः 15 कला बली माना जाएगा। 0/15/0

मंगल जन्मकुण्डली और नवमांश दोनों में ही विषम राशिस्थ है, अतः 15 कला बली रहेगा। 0/15/0

गुरु लग्नकुण्डली में विषम राशि का तथा नवमांश में सम राशि का है, अतः शून्य बली रहेगा। 0/0/0

शुक्र लग्नकुण्डली में सम राशि तथा नवमांश में विषम राशिस्थ है, अतः शून्य बली माना जाएगा। 0/0/0

शनि लग्न कुण्डली और नवमांश दोनों में विषम राशिस्थ है, अतः इसका बल 15 कला रहेगा। 0/15/0

।। भांश (युग्मायुग्म) बल चक्रमिदम् ।।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अंश
0	0	15	15	0	0	15	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

केन्द्रादि बल साधन

स्थान बल में यह चौथा बल है। इसका सूत्र यह है कि ग्रह केन्द्र में पूर्ण बली, पणफर में आधा और आपोक्लिम में चौथाई बली माना जाता है।

कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम स्थान केन्द्र स्थान, द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश पणफर तथा तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश स्थान आपोक्लिम कहे जाते हैं।

केन्द्र में ग्रह का बल 1° अंश, पणफर में 30′ कला और आपोक्लिम में 15′ कला बल होता है।

उदाहरण कुण्डली में सूर्य तृतीय स्थान में है, अतः सूर्य का 15′ बल हुआ। चन्द्रमा सप्तम स्थान केन्द्र में है, अतः चन्द्रमा का 1° अंश बल हुआ। मंगल षष्ठ स्थान आपोक्लिम में होने से 15′ कला बली हुआ।

बुध केन्द्र स्थान (चतुर्थ) में होने से 1″ बली हुआ।

गुरु भी चतुर्थ (केन्द्र) स्थान में है, अतः 1″ बली हुआ।

शुक्र पंचम स्थान (पणफर) में है, 30′ कला बली हुआ।

शनि षष्ठ स्थान में होने से 15′ कला बल ही प्राप्त कर सका।

।। केन्द्रादि बल चक्रमिदम् ।।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
0	1°	0	1°	1°	0	0	अंश
15′	0	15′	0	0	30′	15′	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

द्रेष्काण बल साधन

स्थान बल में यह पांचवां बल है। सप्तवर्गी बल में ही हम द्रेष्काण बल साधन कर चुके हैं, उसी के अनुसार ग्रहों का बल विचार किया जाएगा। यह हम जानते ही हैं कि एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। द्रेष्काण बल साधन करने का सूत्र यह है कि प्रथम द्रेष्काण में पुरुष ग्रह यानि सूर्य, मंगल व गुरु बली होते हैं। दूसरे द्रेष्काण में नपुंसक ग्रह यानि बुध व शनि

बलवान रहते हैं तथा तीसरे द्रेष्काण में स्त्री ग्रह चन्द्र एवं शुक्र बली माने जाते हैं।

उदाहरण कुण्डली में सूर्य तृतीय द्रेष्काण में है अतः शून्य बली हुआ, स्व द्रेष्काण में होने से ग्रह 15′ कला बली अन्यथा शून्य बली होता है।

चन्द्रमा द्वितीय द्रेष्काण में है, अतः शून्य बली हुआ।

मंगल प्रथम द्रेष्काण में है, अतः 15′ कला बली रहा।

बुध प्रथम द्रेष्काण में है, अतः शून्य बली रहेगा।

गुरु द्वितीय द्रेष्काण में होने से शून्य बली रहेगा।

शुक्र प्रथम द्रेष्काण में होने से शून्य बली रहेगा।

शनि प्रथम द्रेष्काण में होने से शून्य बली रहेगा।

।। द्रेष्काण बल चक्रमिदम् ।।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अंश
0	0	15′	0	0	0	0	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

पहले हमने जो उदाहरण लिया है उसका स्थान बल चक्र पृष्ठ 168 पर दिया जा रहा है। इसमें उच्च बल, सप्तवर्गी बल, केन्द्र बल एवं द्रेष्काण आदि बलों का योग रहता है।

दिग्बल साधन

दिग्बल साधन में स्थित प्रत्येक ग्रह के बल पर विचार किया जाता है। ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह और भाव की दिशाएं निश्चित रहा करती हैं। जब ग्रह और उस भाव की (जिसमें ग्रह स्थित है) एक ही दिशा हो तो ग्रह पूर्णबली माना जाता है। अन्यथा होने से उसी अनुपात से बल कम होता जाता है। यह हम पहले ही जान चुके हैं कि ग्रह केन्द्र में बलवान होता है। किस केन्द्र में कौन-सा ग्रह बलवान होता है, यह पृष्ठ 169 पर दिए गए चक्र से भली-भांति ज्ञात हो जाएगा।

।। स्थान बल चक्रमिदम् ।।

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
उच्च बल	0°	0	0	0	0	0	0	अंश
	43′	17′	2′	25′	54′	27′	34′	कला
	23″	31′	57″	5″	31″	25″	5″	विकला
सप्तवर्गी बल	1°	1°	1°	3°	1°	1°	0°	अंश
	53′	52′	41′	7′	34′	30′	40′	कला
	30″	30″	15″	30″	14″	0″	14″	विकला
भांश बल	0	0	0	0	0	0	0	अंश
	0	0	15′	15′	0	0	15′	कला
	0	0	0	0	0	0	0	विकला
केन्द्रादि बल	0	1°	0	1°	1°	0	0	अंश
	15′	0	15′	0	0	30′	15′	कला
	0	0	0	0	0	0	0	विकला
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0	अंश
	0	0	15′	0	0	0	0	कला
	0	0	0	0	0	0	0	विकला
योग स्थान बल	2°	3°	2°	4°	3°	2°	1°	अंश
	51′	10′	29′	47′	28′	27′	44′	कला
	53″	1″	12″	35″	45″	25″	19″	विकला

।। ग्रह-भाव दिशा चक्र ।।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रहदिशा	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	पूर्व	उत्तर	पश्चिम
भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	लग्न	लग्न	चतुर्थ	सप्तम
भावदिशा	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	पूर्व	उत्तर	पश्चिम

ऊपर वाले चक्र में जिस प्रकार की गई स्थिति दी है, यदि जन्म लग्न में भी ग्रह की यही स्थिति हो तो वह पूर्ण बली माना जाएगा। यदि वह बली स्थान से 6 राशि आगे चला जाएगा तो निर्बली अर्थात शून्य बल वाला होगा, दिग्बल निकालने का सूत्र यह है, सूर्य व मंगल स्पष्ट में से चतुर्थ भाव स्पष्ट निकालने से सूर्य व मंगल का दिग्बल निकल आएगा। बुध व गुरु स्पष्ट में से सप्तम भाव घटाने से बुध व गुरु का दिग्बल प्राप्त होगा। चन्द्र व शुक्र स्पष्ट में से दशम भाव कम कर देने से चन्द्र व शुक्र का दिग्बल तथा शनि स्पष्ट में से लग्न स्पष्ट घटा देने से शनि का दिग्बल निकल आएगा। ग्रह स्पष्ट में से ग्रह के निर्बली स्थान स्पष्ट को घटाने से जो संख्या बचती है उसके अंश बनाकर 3 का भाग देने से ग्रह का दिग्बल मिल जाता है। यदि शेष संख्या 6 राशि, अधिक हो तो 12 में से शेष को घटाकर जो शेष बचे उसके अंश बनाकर तीन का भाग देना चाहिए।

उदाहरण कुण्डली सूर्य स्पष्ट में से = 1.29.50.14
चतुर्थ भाव कम किया = —2.16.19.51
11.13.30.23

चूंकि शेष 6 राशि से अधिक है, अतः 12 में से घटाया
12. 0. 0. 0
11.13.30.23
0.16.29.37 ÷ 3 = 5.29.52

सूर्य बल = 5 कला, 29 विकला तथा 52 प्रतिविकला

चन्द्र स्पष्ट = 5.10.44.48
दशम भाव कम किया = —8·16.19.51

8.24.24.57

6 राशि से अधिक शेष होने से 12 में से घटाया

12. 0. 0. 0
8.24.24.57

3. 5.35. 3
×30

90+5=95

95.35.3÷3=31.51.41

चन्द्र बल=31 कला, 51 विकला तथा 41 प्रतिविकला

मंगल स्पष्ट = 4. 6.51.35
चतुर्थ भाव कम किया = —2.16.19.51

1.20.31.44

×30

30+20=50.31.44

50.31.44÷3=16.50.35

मंगल बल=16 कला, 50 विकला तथा 35 प्रति विकला

बुध स्पष्ट = 2. 0.16.24
सप्तम भाव कम किया = —5.21.32. 3

8. 8.44.21

6 राशि से अधिक होने से 12 में से शेष को घटाया

12 0 .0 .0
— 8. 8.44 .21

3.21.15.39
×30

90+21=111.15.39÷3=37.5.13

बुध बल=37 कला, 5 विकला और 13 प्रति विकला

गुरु स्पष्ट = 2.18.34.8
सप्तम भाव स्पष्ट कम किया = —5.21.32.8

8.27 .2.5

6 राशि से शेष अधिक है, अतः 12 में से घटाया

12.0.0.0
— 8.27.2.5

3.2.57.55
×30

90 + 2=92.57.55÷3=30.59.18

गुरु बल=30 कला, 59 विकला तथा 18 प्रति विकला

शुक्र स्पष्ट = 3. 4.45.35
दशम भाव को घटाया = — 8.16.19.51

6.18.25.44

6 राशि से शेष अधिक है, अतः 12 में से घटाया

12. 0. 0. 0
— .6.18.25.44

·5.11.34.16
×30

150+11=161.34.16÷3=57.11.25

शुक्र बल=57 कला, 11 विकला तथा 25 प्रतिविकला

शनि स्पष्ट = 4. 2.14.36
लग्न भाव घटाया = —11.21.32. 3

4.10.42.33
×30

120+10=130.42.33÷3=43.34.11

शनि बल=43 कला, 34 विकला 11 प्रतिविकला

।। ग्रह दिग्बल चक्रमिदम् ।।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
5	31	16	37	30	57	43	कला
29	51	50	5	59	11	34	विकला
52	41	35	13	18	25	11	प्रतिविकला

कालबल साधन

चार प्रकार के बलों को मिलाकर कालबल बनता है। नतोन्नत बल पक्षबल, दिन-रात्रि त्रिभागबल और समाधिबल। समय के अनुसार जो ग्रह का बल रहता है, वही कालबल कहा जाता है।

नतोन्नत बल साधन

नत का विचार मध्याह्न काल एवं उन्नत का विचार अर्द्धरात्रि काल से किया जाता है। नत और उन्नत के विचार से ग्रह का जो बल निकाला जाता है वह नतोन्नत बल कहा जाता है।

चन्द्र, मंगल व शनि ये तीनों ग्रह रात्रिकाल में बली एवं अर्द्धरात्रिकाल में पूर्ण बली तथा दिन को बलहीन होते हैं। मध्याह्न में ये शून्यबली कहे जाते हैं।

इनका नतोन्नत बल निकालने की गणितात्मक विधि यह है कि जितना इष्टकाल हो उससे मध्याह्न (नत) अन्तर निकालकर बल निकालते हैं। 30 घटी में पूर्णनत बल 60′ कला माना जाता है। इष्ट नत में कितना बल होगा। इस प्रकार नत को 30 पर भाग देने से चन्द्र, मंगल व शनि का नतोन्नत बल निकल आता है।

सूर्य, शुक्र एवं गुरु ये तीनों ग्रह मध्याह्न में पूर्णबली, रात्रि में हीनबली तथा अर्द्धरात्रि में शून्यबली माने जाते हैं। इनका बल निकालने के लिए अर्द्धरात्रि के अन्तर (उन्नत) को लेना पड़ता है। उन्नत को 30 पर भाग देने से इन तीनों का बल प्राप्त हो जाता है।

बुध दिन और रात्रि दोनों कालों में बली होने से इसका एक अंश बल

सदैव बना रहता है।

उदाहरण में इष्टकाल=50 घटी 20 पल

दिनमान=34 घटी 32 पल

अर्द्ध रात्रि के पश्चात् का इष्टकाल होने से इसे 60 घटी में से घटाया

  60. 0
—50.20
  9.40 शेष

इसमें दिनार्ध जोड़ा$=\frac{\text{दिनमान}}{2}=\frac{34.32}{2}=$दिनार्ध

  9.40
+17.16
 26.56 पूर्वनत

30—पूर्वनत=पूर्वउन्नत=30.26.56=3.4 पूर्वउन्नत

सूर्य, गुरु व शनि का नतोन्नत बल=उन्नत×2=

60—पूर्व उन्नत×2=उन्नत बल

3·4×2=6′.8″ उन्नत बल

60—0—6.8=53′.53″ सूर्य, गुरु व शनि का बल

6′.8″ चन्द्र, शुक्र एवं मंगल का बल

60′.0 बुध का बल

।। नतोन्नत बलचक्र ।।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	अंश
53′	6′	6′	0	53′	6′	53′	कला
52″	8″	8″	0	52″	8″	52″	विकला

पक्षबल — कालबल का यह एक दूसरे प्रकार का बल होता है। किसी भी माह में दो पक्ष हुआ करते हैं, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। पक्ष के अनुसार भी प्रत्येक ग्रह के बलाबल का विचार किया जाता है। पक्ष चन्द्रमा से

सम्बन्धित होने से चन्द्रमा जब शुक्ल द्वितीया से बढ़ना प्रारम्भ होता है तो शुभ ग्रहों—बुध, गुरु, शुक्र—को बल प्रदान करता है व पाप ग्रहों—(सूर्य, मंगल, शनि—के बल को क्षीण करता है। पूर्णिमा को पूर्णतया शुभता प्रदान करने से शुभ ग्रहों का बल 60′ कला और पाप ग्रहों का बल 0′ कला हो जाता है।

पूर्णिमा के पश्चात् कृष्ण पक्ष की बारी आने से पापी ग्रह बली होने लगते हैं और शुभ ग्रह हीनबली होने लगते हैं। अमावस्या को पाप ग्रह पूर्ण बल (60′ कला) प्राप्त कर लेते हैं जबकि शुभ ग्रह शून्यबली हो जाते हैं।

पक्ष बल साधन करने के भिन्न-भिन्न आचार्यों के अपने-अपने मत हैं, लेकिन वे सब कठिन हैं। सबसे सरल रीति महर्षि पाराशर जी की है। इसमें चन्द्र स्पष्ट में से सूर्य स्पष्ट को घटाकर शेष के अंशादि बनाकर 3 से भाग दे देने पर शुभ ग्रहों का बल निकल आता है तथा इसे 60 में से घटा देने से पाप ग्रहों का बल निकल आता है। यदि चन्द्र स्पष्ट में से सूर्य स्पष्ट घटाने के पश्चात् 6 राशि से अधिक बचे तो शेष को 12 राशि में से घटाने के पश्चात् उपरोक्त क्रिया करें।

आइये, उपरोक्त विवेचन को उदाहरण पर घटित करें।

चन्द्र स्पष्ट = 5.10.44.48
सूर्य स्पष्ट घटाया = —1.29.50.14
3.10.54.34

इसके अंशादि बनाये ×30
90
+10
100 = 100. 54.34

100.54.34 ÷ 3 = 33.38.11

3) 100.54.34 (33
9
10
9
1
×60
60
+54
3) 114 (38
9
24
24
3) 34 (11
3
4
3
1 त्याज्य

शुभ ग्रह—चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र का बल = 33.38.11
पाप ग्रह—सूर्य, मंगल एवं शनि का बल = 60. 0. 0
—33.38.11
= 26.21.49

॥ पक्ष बल चक्रमिदम् ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
26	33	26	33	33	33	26	कला
21	38	21	38	38	38	21	विकला
49	11	49	11	11	11	49	प्रतिविकला

दिन-रात्रि त्रिभाग बल साधन

काल बल में यह तीसरे प्रकार का बल है। जब जन्म (दिवा या रात्रि-काल) हो तो उस काल के तीन भाग करके यह देखा जाता है कि जातक का जन्म किस भाग में हुआ है। उसी के अनुसार ग्रहों का बल भी निकाला जाता है।

प्रातःकाल में बुध बली होता है, मध्याह्न में सूर्य बली होता है, संध्या को शनि, रात्रि के प्रथम काल में चन्द्रमा तथा अर्द्धरात्रि के अन्तिम काल में मंगल बली होता है। गुरु दिन-रात सदैव बली रहता है।

इष्टकाल = 50.20
दिनमान घटाया = 34.32
15.48 शेष रात्रि

रात्रिमान = 60—दिनमान = 60—34.32 = 25.28 रात्रिमान

घटी पल विपल

25.28 ÷ 3 = 3 = 8. 29. 20 रात्रिमान का एक भाग

रात्रिमान का भी त्रिभाग करने पर एक भाग 8 घटी 29 पल और 20 विपल हुआ। जन्म के समय गत हुआ रात्रिमान था 15 घटी 48 पल। यह रात्रि के दूसरे भाग में है, अतः जन्म रात्रि के दूसरे विभाग में हुआ है। नियमानुसार रात्रि के दूसरे भाग में शुक्र को बल मिलता है 60′ कला तथा गुरु को छोड़कर (चूंकि गुरु दिन और रात में सदैव बली रहता है) बाकी ग्रहों का बल शून्य हो जाता है।

।। दिवारात्रि त्रिभाग बल चक्रमिदम् ।।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
0	0	0	0	1	1	0	अंश
0	0	0	0	0	0	0	कला

समाधि बल

काल बल के अन्तर्गत आने वाला यह चौथा बल है। यह भी चार

प्रकार के बलों को मिलाकर बनता है, होरा बल, दिनेश बल, मासेश बल और वर्षेश बल। समाधि बल जन्म-समय के अनुसार निकाला जाता है। सबसे पहले सबसे थोड़े समय बली रहने वाला माना गया है होरा बल। होरा से विचार करने पर होरेश का बल 1° अंश रहता है, चूंकि यही सबसे कम समय तक रहता है।

होरेश से अधिक समय तक रहने वाला है दिनेश, दिनेश को होरेश के बल का 3/4 मिलता है। दिनेश से अधिक समय तक रहने वाला है मासेश। इसे 30′ कला बल मिलता है। मासेश से अधिक समय तक रहता है वर्षेश। इसे 15′ कला बल मिलता है।

इस प्रकार होरेश, दिनेश, मासेश एवं वर्षेश ज्ञात करके उनका बल लिखते हैं।

होरेश—सम्पूर्ण-दिन-रात्रि का मान 60 घटी होता है। इस काल में सातों ग्रहों की होरा अपने क्रम से आती रहती हैं। एक होरा 1 घण्टे (ढाई घटी) का होता है। होरा का क्रम नीचे लिखे अनुसार है—

शनि—गुरु—मंगल—सूर्य – शुक्र—बुध—चन्द्र

जो दिन हो वही प्रथम होरा का स्वामी होता है। उसके पश्चात् उपरोक्त क्रम से होरा चलती रहती है। होरा निकालने की गणितात्मक विधि इस प्रकार है।

लग्न स्पष्ट—सूर्य स्पष्ट × 2 ÷ 7 = होरा

उदाहरण वाले जातक का जन्म बुधवार रात्रि काल में हुआ था।

लग्न स्पष्ट = 11.21.32. 3
सूर्य स्पष्ट घटाया = — 1.29.50.14
9.21.41.49
× 2
19.13.23.38
÷ 7 = 2 लब्धि = 6 शेष

जन्म दिन बुधवार है, 6 शेष बचे हैं। ऊपर वाले क्रम से गिनें तो प्रथम बुध, दूसरा चन्द्र, तीसरा शनि, चौथा गुरु, पांचवां मंगल और छठा आता है सूर्य, अतः उस दिन का होरेश सूर्य होगा। पीछे हमने जो होरा

कुण्डली बनाई है उसमें भी होरेश सूर्य ही है।

दिनेश — जिस दिन जन्म होता है उसी वार का स्वामी दिनेश माना जाता है तथा दिनेश को 45′ कला बल मिलता है। जन्म बुधवार को होने से दिनेश बुध है।

मासेश-वर्षेश

वर्षेश बल निकालने के लिए इष्टदिन का कलियुगाद्यहर्गण लाकर उसमें से 373 घटाकर शेष को 2520 पर भाग देना पड़ता है। जो शेष बचे उसे दो जगह रखकर, पहले स्थान की संख्या को 360 से भाग देना एवं दूसरे स्थान की संख्या को 30 से भाग देना पड़ता है। पहले स्थान की लब्धि को 3 से गुणा तथा दूसरे स्थान की लब्धि को 2 से गुणा करके गुणनफल में 1 जोड़कर 7 से भाग देने पर प्रथम स्थान का शेष वर्षपति तथा दूसरे स्थान का शेष मासपति होता है।

कलियुगाद्यहर्गण बनाने के लिए इष्ट शाके में 3179 जोड़ने पड़ते हैं। ये कलिगत वर्ष कहलाते हैं। कलिगत वर्षों को 12 से भाग देकर चैत्र से गिनती करके गत मास जोड़कर आई संख्या को तीन जगह रखना चाहिए। प्रथम स्थान की संख्या को 70 से भाग देकर जो लब्धि आये उसे दूसरे स्थान की संख्या में जोड़कर इस योगफल को 33 का भाग दें और प्राप्त लब्धि को तीसरे स्थान की संख्या में जोड़ दें। इस योगफल को 30 से गुणा करके गततिथि जोड़ दें। (तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि तक की जाती है) इस प्राप्त संख्या को दो जगह स्थापित करें। प्रथम स्थान की संख्या को 11 से गुणा करके 703 का भाग दें। प्राप्त लब्धि को दूसरे स्थान की संख्या में से घटाने से कलियुगाद्यहर्गण प्राप्त हो जायेगा।

उपरोक्त विवेचन को उदाहरण पर घटित करते हैं।

इष्ट शाके + 3179 = 1900 + 3179 = 5079 कलियुगादि गतवर्ष

5079 × 12 = 60948 + गतमास = 60948 + 2 60950

70) 60950 (870
560
495
490
50 60950 + 870 = 61820

33) 61820 (1873
33
288
264
242
231
110
99
11 60950 + 1873 = 62823

62823 × 30 = 1884690 + 8 = 1884698 × 11 =

703) 20731678 (29490
1406
6671
6327
3446
2812
6347
6327
208 त्याज्य

1884698 + 29490 = 1914188

1914188 − 373 = 1913815

2520) 1913815 (759
17640
14981
12600
23815
22680
1135

$$360\overline{)1135}(3$$
$$\begin{array}{r}1080\\ \hline 55\end{array}$$

वर्षेश$=3\times3+1=10\div7=1$ लब्धि 3 शेष

$$30\overline{)1135}(37$$
$$\begin{array}{r}90\\ \hline 235\\ 210\\ \hline 25\end{array}$$

मासेश$=37\times2+1=75\div7=10$ लब्धि 5 शेष
सूर्य से गिनने पर वर्षपात=मंगल । मासपति=गुरु
समाधि बल में होरेश सूर्य है, अतः इसका बल 1° अंश ।
दिनेश बुध है, अतः बुध का बल 45′ कला ।
मासेश गुरु है, अतः इसका बल हुआ 30′ कला ।
वर्षेश मंगल है, अतः इसका बल हुआ 15′ कला ।

॥ समाधि बल चक्रमिदम् ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रह
1	0	0	0	0	0	0	अंश
0	0	15	45	30	0	0	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

॥ कालबल चक्रमिदम् ॥

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
2	0	0	2	2	1	1	अंश
20	39	47	18	57	39	20	कला
13	46	29	38	30	46	13	विकला
49	11	49	11	11	11	49	प्रतिविकला

चेष्टा बल साधन

चेष्टा बल निकालने से पहले ग्रहों की क्रान्ति निकालनी पड़ती है। क्रान्ति से ग्रह का अयन बल, अयन बल से चेष्टा केन्द्र बल और चेष्टा केन्द्र बल से ग्रह का चेष्टा बल निकाला जाता है।

परम क्रान्ति मिथुन राशि के अन्त में हुआ करती है। तब ग्रह का बल 1 अंश या 60 होता है। इसी प्रकार परम दक्षिण क्रान्ति 1 अंश बली ग्रह होता है। परम क्रान्ति 24^0 की होती है। दोनों परम क्रान्तियों की संधि में $\frac{1}{2}$ बल मिलता है।

सर्वप्रथम ग्रहों की क्रान्ति निकालनी होती है। क्रान्ति से ग्रहों का अयन बल निकालना पड़ता है, क्योंकि कोई ग्रह दक्षिण में एवं कोई ग्रह उत्तर में बली होता है।

1. बुध—उत्तर और दक्षिण दोनों अयनों में बलवान होता है।

2. शनि एवं चन्द्र—ये दोनों ग्रह दक्षिणायन में परमबली 1 अंश बल वाले और उत्तर परम क्रान्ति में शून्यबली होते हैं। संधिकाल में $\frac{1}{2}$ बल रह जाता है।

3. सूर्य, मंगल, गुरु एवं शुक्र—उत्तरायन में बली होते हैं तथा दक्षिणायन में शून्यबली हो जाते हैं।

जिस अयन में ग्रह निर्बल होता है तब 24^0 में से उसकी क्रान्ति घटाते हैं। जिस अयन में बली होता है उसमें 24^0 क्रान्ति में जोड़ते हैं। तत्पश्चात 48 पर दोनों स्थितियों में भाग देना पड़ता है तो ग्रह का अयन बल निकल आता है। गणित क्रिया की सुविधा के लिए नीचे 10-10 अङ्कों के अन्तर से ध्रुवांक और ध्रुवान्तरांक दिए जा रहे हैं। सायन ग्रह के भुजाओं में 10 का भाग देने से जो लब्धि हो वह गत क्रान्ति खण्डांक कहा जाएगा। शेष अशांदि को ध्रुवांतरांक से गुणा करके 10 से भाग देने से जो लब्धि हो उसे गत खण्ड में जोड़ देने से एवं इसे 10 पर भाग देने से अंशादि क्रान्ति स्पष्ट होती है। इस क्रान्ति की दशा सायन ग्रह के गोलानुसार अवगत करनी चाहिए।

सूर्य का अयन बल और चन्द्रमा का पक्ष बल ही मध्यम चेष्टा बल होता है। बाकी के भौमादि ग्रहों के मध्यम चेष्टा बल साधन करने का

नियम यह है कि पहले इष्टकालिक मध्यम ग्रह और स्पष्ट ग्रह के योग को आधा करें फिर इस योगार्ध को ग्रह के शीघ्रोच्च में से घटाने से चेष्टा केन्द्र होता है। चेष्टा केन्द्र 6 राशि से अधिक हो तो उसे 12 राशि में से घटा देना चाहिए तथा शेष को दूना करके 6 का भाग देने पर कला-विकलादि मध्यम चेष्टा बल होगा। सभी ग्रहों के मध्यम चेष्टा बल और अयन बल को जोड़ देने से स्पष्ट चेष्टा बल होता है।

मध्यम ग्रह साधन

मध्यम ग्रह बनाने के लिए अहर्गण साधन किया जाता है। अहर्गण साधन के अनेक करण ग्रन्थ हैं, उनमें अपनी-अपनी विधि दी है। सभी को यहां समझाना न तो अभीष्ट है न ही युक्तिसंगत। पुस्तक का कलेवर इसकी आज्ञा नहीं देता। हम ग्रहलाघव करण ग्रन्थ की विधि से अहर्गण साधन करके मध्यम ग्रह बनाते हैं।

अहर्गण बनाने के लिए इष्ट शाके में से 1442 घटा कर शेष में 11 का भाग देने से लब्धि चक्रसंज्ञक होती है। शेष को 12 से गुणाकर उसमें चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर गत मास की संख्या जोड़नी चाहिए। इस योगफल को दो जगह रखकर, प्रथम स्थान की राशि को दो से गुणा करके 10 जोड़ने के बाद 33 का भाग देना चाहिए। यह लब्धितुल्य अधिमास होंगे। इन अधिमासों को दूसरे स्थान की राशि में जोड़कर 30 से गुणा करना चाहिए। इस गुणनफल में वर्तमान मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर गत तिथि तथा चक्र का षष्टांश जोड़कर जो संख्या आए, उसे दो जगह रखना चाहिए। प्रथम स्थान में 64 से भाग देने से लब्धि दिन होंगे। इन दिनों को दूसरे स्थान की संख्या में से घटाने से अहर्गण आ जाएगा।

मध्यम सूर्य, शुक्र, बुध साधन

मध्यम सूर्य, शुक्र, बुध स्पष्ट करने के लिए अहर्गण को 70 से भाग देकर लब्धि अंशों को अहर्गण में से घटा देना चाहिए। शेष में से अहर्गण की 15वां भाग फलादि को घटाने से मध्यम सूर्य, बुध और शुक्र स्पष्ट हो जाते हैं।

मध्यम चन्द्र साधन

मध्यम चन्द्र स्पष्ट करने के लिए अहर्गण को 14 से गुणा करके जो संख्या आए उसमें से उसी का 17वां भाग कम कर देना चाहिए तथा अहर्गण का 101 वां भाग (कलादि) घटाने से शेषतुल्य मध्यम चन्द्र स्पष्ट होगा।

मध्यम मंगल साधन

अहर्गण को दस से गुणा करके दो जगह रखो, प्रथम स्थान की संख्या को 19 का भाग देने से जो अंशादि आएं उनमें से, दूसरी संख्या को 73 का भाग देने से जो कलादि आयें, घटाने से मध्यम मंगल स्पष्ट होता है।

मध्यम गुरु साधन

मध्यम गुरु स्पष्ट करने के लिए अहर्गण को 12 से भाग देकर जो अंशादि आयें उसमें से अहर्गण के 70वें भाग से प्राप्त कलादि को घटाया जाता है।

मध्यम शनि साधन

अहर्गण को 30 का भाग देने से जो अंशादि फल आए, उसमें अहर्गण को 157 से भाग देने जो कलादि आएं उन्हें जोड़ देने से मध्यम शनि स्पष्ट हो जाएगा।

नीचे ध्रुवक चक्र और क्षेपक चक्र दिये जा रहे हैं।

॥ ध्रुवक चक्र ॥

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
0	0	1	4	0	1	7	राशि
1	3	25	3	26	14	15	अंश
49	46	32	27	18	2	42	कला
11	11	0	0	0	0	0	विकला

॥ क्षेपक चक्र ॥

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	ग्रह
11	11	10	8	7	7	9	राशि
19	19	7	29	7	20	15	अंश
41	6	8	33	16	9	21	कला
0	0	0	0	0	0	0	विकला

ऊपर ध्रुवक चक्र और क्षेपक चक्र दिए हैं। अहर्गण से जो मध्यम ग्रह आएं उनमें से चक्र राशि से ग्रह ध्रुवक करके घटावें तथा शेष में क्षेपक के अंशादि जोड़ने से सूर्योदयकालिक मध्यम ग्रह स्पष्ट होंगे।

नैसर्गिक बल साधन

एक से लेकर 7 तक की संख्या को 7 से भाग देने पर क्रमशः शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र और सूर्य का बल निकल आता है। जैसे 1 को 7 से भाग देने पर शनि का, 2 को 7 से भाग देने पर मंगल का, 3 को 7 से भाग देने पर बुध का, 4 को 7 से भाग देने पर गुरु का, 5 को 7 से भाग देने पर शुक्र का, 6 को 7 से भाग देने पर चन्द्र का, 7 को 7 से भाग देने पर सूर्य का अंशादि नैसर्गिक बल होता है।

दशा साधन

मुख्यतः ग्रहों का फल उनकी दशा मुक्ति में ही मिला करता है। इस कारण यह ज्ञात करने के लिए कि अमुक ग्रह कब फल देगा। दशा साधन किया जाता है। दशाओं के कई भेद हैं, किन्तु विंशोत्तरी दशा पद्धति ही ही अधिक सटीक होने से, उत्तर भारत में, ज्योतिर्विद् विंशोत्तरी दशा को ही ग्रहण करते हैं। योगिनी और अष्टत्तोरी दशा का प्रचलन अधिकतर दक्षिण भारत में होता है।

जातक शास्त्र में ग्रहों का शुभाशुभत्व जानने के लिए एवं मारकेश का निर्णय करने के लिए भी मर्मज्ञ विद्वानों ने विंशोत्तरी दशा को सही कहा है। नीचे तीनों दशाओं का विवेचन प्रस्तुत किया जायेगा, किन्तु उदाहरण कुण्डली को दशा विंशोत्तरी से ही निकालेंगे।

अष्टोत्तरी दशा विचार

अष्टोत्तरी दशा-पद्धति का प्रचलन दक्षिण भारत में अधिक है। यह दशा कुल 108 वर्ष जीवन मान कर चलती है। इसमें (अभिजित सहित) नक्षत्र की गणना 28 मानी जाती है। अष्टोत्तरी दशा में केतु को स्थान नहीं दिया गया है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र का प्रथम भाग पन्द्रहवां अभिजित माना जाता है। प्रायः पंचांगों में यह नक्षत्र अलग से नहीं दिया जाता। विंशोत्तरी दशा में 27 नक्षत्रों की गणना है, अभिजित को उसमें नहीं ग्रहण किया जाता।

नीचे अष्टोत्तरी दशा चक्र दिया जा रहा है। जातक का जो जन्म नक्षत्र हो उसी के अनुसार ग्रह की दशा चलेगी। मान लीजिये किसी का जन्म अनुराधा नक्षत्र में हुआ है तो चक्र के अनुसार आरम्भ में उसे बुध की

महादशा चलेगी। इस दशा में भी दूसरी दशाओं की भांति अन्तर-प्रत्यन्तर आदि निकाले जाते हैं।

इसकी गणितात्मक विधि विंशोत्तरी दशा से भिन्न है, क्योंकि इसमें विंशोत्तरी की भांति क्रमानुसार ग्रह-क्रमानुसार नक्षत्रों के अधिपति नहीं माने गए हैं। अष्टोत्तरी दशा में पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु को चार-चार नक्षत्र और शुभ ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र को तीन-तीन नक्षत्र दिये गये हैं।

अष्टोत्तरी दशा-साधन के लिए चन्द्र स्पष्ट की कला बनाकर 800 पर भाग देने से लब्धिगत गत नक्षत्र होता है। शेष कला-विकला को नक्षत्र के भोग्य वर्ष से गुणा करके 800 का भाग देने से लब्धितुल्य वर्ष प्राप्त होते हैं। शेष को 12 से गुणा करके 800 का भाग देने से लब्धितुल्य मास, शेष को 30 से गुणा करके 800 का भाग देने पर लब्धितुल्य दिन, शेष को 60 से गुणा करके 800 का भाग देने से लब्धितुल्य घटी, शेष को 60 से गुणा करके 800 का भाग देने पर लब्धितुल्य पल प्राप्त हो जायेंगे।

यह वर्तमान नक्षत्र के भुक्त वर्षादि हैं। उस ग्रह के और भी गत नक्षत्र हों तो उनके वर्ष भी भुक्तकाल में जोड़ने पड़ते हैं। इस प्रकार उस ग्रह का पूरा भुक्तकाल निकल आएगा। भुक्त को पूरे दशा काल में से घटाने पर भोग्यकाल आ जाएगा। इस दशा का विशेष ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि इसी दशा में अभिजित नक्षत्र पड़ता है।

॥ अष्टोत्तरी दशा चक्र ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि
आर्द्रा	मघा	हस्त	अनुराधा	पू०षा०
पुनर्वसु	पू०फा०	चित्रा	ज्येष्ठा	उ०षा०
पुष्य	उ०फा०	स्वाति	मूल	अभिजित
आश्लेषा	—	विशाखा	—	श्रवण
6	15	8	17	10 वर्ष

गुरु	राहु	शुक्र	ग्रह
घनिष्ठा	उ.भाद्र०	कृत्तिका	
शतभिषा	रेवती	रोहिणी	
पू०भाद्र०	अश्विनी	मृगशिरा	
—	भरणी	—	
19	12	21	वर्ष

योगिनी दशा साधन

योगिनी दशा की कुल अवधि 36 वर्ष की होती है। इसलिए कतिपय ज्योतिर्विद् इसकी फलित शक्ति मात्र 36 वर्ष तक ही मान कर चलते हैं, तथापि कुछ इसकी पुनः उसी क्रम से पुनरावृत्ति मानकर चलते हैं। उतर भारत में प्रायः इस दशा को प्रयोग में नहीं लाया जाता।

अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनकर तीन जोड़कर आठ का भाग देने से जो शेष बचे वह नीचे दिये क्रम से योगिनी की दशा होगी। बाकी क्रम योगिनी दशा चक्र के अनुसार रहेगा।

मान लीजिये किसी का जन्म हस्त नक्षत्र का है, अश्विनी से हस्त तक गिना तो संख्या 13 आई। इसमें तीन जोड़े और 8 का भाग दिया तो लब्धि 2 आई। नीचे लिखे चक्र से यह भली-भांति स्पष्ट हो जायेगा कि किस-किस नक्षत्र में किस योगिनी की दशा पड़ती है और कितने वर्ष तक रहती है।

॥ योगिनी दशा चक्र ॥

मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	दशा
1	2	3	4	5	वर्ष
—	—	—	अश्विनी	भरणी	नक्षत्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	
श्रवण	घनिष्ठा	शतभिषा	पू. भाद्र०	उ. भाद्र०	

अलका	सिद्धा	संकटा	दशा
6	7	8	वर्ष
कृत्तिका पू०फा० मूल रेवती	रोहिणी उ० फा० पू० षा० —	मृगशिरा हस्त उ० षा० —	नक्षत्र

विंशोत्तरी दशा साधन

विंशोत्तरी दशा में 120 वर्ष की परम आयु मानकर चलते हैं। जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उसी के अनुसार ग्रह दशा का विचार किया जाता है। विंशोत्तरी दशा में केवल सत्ताईस नक्षत्र माने जाते हैं। इसमें सूर्य से लेकर केतुपर्यन्त नौ ग्रहों को ही मान्यता दी जाती है तथा प्रत्येक ग्रह को एक साथ तीन नक्षत्र दिये गये हैं। इस पद्धति में दशा का क्रम यह है, पहले सूर्य की महादशा, दूसरी चन्द्र की, तीसरी मंगल की, चौथी राहु की, पांचवीं गुरु की, छठी शनि की, सातवीं बुध की, आठवीं केतु की और नवीं शुक्र की महादशा। नक्षत्रों का क्रम यूं है—कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा से क्रमशः प्रारम्भ होता है तथा तीन-तीन नक्षत्र प्रत्येक ग्रह को मिलते हैं।

ग्रहों के दशावर्ष हैं, सूर्य के 6, चन्द्र के 10, मंगल के 7, राहु के 18, गुरु के 16, शनि के 19, बुध के 17, केतु के 7 और शुक्र के 20 वर्ष। जन्म के नक्षत्रों के अनुसार —कृत्तिका—उ० फाल्गुनी और उत्तराषाढ़ में जन्म हो तो सूर्य महादशा, रोहिणी, हस्त, श्रवण में चन्द्रमा, मृगशिरा, चित्रा व धनिष्ठा में मंगल, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा में राहु व पुनर्वसु, विशाखा व पू० भाद्र० में गुरु, पुष्य, अनुराधा व उत्तरा भाद्र० में शनि, आश्लेषा, ज्येष्ठा व रेवती में बुध, मघा, मूल व अश्विनी में केतु, भरणी, पू० फा० व पू० षाढ़ा० में शुक्र की महादशा रहती है।

ग्रह की दशा जानने का सूत्र यह है। कृत्तिका से जन्म नक्षत्र तक गिनती करो, फिर उसे 9 पर भाग दो। जो शेष बचे उसे सूर्यादि क्रम से गिनती कर लो। मान लो किसी जातक का जन्म हस्त नक्षत्र में हुआ है

तो उसकी कौन-सी दशा है, ज्ञात करने के लिए हस्त तक (कृत्तिका से प्रारम्भ करके) गिना तो गिनती 11 आई। इसे 9 पर भाग दिया तो शेष 2 बचे। सूर्यादि क्रम से गिनती की तो दूसरी महादशा चन्द्रमा की रही। सुविधा के लिए नीचे बने चक्र को उपयोग में लाया जा सकता है।

।। जन्म नक्षत्र से ग्रहदशा बोधक चक्र ।।

सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
6	10	7	18	16	वर्ष
कृत्तिका उ० फा० उ० षा०	रोहिणी हस्त श्रवण	मृगशिरा चित्रा धनिष्ठा	आर्द्रा स्वाति शतभिषा	पुनर्वसु विशाखा पू० षाढ़ा	नक्षत्र

श	बु	के	शु	ग्रह
19	17	7	20	वर्ष
पुष्य अनुराधा उत्तरा भाद्रपद	आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती	मघा मूल अश्विनी	पू० फाल्गुनी पू० षा० भरणी	नक्षत्र

जन्म समय जो विंशोत्तरी दशा चल रही है उसके पूर्ण वर्ष में से कितने वर्ष जन्म के पूर्व भुक्त हो चुके हैं और कितने वर्ष अब भोगने शेष हैं, इसके जानने की गणितात्मक विधि यह है कि जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है उस नक्षत्र का योगकाल और मुक्तकाल निकाल लो और उन दोनों के घटी पल को एक वर्ण बनाकर भयात (भुक्त घटी-पल) में महादशा वर्ष का गुणा कर भभोग (भोग्यकाल) से भाग दें तो लब्धि भुक्त वर्ष, मास, दिन आदि प्राप्त हो जाएगे। उस समय को महादशा के पूर्ण वर्षों में से घटा दें। जो शेष बचे वही वर्षादि महादशा के भोग्य वर्ष आदि होंगे अर्थात इतने समय उस ग्रह की दशा और भोगनी पड़ेगी।

$$\text{सूत्र} = \frac{\text{भयात} \times \text{महादशा वर्ष}}{\text{भभोग}} = \text{भुक्त वर्ष, मास, दिन}$$

(महादशा के पूर्ण वर्ष—भुक्त वर्ष) = महादशा के शेष भोग्य वर्ष

भयात-भभोग साधन

पंचांग स्थानीय होते हैं, अतः पंचांग में दिये तिथि, नक्षत्र, योग और करण को इष्टस्थान का (देशान्तर संस्कार करके) बना लेना चाहिये। (जिस स्थान पर जन्मे जातक का जन्मपत्र बनाना हो उस स्थान के नक्षत्र का मान निकाल लेना चाहिये)। भयात-भभोग साधन करने के लिए जन्म का इष्टकाल, गत नक्षत्र मान एवं जन्म नक्षत्र मान की आवश्यकता होती है। जन्म का इष्टकाल हम निकाल चुके हैं।

यदि इष्टकाल से जन्म दिन के नक्षत्र के घटी-पल कम हों तो वह नक्षत्र गत कहलायेगा और उससे आगे वाला नक्षत्र ही जन्म नक्षत्र होगा। यदि जन्म दिन के नक्षत्र के घटी-पल अधिक हों और इष्टकाल के घटी-पल कम हों तो वह नक्षत्र जन्म नक्षत्र तथा उससे पहला नक्षत्र गत नक्षत्र होगा।

भयात-भभोग साधन का गणितात्मक सूत्र यह है कि गत नक्षत्र के घटी पलों को 60 में से घटाने पर जो संख्या शेष बचे उसे दो जगह रखना चाहिए तथा एक स्थान की संख्या में इष्टकाल जोड़ना चाहिए। यह भयात के घटी-पल होंगे। दूसरे स्थान की संख्या में जन्म नक्षत्र जोड़ देने से संख्या भभोग होगी।

हमने एक बच्चे का उदाहरण लिया था। बच्चे का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी बुधवार को दिल्ली में रात्रि 1 बजकर 34 मिनट पर हुआ था। इसका इष्टकाल हमने पूर्व नियमानुसार ही निकाला था जो कि 50 घटी-20 पल है। इस दिन उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का मान विश्व विजय पंचांग में 49 घटी 10 पल लिखा है। (विश्व विजय पंचांग दिल्ली को केन्द्र मानकर बनाया जाता है, अतः इसमें देशान्तर संस्कार की आवश्यकता नहीं है।

हमारे उदाहरण में इष्टकाल 50.20 है। यह उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के घटी-पलों से अधिक नहीं है अर्थात कम है। इसलिए उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र गत नक्षत्र हुआ। उससे अगला नक्षत्र हस्त, जिसका मान 50 घटी 32 पल दिया है, जन्म नक्षत्र हुआ।

नियम के अनुसार 60 में से उत्तरा फाल्गुनी के मान को घटाते हैं।

60.0	
—49.10	उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का मान
10.50	शेष

शेष को दो जगह रखा

	10.50	10.50	
इष्टकाल जोड़ा	+50.20	+50.32	जन्म नक्षत्र का मान
	61.10	61.22	

भयात = 61.10—60 = 1.10 भभोग* = 61.22

नोट : भभोग का मान 67 घटी तक मान्य है। अधिक होने पर ही 60 घटाने चाहिये तब भभोग होगा।

जन्म नक्षत्र हस्त होने से जन्म के समय चन्द्रमा की महादशा चल रही थी। इस महादशा को बच्चा जन्म से पहले कितना भोग चुका है तथा अब कितनी भोगनी बाकी है, निकालते हैं। चन्द्रमा के दशा वर्ष = 10 वर्ष।

भयात के घटी-पलों के पल बनाये।

1.10
×60
60+10=70

भभोग के घटी-पलों के पल बनाये

61.22
×60
3660+22—3682

पलात्मक भयात = 70

चन्द्र के दशावर्षों से गुणा किया ×10

700

इसे पलात्मक भभोग से भाग दिया 700÷3682

```
3682)700(
     ×12
3682)8400(2
     7364
     1036
      ×30
    31080
3682)31080(8
     29456
      1624
       ×60
3682)97440(26
     7364
     23800
     22092
      1708
       ×60
3682)102480(27
      7364
     29240
     25774
      3466
```

वर्षादि=0.2.8.26.27

बच्चे ने जब जन्म लिया था तो चन्द्रमा की महादशा चल रही थी और उसके 2 माह, 8 दिन, 26 घटी व 27 पल बीत चुके थे।

दशावर्ष—भुक्त वर्षादि=भोग्य वर्षादि

```
पूर्ण दशा वर्ष = 10.  0.  0.  0.  0
               — 0.  2.  8. 26.27    भुक्त दशा
                 9.  9.21. 33.33 = भोग्य दशा
```

अब इस का दशाचक्र बनाने के लिए, जिस ग्रह की दशा चल रही है

उससे प्रारम्भ करके उससे आगे के ग्रहों को क्रमवार लिख देना चाहिए।

हमारी उदाहरण कुण्डली का विशोत्तरी दशाचक्र नीचे लिखे अनुसार बनेगा।

।। विशोत्तरी दशाचक्रमिदम ।।

चन्द्रमा		भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	ग्रह
भुक्त	भोग्य	7	18	16	19	16	वर्ष
0	9						वर्ष
2	9						मास
8	21						दिन
26	33						घटी
27	33						पल
15.6.1978	6.4.1988	6.4.1995	6.4.2013	6.4.2029	6.4.2048	6.4.2064	ईसवी वर्ष

महादशा में अन्तर्दशा साधन

हर एक ग्रह की महादशा में सभी 9 ग्रह क्रम से अपना भोग्य काल लेते हैं, जिसे अन्तर्दशा कहते हैं। जैसे सूर्य की महादशा में प्रत्येक ग्रह क्रम से आएगा। पहले सूर्य, फिर चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु और शुक्र। अन्तर्दशा निकालने का सूत्र है—महादशा के वर्ष (जिस ग्रह की महादशा हो) को महादशा के वर्ष (जिस ग्रह का उसमें अन्तर निकालना हो) से गुणा कर के $\frac{120}{12}$ या 10 का भाग देने से अन्तर्दशा का समय निकल आता है।

मान लो हमें सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा निकालनी है—

सूर्य के दशा वर्ष हैं 6

दशा वर्ष × दशा वर्ष ÷ 10 = अन्तर्दशा माह

वर्ष मास दिन

$6 \times 6 = 36 \div 10 = 0.\ 3.\ 18$

```
10) 36 (3
    30
    ---
     6
   ×30
10) 180 (18
    180
    ---
     ×
```

सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा	3 महीने 18 दिन
सूर्य में चन्द्र की अन्तर्दशा	$6 \times 10 \div 10 = 6$ माह
सूर्य में मंगल ,,	$6 \times 7 \div 10 = 4$ माह 6 दिन
सूर्य में राहु ,,	$6 \times 18 \div 10 = 10$,, 24 ,,
सूर्य में गुरु ,,	$6 \times 16 \div 10 = 9$,, 18 ,,
सूर्य में शनि ,,	$6 \times 19 \div 10 = 11$,, 12 ,,
सूर्य में बुध ,,	$6 \times 17 \div 10 = 10$,, 6 ,,
सूर्य में केतु ,,	$6 \times 7 \div 10 = 4$,, 6 ,,
सूर्य में शुक्र ,,	$6 \times 20 \div 10 = 12$ माह या 1 वर्ष

इसी प्रकार हर एक ग्रह की दशा में अन्तर्दशा निकाल लेनी चाहिए। नीचे सुविधा के लिए सब ग्रहों की महादशा में अन्तर्दशा चक्र स्पष्ट किए जा रहे हैं।

॥ सूर्यान्तर्दशा चक्र ॥

सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	1	वर्ष
3	6	4	10	9	11	10	4	0	मास
18	0	6	24	18	12	6	6	0	दिन

॥चन्द्रान्तर्दशा चक्र॥

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
0	0	1	1	1	1	0	1	0	वर्ष
10	7	6	4	7	5	7	8	6	मास
0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन

॥ भौमान्तर्दशा चक्र ॥

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	1	0	1	0	0	1	0	0	वर्ष
4	0	11	1	11	4	2	4	7	मास
27	18	6	9	27	27	0	6	0	दिन

॥राहुवान्तर्दशा चक्र॥

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
2	2	2	2	1	3	0	1	1	वर्ष
8	4	10	6	0	0	10	6	0	मास
12	24	6	18	18	0	24	0	18	दिन

॥ जीवान्तर्दशा चक्र ॥

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
2	2	2	0	2	0	1	0	2	वर्ष
1	6	3	11	8	9	4	11	4	मास
18	12	6	6	0	18	0	6	24	दिन

॥शन्यान्तर्दशा चक्र॥

श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	गु	ग्रह
3	2	1	3	0	1	1	2	2	वर्ष
0	8	1	2	11	7	1	10	6	मास
3	9	9	0	12	0	9	6	12	दिन

।। बुधान्तर्दशा चक्र ।।

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
2	0	2	0	1	0	2	2	2	वर्ष
4	11	10	10	5	11	6	3	8	मास
27	27	0	6	0	27	18	6	9	दिन

।।केत्वान्तर्दशा चक्र।।

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	ग्रह
0	1	0	0	0	1	0	1	0	वर्ष
4	2	4	7	4	0	11	1	11	मास
27	0	6	0	27	18	6	9	27	दिन

।।शुक्रान्तर्दशा चक्र।।

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
3	1	1	1	3	2	3	2	1	वर्ष
4	0	8	2	0	8	2	10	2	मास
0	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन

जन्मकुण्डली में अन्तर्दशा बनाने की विधि यह है कि जो महादशा आई है पहले उसी ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा का चक्र बनाया जाता है। अन्तर्दशा के चक्रों में जिस ग्रह का जो चक्र है पहले कोष्ठक में विंशोत्तरी के समान उस चक्र के काल मान को लिखना चाहिए।

हमारे उदाहरण में चन्द्रमा की महादशा आई है। इसके भुक्त वर्षादि 0/2/8/26/27 हैं। भुक्त काल को अन्तर्दशा काल में से घटा देने पर फिर अन्तर्दशा में लिखना चाहिए। पहले चन्द्र में चन्द्र की अन्तर्दशा 10 मास है। इसमें से भुक्त काल 2 मास 8 दिन निकाल दिया तो शेष बचा 7 मास 21 दिन। यही चन्द्र में चन्द्र की अन्तर्दशा का समय है, जो चक्र में लिखना है।

।।चन्द्रान्तर्दशा चक्रमिदम्।।

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
0	0	1	1	1	1	0	1	0	वर्ष
7	7	6	4	7	5	7	8	6	मास
21	0	0	0	0	0	0	0	0	दिन
6. 2. 1979	6. 9. 1980	6. 3. 1981	6. 7. 1982	6. 2. 1984	6. 7. 1985	6. 2. 1986	6. 10 1987	6. 4. 1988	[illegible]

प्रत्यान्तर्दशा

जैसे ग्रह की महादशा में हर एक ग्रह की अन्तर्दशा आती है, वैसे ही हर ग्रह की अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा भी आती है। अन्तर्दशा के समय के बीच सूक्ष्म घटना काल जानने के लिए प्रत्यन्तर्दशा साधित की जाती हैं। प्रत्येक अन्तर्दशा के अन्तर्गत पहले उसी ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा रहती है। इसके पश्चात क्रमानुसार आगे के ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा आती है।

जिस ग्रह की अंतर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा साधन करनी हो, उस अन्तर्दशा काल के दिन बना लेने चाहिए उसको जिस ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा निकालनी हो उसके दशा वर्षों से गुणा कर के 120 का भाग देने से प्रत्यन्तर्दशा के दिन-घटी-पलादि निकल आते हैं। प्रथम 120 से भाग देने पर लब्धि तुल्य दिन होंगे, शेष को 60 से गुणा करके 120 का भाग देने से लब्धि घटी व शेष को 60 से गुणा करके 120 से भाग देने से लब्धि पलादि होंगे।

उदाहरण के लिए हमें सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा निकालनी है।

	मास	दिन
सूर्य की अन्तर्दशा	=3	18
इसके दिन बनाए	=	×30
	90+18	=108 दिन

$$\text{प्रत्यन्तर्दशा} = \frac{\text{अन्तर्दशा} \times \text{महादशा वर्ष}}{120}$$

$$\frac{108 \times 6}{120} = \frac{648}{120} = 5 \text{ दिन } 24 \text{ घटी}$$

```
120) 6480 (5
     600
     ----
      48
     ×60
120) 2880 (24
     240
     ----
      480
      480
      ----
       ×
```


प्रत्यन्तर्दशा निकालने की एक दूसरी रीति और है। जिस ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा साधन करनी हो उसके दिन बना लें। दिनों को 120 पर भाग देने से जो ध्रुवांक मिलेंगे उनको, जिस ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा निकालनी हो, उस ग्रह के दशा वर्षों से गुणा करने पर लब्धि दिन-घटी-पलादि प्रत्यन्तर्दशा होगी।

सूर्य की अन्तर्दशा के दिन = 108

120 पर भाग दिया $= \frac{108}{120} = 0\text{—}54$

सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा = 0—54 × 6 = 5 दिन 24 घटी

पहली रीति से यह दूसरी रीति सुगम है।

सूर्य महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

सूर्य में सूर्य	=	$\frac{108 \times 6}{120}$	=5 दिन 24 घटी
सूर्य में चन्द्र	=	$\frac{108 \times 10}{120}$	=9 दिन 0 घटी
सूर्य में मंगल	=	$\frac{108 \times 7}{120}$	=6 दिन 18 घटी
सूर्य में राहु	=	$\frac{108 \times 18}{120}$	=16 दिन 12 घटी
सूर्य में गुरु	=	$\frac{108 \times 16}{120}$	=14 दिन 24 घटी
सूर्य में शनि	=	$\frac{158 \times 19}{120}$	=17 दिन 6 घटी
सूर्य में बुध	=	$\frac{108 \times 17}{120}$	=15 दिन 18 घटी
सूर्य में केतु	=	$\frac{108 \times 7}{120}$	=6 दिन 18 घटी
सूर्य में शुक्र	=	$\frac{108 \times 20}{120}$	=18 दिन 0 घटी

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा निकाल लेनी चाहिए। सुविधा के लिए हम अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र बना लेते हैं।

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में सूर्य अन्तर में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा	0	5	24
" " " चंद्र "	0	9	0
" " " मंगल "	0	6	18
" " " राहु "	0	16	12
" " " गुरु "	0	14	24
" " " शनि "	0	17	6
" " " बुध "	0	15	18
" " " केतु "	0	6	18
" " " शुक्र "	0	18	0

सूर्य महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा	0	15	0
" " " मंगल "	0	10	30
" " " राहु "	0	27	0
" " " गुरु "	0	24	0
" " " शनि "	0	28	30
" " " बुध "	0	25	30
" " " केतु "	0	10	30
" " " शुक्र "	1	0	0
" " " सूर्य "	0	9	0

सूर्य महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर्दशा	0	7	21
" " " " राहु "	0	18	54
" " " " गुरु "	0	16	48
" " " " शनि "	0	19	57
" " " " बुध "	0	17	51
" " " " केतु "	0	7	21
" " " " शुक्र "	0	21	0
" " " " सूर्य "	0	6	18
" " " " चन्द्र "	0	10	30

सूर्य महादशा में राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में राहु की अन्तर्दशा में राहु की प्रत्यंतर्दशा	1	18	36
" " " गुरु "	1	13	12
" " " शनि "	1	21	18
" " " बुध "	1	15	54
" " " केतु "	0	18	54
" " " शुक्र "	1	24	0
" " " सूर्य "	0	16	12
" " " चन्द्र "	0	24	0
" " " मंगल "	0	18	54
" " "			

सूर्य महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यान्तर्दशा	1	8	24
" " " " शनि "	1	15	36
" " " " बुध "	1	10	48
" " " " केतु "	0	16	48
" " " " शुक्र "	1	18	0
" " " " सूर्य "	1	14	6
" " " " चन्द्र "	0	24	0
" " " " मंगल "	0	16	48
" " " " राहु "	1	12	12
" " " "			

सूर्य महादशा में शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

	मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में शनि की अन्तर्दशा में शनि की प्रत्यन्तर्दशा	1	24	9
" " " " बुध "	1	18	27
" " " " केतु "	0	19	57
" " " " शुक्र "	1	27	0
" " " " सूर्य "	0	17	6
" " " " चन्द्र "	0	28	30
" " " " मंगल "	0	19	57
" " " " राहु "	1	21	28
" " " " गुरु "	1	15	36
" " " "			

सूर्य महादशा में बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

						मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में	बुध की	अन्तर्दशा में		बुध	की प्रत्यन्तर्दशा	1	13	21
"	"	"	"	केतु	"	0	17	51
"	"	"	"	शुक्र	"	1	21	0
"	"	"	"	सूर्य	"	0	15	18
"	"	"	"	चन्द्र	"	0	25	30
"	"	,	"	मंगल	"	0	17	51
"	"	"	"	राहु	"	1	15	54
"	"	"	"	गुरु	"	1	10	45
"	"	"	"	शनि	"	1	18	27

सूर्य महादशा में केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

						मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में	केतु की	अन्तर्दशा में		केतु	की प्रत्यन्तर्दशा	0	7	21
"	"	"	"	शुक्र	"	0	21	0
"	"	"	"	सूर्य	"	0	6	18
"	"	"	"	चन्द्र	"	0	10	30
"	"	"	"	मंगल	"	0	7	21
"	"	"	"	राहु	"	0	18	54
"	"	"	"	गुरु	"	0	16	48
"	"	"	"	शनि	"	0	19	57
"	"	"	"	बुध	"	0	17	51

सूर्य महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

						मास	दिन	घटी
सूर्य महादशा में	शुक्र की	अन्तर्दशा में		शुक्र	की प्रत्यन्तर्दशा	2	0	0
"	"	"	"	सूर्य	"	0	18	0

						मास	दिन	घटी
			"	चन्द्र	"	1	0	0
"	"	"	"	मंगल	"	0	21	0
"	"	"	"	राहु	"	1	24	0
"	"	"	"	गुरु	"	1	18	0
"	"	"	"	शनि	"	1	27	0
"	"	"	"	बुध	"	1	21	0
"	"	"	"	केतु	"	0	21	0

चन्द्र महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

						मास	दिन	घटी
चन्द्र महादशा में	चन्द्र की	अन्तर्दशा में		चन्द्र	की प्रत्यन्तर्दशा	0	25	0
"	"	"	"	मंगल	"	0	17	30
"	"	"	"	राहु	"	1	15	0
"	"	"	"	गुरु	"	1	10	0
"	"	"	"	शनि	"	1	17	30
"	"	"	"	बुध	"	1	12	30
"	"	"	"	केतु	"	0	17	30
"	"	"	"	शुक्र	"	1	20	0
"	"	"	"	सूर्य	"	0	15	0

चन्द्र महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	1	0	1	0	0	1	0	0	मास
12	1	28	3	29	12	5	10	17	दिन
15	30	0	15	45	15	0	30	30	घटी

चन्द्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
2	2	2	2	1	3	0	1	2	मास
21	12	25	17	1	0	27	15	1	दिन
0	0	30	30	30	0	0	0	30	घटी

चन्द्र महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
2	2	2	0	2	0	1	0	2	मास
4	16	8	28	20	24	10	28	12	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

चन्द्र महादशा में शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
3	2	1	3	9	1	1	2	2	मास
०	20	3	5	28	17	3	25	16	दिन
15	45	15	0	30	30	15	30	0	घटी

चन्द्र महादशा में बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
2	0	2	0	1	0	2	2	2	मास
12	29	25	55	12	29	16	8	20	दिन
15	45	0	30	30	45	30	0	45	घटी

चन्द्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
0	1	0	0	0	1	0	1	0	मास
12	5	10	17	12	1	28	3	29	दिन
									घटी

चन्द्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
3	1	1	1	3	2	3	2	1	मास
10	0	20	5	0	20	5	25	5	दिन
0	0	0		0	0	0	0	0	घटी

चन्द्र महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	1	मास
9	15	10	27	24	28	25	10	0	दिन
0	0	30	0	0	30	30	30	0	घटी

मंगल महादशा में मंगल की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मास
8	2-	19	23	20	8	28	7	12	दिन
34	2	36	16	49	34	30	21	15	[illegible]
30	0	0	30	30	30	0	0	0	पल

मंगल महादशा में राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

राहु	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
1	1	1	1	0	2	0	1	0	मास
26	20	29	23	22	3	18	1	22	दिन
42	24	51	33	3	0	54	30	3	घटी

मंगल महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
1	1	1	0	1	0	0	0	1	मास
14	23	17	19	26	16	28	19	20	दिन
48	12	36	36	0	48	0	36	24	घटी

मंगल महादशा में शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
2	1	0	2	0	1	0	1	1	मास
3	26	23	6	19	3	23	29	23	दिन
10	31	16	30	57	15	16	51	12	घटी
30	30	30	0	0	0	30	0	0	

मंगल महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
1	0	1	0	0	0	1	1	1	मास
20	20	29	17.	29	20	23	17	26	दिन
34	49	30	51	45	49	33	36	31	घटी
30	30	0	0	0	30	0	0	30	पल

मंगल महादशा में केतु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मास
8	24	7	12	7	22	19	23	20	दिन
34	30	21	15	34	3	36	16	49	घटी
30	0	0	0	0	30	0	30	30	पल

मंगल महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
2	0	1	0	2	1	2	1	0	मास
10	21	5	24	3	26	6	29	24	दिन
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घटी

मंगल महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	0	0	0	0	0	0	मास
6	10	7	18	16	19	17	7	21	दिन
18	30	21	54	48	57	51	21	0	घटी

मंगल महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
0	0	1	0	1	0	0	1	0	मास
17	12	1	28	3	29	12	5	10	दिन
30	15	30	0	15	45	15	0	30	घटी

राहु महादशा में राहु की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा

रा	ग	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
4	4	5	4	1	5	1	2	1	मास
25	9	3	17	26	12	18	21	26	दिन
48	36	54	42	42	0	36	0	42	घटी

राहु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
4	4	4	1	4	1	2	1	4	मास
25	16	2	20	24	13	12	20	9	दिन
12	48	24	24	0	12	0	24	36	घटी

राहु महादशा में शनि की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

श	के	बु	शु	सु	चं	मं	रा	गु	ग्रह
5	4	1	5	1	2	1	5	4	मास
12	25	29	21	21	25	29	3	19	दिन
27	21	51	0	18	30	51	54	48	घटी

राहु महादशा में बुध की अन्तर्दशा में प्रत्यान्तर्दशा

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
4	1	5	1	2	1	4	4	4	मास
10	23	3	15	16	23	17	2	25	दिन
3	33	0	54	30	33	42	24	21	घटी

राहु महादशा में केत्वान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	ग्रह
0	2	0	1	0	1	1	1	1	मास
22	3	18	1	22	26	20	20	23	दिन
3	0	54	30	3	42	24	51	33	घटी

राहु महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
6	1	3	2	5	5	5	5	2	मास
0	24	0	3	12	24	21	3	3	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

राहु महादशा में सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मास
16	27	18	18	13	21	15	18	24	दिन
12	0	54	36	12	18	54	54	0	घटी

राहु महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
1	1	2	2	2	2	1	3	0	मास
15	1	21	12	25	16	1	0	27	दिन
0	30	0	0	30	30	30	0	0	घटी

राहु महादशा में मंगल अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	1	1	1	0	0	2	0	1	मास
22	26	20	29	23	22	3	18	1	दिन
3	42	24	51	33	3	0	54	30	घटी

बृहस्पति महादशा में बृहस्पति अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
3	4	3	1	4	1	2	1	3	मास
12	1	18	14	8	8	4	14	25	दिन
24	36	48	48	0	24	0	48	12	घटी

बृहस्पति महादशा में शन्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
4	4	1	5	1	2	1	4	4	मास
24	9	23	2	15	16	23	16	1	दिन
24	12	12	0	36	0	12	48	36	घटी

बृहस्पति महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
3	1	4	1	2	1	4	3	4	मास
25	17	16	10	8	17	2	18	9	दिन
36	36	0	48	0	36	24	48	12	घटी

बृहस्पति महादशा में केत्वान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	ग्रह
0	1	0	0	0	1	1	1	1	मास
19	26	16	28	19	20	14	23	17	दिन
36	0	48	0	36	24	48	12	36	घटी

बृहस्पति महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
5	1	2	1	4	4	5	4	1	मास
10	18	20	26	24	8	2	16	26	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

बृहस्पति महादशा में सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मास
14	24	16	13	8	15	10	16	18	दिन
24	0	48	12	24	36	48	48	0	घटी

बृहस्पति महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
1	0	2	2	2	2	0	2	0	मास
10	28	12	4	16	8	28	20	24	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

वृहस्पति महादशा में भौमान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	वु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	1	1	1	1	0	1	0	0	मास
19	20	14	23	17	19	26	16	28	दिन
36	24	48	12	36	36	0	48	0	घटी

वृहस्पति महादशा में राहवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

रा	गु	श	वु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
4	3	4	4	1	4	1	2	1	मास
9	25	16	2	20	24	13	12	20	दिन
36	12	48	24	24	0	12	0	24	घटी

शनि महादशा में शन्यान्तर्दशा में प्रत्यंतर

श	वु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
5	5	2	6	1	3	2	5	4	मास
21	3	3	0	24	0	3	12	24	दिन
28	25	10	30	9	15	10	27	24	घटी
30	30	30	0	0	0	30	0	0	पल

शनि महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

वु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
4	1	5	1	2	1	4	4	5	मास
17	26	11	18	20	26	25	9	3	दिन
16	31	30	27	45	31	21	12	25	घटी
30	30	0	0	0	30	0	0	30	पल

शनि महादशा में केत्वान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	वु	ग्रह
0	2	0	1	0	1	1	2	1	मास
23	6	19	3	23	29	23	3	26	दिन
16	30	57	15	16	51	12	10	31	घटी
30	0	0	0	30	0	0	30	30	पल

शनि महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
6	1	3	2	5	5	6	5	2	मास
10	27	5	6	21	2	0	11	6	दिन
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घटी

शनि महादशा में सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

सू	च	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मास
17	28	19	21	15	24	18	19	27	दिन
6	30	57	18	36	9	27	57	0	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

शनि महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

च	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
1	1	2	2	3	2	1	3	0	मास
17	3	25	16	0	20	3	5	28	दिन
30	15	30	0	15	45	15	0	30	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

शनि महादशा में भौमान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं०	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	1	1	2	1	0	2	0	1	मास
23	29	23	3	26	23	6	19	3	दिन
16	51	12	10	31	16	30	57	15	घटी
30	0	0	30	30	30	0	0	0	पल

शनि महादशा में राहवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
5	4	5	4	1	5	1	2	1	मास
3	16	12	25	29	21	21	25	29	दिन
54	48	27	21	51	0	18	30	51	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

शनि महादशा में गुरुवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
4	4	4	1	5	1	2	1	4	मास
1	24	9	23	2	15	16	23	16	दिन
36	24	12	12	0	36	0	12	48	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

बुध महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
4	1	4	1	2	1	4	3	4	मास
2	20	24	13	12	20	10	25	17	दिन
49	34	30	21	15	34	3	36	16	घटी
30	30	0	0	0	30	0	0	30	पल

बुध महादशा में केत्वान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	ग्रह
0	1	0	0	0	1	1	1	1	मास
20	29	17	29	20	23	17	26	20	दिन
49	30	51	45	49	33	36	31	34	घटी
30	0	0	0	30	0	0	30	30	पल

बुध महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	ग्रह
5	1	2	1	5	4	5	4	1	ग्रह
20	21	25	29	3	16	11	24	29	दिन
0	0	0	30	0	0	30	30	30	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

बुध महादशा में सूर्यान्तिर्दशा में प्रत्यन्तर

स	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	ग्रह
0	0	0	1	1	1	1	0	1	मास
15	25	17	15	10	18	13	17	21	दिन
18	30	51	54	48	27	21	51	0	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

बुध महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
1	0	2	2	2	2	0	2	0	मास
12	29	16	8	20	12	29	25	25	दिन
34	45	30	0	45	15	45	0	30	घटी
0	0	0	0	0	0	0	0	0	पल

बुध महादशा में भौमान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
मं	0	20	49	30
रा	1	23	33	0
गु	1	17	36	0
श	1	26	31	30
बु	1	20	34	30
के	0	20	49	30
शु	1	29	30	0
सू	0	17	51	0
चं	0	29	45	0

बुध महादशा में राहवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
रा	4	17	42	0
गु	4	2	24	0
श	4	25	21	0
बु	4	10	3	0
के	1	23	33	0
शु	5	3	0	0
सू	1	15	54	0
चं	2	16	30	0
मं	1	23	33	0

बुध महादशा में गुरुवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास.	दिन	घटी	पल
गु	3	18	48	0
श	4	9	12	0
बु	3	25	36	0
के	1	17	36	0
शु	4	16	0	0
सू	1	10	48	0
चं	2	8	0	0
मं	1	17	36	0
रा	4	2	24	0

बुध महादशा में शन्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रहें	मास	दिन	घटी	पल
श	5	3	25	0
बु	4	17	16	0
के	1	26	31	0
शु	5	11	30	0
सू	1	18	27	0
चं	2	20	45	0
मं	1	26	31	0
रा	4	25	21	0
गु	4	9	12	0

केतु महादशा में केत्वान्तदशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
के	0	8	34	30
शु	0	24	30	0
सू	0	7	21	0
चं	0	12	15	0
मं	0	8	34	30
रा	0	22	3	0
गु	0	19	36	0
श	0	23	16	30
बु	0	20	49	30

केतु महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
शु	2	10	0	0
सू	0	21	0	0
चं	1	5	0	0
मं	0	24	30	0
रा	2	3	0	0
गु	1	26	0	0
श	2	6	30	0
बु	1	29	30	0
के	0	24	30	0

केतु महादशा में सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
सू	0	6	18	0
चं	0	10	30	0
मं	0	7	21	0
रा	0	18	53	0
गु	0	16	48	0
श	0	19	57	0
बु	0	17	51	0
के	0	7	21	0
शु	0	21	0	0

केतु महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मास	दिन	घटी	पल
चं	0	17	30	0
मं	0	12	15	0
रा	1	1	30	0
गु	0	28	0	0
श	1	3	15	0
बु	0	29	45	0
के	0	12	15	0
शु	1	5	0	0
सू	0	10	30	0

केतु महादशा में भौमान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घटी	34	3	36	16	49	34	30	21	15
पल	30	0	0	30	30	30	0	0	0

केतु महादशा में राहवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घटी	24	24	51	33	3	0	54	30	3
पल	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु महादशा में गुरुवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घटी	48	12	36	36	0	48	0	36	24
पल	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु महादशा में शन्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा	गु
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घटी	10	31	16	30	57	15	16	51	12
पल	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घटी	34	49	30	51	45	49	33	36	31
पल	30	30	0	0	0	0	0	30	30

शुक्र महादशा में शुक्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
माम	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र महादशा में सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मास	0	1	0	0	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र महादशा में चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

ग्रह	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र महादशा में भौमान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	ग्रह
0	2	1	2	1	0	2	0	1	मास
24	3	26	6	29	24	10	21	5	दिन
30	0	0	30	30	30	0	0	0	घटी

शुक्र महादशा में राहवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	ग्रह
5	4	5	5	2	6	1	3	2	मास
12	24	21	3	3	0	24	0	3	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

शुक्र महादशा में गुरुवान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	ग्रह
4	5	4	1	5	1	2	1	4	मास
8	2	16	26	10	18	20	26	24	दिन
0	0	0	0	0	0	0	0	0	घटी

शुक्र महादशा में शन्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	ग्रह
6	5	2	6	1	3	2	5	5	मास
0	11	6	10	27	5	6	21	2	दिन
30	30	30	0	0	0	30	0	0	घटी

शुक्र महादशा में बुधान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	ग्रह
4	1	5	1	2	1	5	4	5	मास
24	29	20	21	25	29	3	16	11	दिन
30	30	0	0	0	30	0	0	30	घटी

शुक्र महादशा में केत्वान्तर्दशा में प्रत्यन्तर

के	शु	सू	चं	बु	मं	रा	गु	श	ग्रह
0	2	0	1	0	2	1	2	1	मास
24	10	21	5	24	3	25	6	29	दिन
30	0	0	0	30	0	0	30	30	घटी

सूक्ष्मदशा

प्रत्यन्तर्दशा निकालने के पश्चात सूक्ष्मदशा साधन भी किया जाता है। सूक्ष्मदशा निकालने का सूत्र यह है कि ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा के मास-दिन-घटी की घटी बना लो तथा इसे 2 पर भाग दे दो। फिर जिस ग्रह की सूक्ष्मदशा निकालनी हो उसके दशावर्षों से गुणा कर देने पर सूक्ष्मदशा के पलादि आएंगे। इनको दिन-घटी आदि में बदल लिया जाता है।

उदाहरण के लिए—

मान लो हमें सूर्य महादशा (6 वर्ष) में सूर्य की अन्तर्दशा (3 महीने 18 दिन) में सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा (5 दिन 24 घटी) में सूर्य की ही सूक्ष्मदशा निकालनी है तो प्रत्यन्तर्दशा के दिन-घटी को घटी बनाया।

$5 \times 66 + 24 = 324$ घटी

सूत्र है $= \frac{\text{प्रत्यन्तर्दशा काल (घटी में)}}{2} \times$ दशाकाल $=$ सूक्ष्मदशा पलादि

$$\frac{324 \times 6}{2} = 972 \text{ पल}$$

972 पल के घटी बनाए तथा 60 से भाग दिया तो 972 ÷ 60

इस प्रकार सूर्य की महादशा में सूर्य की ही अन्तर्दशा में तथा सूर्य की ही प्रत्यन्तर्दशा में सूर्य की सूक्ष्मदशा 16 घटी 12 पल सिद्ध हुई।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की भी सूक्ष्मदशा निकाल लेनी चाहिए।

सूक्ष्मदशा का प्रयोग प्रायः शेयर मार्केट और व्यापारी वर्ग के लिए ही किया जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में भाव क्षण-क्षण में बदलते रहते हैं और इस क्षेत्र के लोगों का अच्छा-बुरा समय बतलाने के लिए सूक्ष्मदशा की प्रायः आवश्यकता रहती है।

॥ समाप्त ॥

हमारे अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

	शशिभूषण 'शलभ'
अनुपम [illegible]र्वेदिक चिकित्सा	आचार्य वादरायण
अंक-ज्योतिष	सत्यवीर शास्त्री
जन्म[illegible]-रचना	स्वेट मार्डेन
चिन्ता छोड़ो सुख से जियो	स्वेट मार्डेन
भागो नहीं भाग्य को बदलो	साजन पे...
दीवान-ए-ज़फ़र	साजन पेशावरी
दीवान-ए-ग़ालिब	आचार्य विश्वमित्र शर्मा
सचित्र योगासन (सचित्र)	डा० श्यामसुन्दर पुरोहित
किचन गार्डन (सचित्र)	आचार्य चतुरसेन
सम्भोग शास्त्र	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्रीमद् भागवत पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री शिव पुराण	डा० सतीशचन्द्र जोशी
श्री मार्कण्डेय पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री पद्म पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री ब्रह्माण्ड पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री नारद पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री ब्रह्म पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री मत्स्य पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्री विष्णु पुराण	डा० रामचन्द्र वर्मा
श्रीमद् देवी भागवत पुराण	गोचर शर्मा
मुखाकृति-विज्ञान (सचित्र)	आचार्य रजनीश
संभोग से समाधि की ओर	

कहानी नरगिस की (सचित्र)	गोविन्दसिंह
भगवान् रजनीश बेनकाब (सचित्र)	गोविन्दसिंह
हिजड़ों का संसार (सचित्र)	गोविन्दसिंह
गर्भवती, प्रसूता और शिशु-पालन	डा० शशि शर्मा
संस्कृत स्वयं शिक्षक	भगवचन्द्र कपूर
यौवन और यौन-विज्ञान	आचार्य चतुरसेन
यौवन और स्वास्थ्य विज्ञान	आचार्य चतुरसेन
Sex & Law	Prof. P. L. Sharma
Indian Numerology	Dr. N. D. Shrimali

सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं के पास मिलती हैं। न मिलने पर वी. पी. द्वारा हमसे मंगायें।

अनुपम बुक्स
कमलानगर, दिल्ली-110007

निरवाल
शुक्ल
समाप्त
१– सैन्टोवीन नी० प्लस
२– विटामिन बी काम्प्लेक्स 4